

आर.एन.आई. नं. 3653/57  
मुद्रण तिथि 5 से 8 जून, 2022  
डाक प्रेषण तिथि 10 जून, 2022

वर्ष : 80 अंक : 06  
ज्येष्ठ, 2079 मूल्य : ₹ 10  
पृष्ठ संख्या 104

डाक पंजीयन संख्या Jaipur City/413/2021-23  
WPP Licence No. Jaipur City/WPP-04/2021-23  
Posted at Jaipur RMS (PSO)

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

# जिनवाणी

जून, 2022



Website : [www.jinwani.in](http://www.jinwani.in)

ज्ञान के चक्षु खुले हुए हैं,  
तो सारे दुःख सुख में परिवर्तित हो जाते हैं।

– आचार्यश्री हीरा

श्री महावीराय नमः

श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नमः

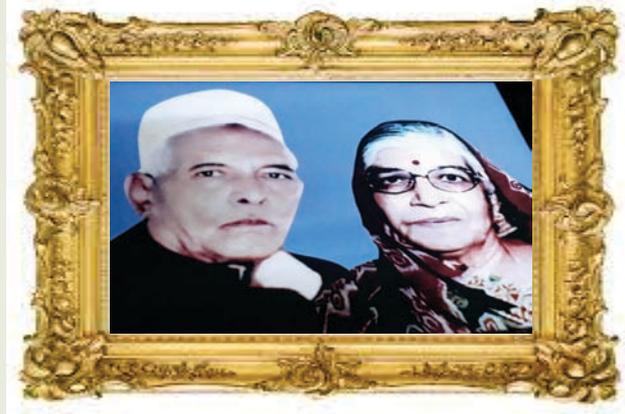
॥ जय गुरु हीरा ॥

॥ जय गुरु महेन्द्र ॥

॥ जय गुरु माव ॥

### अंक सौजन्य

- ◆ सच्चा साधक संकट के समय भी गड़बड़ाता नहीं है, पथविचलित नहीं होता है। हर समय उसका विवेक जागृत रहता है। -आचार्यश्री इरुती
- ◆ दूसरों को साता पहुँचाए, सुख समाधि पहुँचाए तो निश्चित मानकर चलिए कि समाधि देने वाला स्वयं समाधि पायेगा। -आचार्यश्री हीरा



श्रद्धानिष्ठ, धर्मनिष्ठ

स्व. श्री मूलचन्द्रजी-स्व. श्रीमती प्रेमकँवरजी बच्छावत

आप नहीं हैं, पर आपकी स्मृतियाँ सभी के हृदय में आज भी हैं  
आपकी असीम अनुकम्पा बनी रहे, बस यही अरमान है।

:: श्रद्धावन्त ::

सुपुत्र-सुपुत्रवधू :: चंचलमल-श्रीमती वीनाक्षी बच्छावत (कोलकाता)

पूर्व अध्यक्ष-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

सुपौत्र-सुपौत्रवधू :: मोहित-श्रीमती ऋचा, हर्ष बच्छावत

## अंक सौजन्य

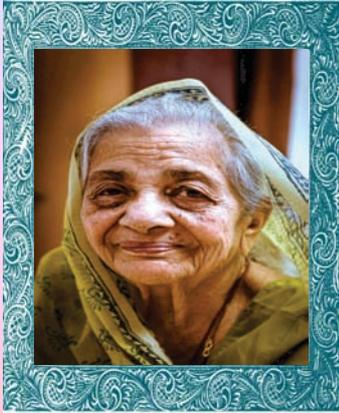
॥ जय गुरु हीमा ॥

श्री महावीराय नमः  
श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नमः

॥ जय गुरु महेन्द्र ॥

॥ जय गुरु मान ॥

पारिवारिक शान्ति वहीं कायम रहती है, जहाँ परिवार का प्रत्येक सदस्य अपने सुख को गौण और दूसरे सदस्यों के सुख को मुख्य मानकर व्यवहार करता है।  
-आचार्यश्री हस्ती



श्राविकारल, श्रद्धानिष्ठ,  
स्व. श्रीमती सरदारकँवरजी टाटिया



श्राविकारल, अनन्य गुरुभक्त, दृढ़धर्मी,  
स्व. श्री जसवन्तराजजी टाटिया

क्व. श्री देलपतवाजजी-क्व. श्रीमती कञ्चनजी टाटिया (सुपुत्र-सुपुत्रवधु)

क्व. श्री पृथ्वीवाजजी-क्व. श्रीमती शांक्षिजी टाटिया (सुपुत्र-सुपुत्रवधु)

क्व. श्री सुमितजी टाटिया (सुपौत्र)

ॐ३३ श्रद्धान्वित परिवारखण्ड ३३ॐ

लघुभ्राता-देवरानी :: श्रीमती सुशीला-स्व. गणपतराज

सुपुत्री-दामाद :: श्रीमती विमलाजी-डॉ. जगदीशजी भंसाली

पुत्र-पुत्रवधु :: प्रकाश-श्रीमती चन्द्रकला, राजेश-श्रीमती आशा, अशोक-श्रीमती नीलू,  
उमेश-श्रीमती रेणु टाटिया

भतीजे-भतीजावधु :: दीपक-श्रीमती राजुल, मधुर-श्रीमती मृदुलिका टाटिया  
पीयूष-श्रीमती विनीता भंसाली

एवं समस्त टाटिया परिवार, जोधपुर

संसार की समस्त सम्पदा और भोग  
के साधन भी मनुष्य की इच्छा  
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती



आवश्यकता जीवन को चलाने  
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन  
को बिगाड़ने वाली है,  
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा



जिनका जीवन बोलता है,  
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :  
**Rajeev Nita Daga Foundation Houston**

# जिनवाणी

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।  
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी' ॥

## संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ  
प्लॉट नं. 2, नेहरूपार्क, जोधपुर (राज.), फोन-0291-2636763  
E-mail : absjrhssangh@gmail.com

## संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

## प्रकाशक

अशोककुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल  
दुकान नं. 182, के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003(राज.)  
फोन-0141-2575997  
जिनवाणी वेबसाइट- www.jinwani.in

## प्रधान सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

## सह-सम्पादक

नीरतनमल मेहता, जोधपुर  
मनोज कुमार जैन, जयपुर

## सम्पादकीय कार्यालय

ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर-302015 (राज.)  
फोन : 0141-2705088  
E-mail : editorjinwani@gmail.com

## भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57  
डाक पंजीयन सं.- JaipurCity/413/2021-23  
WPP Licence No. JaipurCity-WPP-04/2021-23  
Posted at Jaipur RMS (PSO)



परस्परप्राप्तो जीवनाय

बुद्धे परिनिव्युडे चरे,  
गामगाए नगरे व संजए।  
संतिमग्गं च बूहए,  
समयं गौयम! मा पमायए॥

-उत्तराध्ययन सूत्र, 10.36

सम्बुद्ध शान्त संयत होकर,  
तू ग्राम-नगर में विचरण कर।  
कर शान्ति मार्ग का संवर्द्धन,  
गौतम! प्रमाद क्षण का मतकर॥

जून, 2022

वीर निर्वाण सम्बत्, 2548

ज्येष्ठ, 2079

वर्ष 80

अंक 6

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.

20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.

20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.

स्तम्भ सदस्यता : 21000/-

संरक्षक सदस्यता : 11000/-

साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/सहयोग राशि "JINWANI" बैंक खाता संख्या SBI 51026632986 IFSC No. SBIN 0031843 में NEFT/RTGS से जमा कराकर जमापत्री के साथ पेन नं. भी (काउन्टर-प्रति) श्री अनिलजी जैन के व्हाट्स एप नं. 9314635755 पर भेजें।

जिनवाणी में प्रदत्त सहयोग राशि पर आयकर में 80G की छूट उपलब्ध है।

मुद्रक : डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियो का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-4043938

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

## विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	महतो महीयान् आचार्यश्री हीरा	-डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-डॉ. धर्मचन्द जैन	10
विचार-वारिधि-	आत्मा से परमात्मा	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.	12
प्रवचन-	करणी के फल का सदुपयोग करें	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	13
	दुःख का मूल है निज ज्ञान का अनादर	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.	16
	वर्णमाला में भावी आचार्यश्री	-श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.	20
प्रासङ्गिक-	जैन जीवनशैली की वैज्ञानिकता	-महा.राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद	26
तत्त्व-चर्चा-	आओ सम्मूर्च्छिम मनुष्य की विराधना को समझें	-श्री धर्मचन्द जैन	28
चिन्तन-	भीतर से करुणा का स्रोत बहाएँ	-श्री पदमचन्द गाँधी	37
48वाँ दीक्षा-दिवस-	गुरुमहेन्द्रगुणाष्टकम्	-श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा.	40
अध्यात्म-	विरक्त से देवराज का संवाद	-श्री त्रिलोकचन्द जैन	42
तुलनात्मक-	अठारह पापों का भारतीय कानून में दण्ड-विधान	-श्री अरिहन्त चौपड़ा (एडवोकेट)	47
युवा स्तम्भ-	अंगूर खट्टे हैं	-महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा.	50
जीवन-व्यवहार-	अनमोल मोती (3)	-श्री पी.शिखरमल सुराणा एवं श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'	52
	धर्मसङ्गत हो डॉक्टरी पेशा	-श्री जयदीप ढङ्गा	56
English-section	Christian Vegetarianism	-Sh. Rayappa A. Kasi	53
जीवन-दृष्टि-	दो भाई : दो दिशाएँ	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	58
पर्यावरण-संरक्षण-	जल-संरक्षण और पर्यावरण चेतना	-डॉ. एन. के. खर्चा	60
जैन भागवती दीक्षा-	बेंगलूरु में मुमुक्षु सुश्री रेणुजी गुन्देचा का दीक्षा-महोत्सव सम्पन्न	-श्री गौतमचन्द ओस्तवाल	64
आत्म-साधना-	ध्यान की उपयोगिता	-श्रीमती अरुणा कर्णावट	67
गीत/कविता-	वाणी	-डॉ. रमेश 'मयंक'	69
	साधक मोहनमुनिजी म.सा.	-श्री मनमोहनचन्दजी बाफना	19
	बड़े गुणवान हैं	-श्री धर्मचन्द जैन	25
	दुर्लभ दस बोल	-श्रीमती अंशु संजय सुराणा	39
	मोबाइल ने बड़ा नुकसान किया है	-श्री कविश जैन	46
	जिन्दगी की पाठशाला	-भारती जैन	55
	लक्ष्य का सतत अनुसरण	-श्री जितेन्द्र चोरड़िया 'प्रेक्षक'	59
	सद्गुरो: प्रसादात्	-श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.	66
	किसी जीव को न सताओ	-श्रीमती सुलभा मुथा (टीना)	68
विचार/चिन्तन-	अरिहन्त को समझें	-श्री प्रमोद महनोत	11
	मास्क और मुँहपत्ती में अन्तर	-श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी मसा.	27
	पूत के पग पालने में	-श्री अभय कुमार बाँठिया	41
	एकाग्रता	-डॉ. नरेन्द्र कुमार जैन (प्राचार्य)	49
	सज्जनता	-प्रो. मंगलचन्द टाटिया	57
	संयम की सुवास	-श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'	90
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-श्री गौतमचन्द जैन	70
समाचार-विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	72
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	89
बाल-जिनवाणी -	विभिन्न आलेख/रचनाएँ	-विभिन्न लेखक	91

## महतो महीयान् आचार्यश्री हीरा

डॉ. धर्मचन्द जैन

अष्ट सम्पदा के धनी पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. प्रभु महावीर की आचार्य-परम्परा में 82वें पट्टधर हैं। आप जिनशासन के गौरव होने के साथ स्थानकवासी परम्परा में ज्येष्ठ तथा रत्नसंघ के दीप्तिमान अष्टम आचार्य हैं। 25 वर्ष की युवावय में आपने चारित्र चूड़ामणि, अध्यात्मयोगी, युगमनीषी पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. के मुखारविन्द से कार्तिक शुक्ला 6 विक्रम सम्वत् 2020 को पीपाड़ शहर में निर्ग्रन्थ प्रब्रज्या अङ्गीकार की थी। चैत्र कृष्णा अष्टमी, विक्रम सम्वत् 1995 तदनुसार 13 मार्च, 1939 को आपका पीपाड़ की ही पुण्य भूमि पर माँ मोहिनी की रत्नकुक्षि से जन्म हुआ। आचार्यश्री हस्ती के मनोनयन पत्र के आधार पर आपको वैशाख शुक्ला 9 विक्रम सम्वत् 2048 को संघ का आचार्य घोषित किया गया तथा ज्येष्ठ कृष्णा पञ्चमी विक्रम सम्वत् 2048 तदनुसार 2 जून, 1991 को जोधपुर के सरदार स्कूल के प्राङ्गण में आचार्य पद की चादर ओढ़ाई गयी। इस समारोह में उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. प्रभृति सन्तों एवं महासती मण्डल के साथ जयगच्छ एवं ज्ञानगच्छ के सन्त-सतीवृन्द तथा हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं की भी उपस्थिति रही।

अपने पूज्य गुरुदेव के प्रति श्रद्धा में एकनिष्ठ समर्पित पूज्य आचार्यश्री हीरा के मुखारविन्द से आज भी अपने गुरुदेव का नाम भक्ति एवं पूर्ण श्रद्धा के साथ निगदित होता है। आपके दिल एवं दिमाग का कण-कण अपने गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता के भाव से ओतप्रोत है। आपके आचार्य पद को 31 वर्ष पूर्ण हो गये हैं। आपका यह आचार्य काल अनेक उच्चावच परिस्थितियों से युक्त रहा, किन्तु आप धीरता, समता एवं समाधि में अडोल बने रहे। आप एक सधे हुए साधक सन्त हैं तो

साथ ही संघ को साथ लेकर चलने में निष्णात संघनायक हैं। आप प्रचार से अधिक आचार में विश्वास रखते हैं। विद्वत्ता से अधिक समत्व की साधना को महत्त्व देते हैं। आपके शासन काल में संघ में सन्तों की संख्या 25 तक तथा महासतियों की संख्या 104 तक पहुँची है। अनेक मेधावी, गुणवान् एवं आचारनिष्ठ सन्तों और महासतियों से यह संघ समृद्ध है। आप संघ रूपी रथ के कुशल सारथि हैं जो अनुशासन की लगाम से उसे नियन्त्रित करके चलते हैं। संघनायक होने के कारण आपने अनेक प्रकार की समस्याओं का कुशलतापूर्वक समाधान किया है। सूझबूझ एवं आत्मविश्वास के धनी पूज्य आचार्यप्रवर ने आत्मसाधना को महत्त्व देते हुए गतवर्ष संवत्सरी महापर्व के अवसर पर महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. को भावी आचार्य घोषित कर अपना संघ-सम्भाल सम्बन्धी भार हल्का कर लिया है। कई मायनों में आप अपने पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म.सा. से भी आगे निकले हैं। सन्त-सतियों की संख्या में लगभग ढाई गुणी अभिवृद्धि इसका एक उदाहरण है। इसी प्रकार आपने सतीर्थ्य सन्तों को साथ लेकर संघनायकत्व का कुशल निर्वहन किया है। उन सन्तों का भी आपको आत्मीयता एवं श्रद्धापूर्वक पूरा सहयोग मिला है। महासतीवृन्द ने भी इस संघ को समृद्ध बनाने में आपका पूरा सहकार किया है।

आप आगममर्मज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, सिद्धान्त प्रिय, वचन के धनी, संस्कृति रक्षक महान् सन्त हैं। आपने भारतवर्ष के विभिन्न प्रान्तों में हजारों किलोमीटर की पदयात्रा करके जिनधर्म का एवं जिनवाणी का प्रचार-प्रसार कर हजारों लोगों को निर्व्यसनी, शीलव्रती एवं साधनाशील बनाया है। आपके अभियानों में

निर्व्यसनता का प्रमुख स्थान है। ग्रामों एवं नगरों में जहाँ भी आप पधारे हैं वहाँ मद्य, मांस, गुटखा, जर्दे आदि सभी प्रकार के कुव्यसनो का आपने त्याग करवाया है। जन्मना अजैन बन्धु भी आपकी इस प्रेरणा से अपने इस जीवन को सही दिशा प्रदान कर सके हैं। शेर बाजार में पैसा लगाने को भी आप द्यूत मानकर उसे छोड़ने की प्रेरणा करते हैं। गुरुदेव आचार्यश्री हस्ती के अभियान सामायिक और स्वाध्याय को आपने निरन्तर आगे बढ़ाया है। आपने धर्मस्थान में जाकर सामायिक की साधना करने हेतु विशेष प्रेरणा की है। आगम एवं सत्साहित्य के स्वाध्याय की भी आप निरन्तर प्रेरणा करते रहते हैं। रात्रिभोजन-त्याग आपका विशेष प्रिय अभियान रहा है। सामूहिक भोज में रात्रिभोजन-त्याग की महती प्रेरणा रहती है। आपकी प्रेरणा से अनेक विवाह समारोहों में भोज का आयोजन दिन में सम्पन्न होने लगा है। चेन्नई जैसे महानगर में अनेक जैनबन्धु दिन में विवाह समारोह आयोजित कर रात्रि के सामूहिक भोज का पूरी तरह परिहार कर रहे हैं। इसकी गूँज अन्य क्षेत्रों में भी पहुँची है। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्ती की भाँति आप भी प्रतिवर्ष अपने जीवन की आयु के अनुरूप आजीवन शीलव्रती बना रहे हैं। यह संख्या निरन्तर वृद्धि को प्राप्त हो रही है। आपकी प्रेरणा से अनेक श्रद्धालु श्रावकों ने एक से लेकर बारह व्रत अङ्गीकार किये हैं। ज्ञान-साधना के क्षेत्र में श्रावक-श्राविकाओं की भागीदारी बढ़ी है। आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के माध्यम से हजारों धर्मनिष्ठ नर-नारियों ने तथा बालक-बालिकाओं ने ज्ञानार्जन किया है, जो आज भी सतत जारी है। बाल पीढ़ी को संस्कारित करने हेतु अनेक संस्कार केन्द्रों का सञ्चालन हो रहा है। भावी पीढ़ी को नष्ट होने से बचाने के लिए सत्संस्कारों की महती आवश्यकता है। ये संस्कार जब बचपन में बालक को मिल जाते हैं तो वे बाद में उसकी चेतना को कुपथ पर जाने से रोकते हैं। स्थानकवासी परम्परा में स्वाध्याय और सामायिक के साथ प्रतिक्रमण को भी विशेष महत्त्व दिया जाता है। पूज्य आचार्यप्रवर की प्रेरणा से संघ के द्वारा गत वर्ष प्रतिक्रमण वर्ष मनाया गया, जिसमें सैकड़ों

बालक-बालिकाओं एवं श्रावक-श्राविकाओं ने प्रतिक्रमण कण्ठस्थ किया तथा प्रतिक्रमण के सम्बन्ध में गहन जानकारी प्राप्त की। सन् 2006 में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा जिनवाणी का प्रतिक्रमण विशेषांक भी प्रकाशित हुआ है तथा आवश्यकसूत्र का भी विवेचन के साथ प्रकाशन हुआ है। इन्हें पढ़कर कोई प्रतिक्रमण की महत्ता एवं परम्परा से अवगत हो सकता है। आत्मविशुद्धि तभी सम्भव है जब प्रतिक्रमण के साथ कषायों का भी प्रत्याख्यान हो। क्रोध, मान, माया और लोभ मनुष्य को दुःखी बनाये रखते हैं। उसकी चेतना का विकास होने में बाधक बनते हैं। कर्मबन्ध के भी ये मूल हैं अतः पूज्य आचार्यप्रवर स्वयं कषाय रहित होने की साधना करने के साथ अपने प्रवचनों एवं प्रेरणाओं में इन कषायों पर विजय प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते रहे हैं।

आपके शासनकाल में ही अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड और आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र स्थापित हुए। राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी का आयोजन भी प्रतिवर्ष पुनः प्रारम्भ हुआ। वीतराग ध्यान साधना का भी कतिपय वर्षों तक सुन्दर रूप देखने को मिला, जिसकी आवश्यकता एवं महत्ता का अनुभव आज भी कई लोग करते हैं।

पूज्य आचार्यप्रवर ने अपनी साधना को सदैव प्राथमिकता प्रदान की है तथा संघ में भी सभी साधु-साध्वियों से यही अपेक्षा रखी है कि वे निरतिचार रूप से संयम का पालन करते हुए साधना को महत्त्व दें। पूज्य आचार्यप्रवर का सन्देश है कि साधु-साध्वियों का जीवन लक्ष्योन्मुखी हो। वे आत्मविकास के साथ-साथ धर्म की प्रभावना के लिए अप्रमत्त रहकर प्रयत्नशील हों। साधु-साध्वियों के समक्ष ऐसे कई प्रसङ्ग आते हैं जिनमें विषमता, द्वन्द्व, कलह आदि की स्थिति बनती है। ऐसे अवसर पर साधु-साध्वी समभाव में रहकर साधुता की रक्षा करें। व्यक्तिराग कहें या व्यक्तिवाद कहें, यह साधक को अध्यात्म क्षेत्र में गहरा नहीं उतरने देता। निर्मोही नहीं बनने देता। हर साधक गुणानुरागी बने, किन्तु व्यक्ति का, देह का एवं पुद्गल का रागी नहीं

बने। आत्मसाधक के लिए लोकैषणा ज़रूर है। साधक प्रसिद्धि का नहीं अपितु सिद्धि का पिपासु होता है। कई साधक प्रसिद्धि के व्यामोह में फँसकर साधना से हाथ धो बैठते हैं। अहंकार का पोषण तो जीव को अच्छा लगता है। भगवान ने इसे अनुकूल परीषह बताया है। अहंकार का काला विषैला नाग स्वयं को भी डसता है और संघ में भी ज़रूर फैलाता है। अहंकारी से समाधि कोसों दूर होती है। स्वयं की कमजोरी को जानने पर अहंकार हावी नहीं होता। अहंकार आयेगा तो साधक अपने में नहीं होने वाली विशेषता को भी अपने में मानने लगेगा। जबकि साधक को भीतर में रहे हुए दोषों को निरन्तर निकालने हेतु अप्रमत्त भाव से साधना करनी चाहिये।

विचरण विहार करने से मुनि जीवन में नूतनता और निर्लिप्तता बनी रहती है तथा संसर्ग में आने वालों को साधु-साध्वी धर्माचरण की ओर उन्मुख कर परमार्थ का कार्य करते हैं। श्रावक-श्राविकाओं को चाहिये कि विहार-सेवा संवर के साथ करें। संवर स्वीकार करने पर सचित्त का त्याग, अचित्त का विवेक आदि पाँच अभिगम का पालन सहज ही हो जाता है। श्रावक-श्राविका दृढ़ श्रद्धालु हों, अरिहन्त और सिद्धों को देव मानकर चले तथा लौकिक देवी-देवताओं के चक्कर में न उलझें। श्रावक के प्रतिदिन करणीय छह कार्यों में तीसरा स्वाध्याय है। स्वाध्यायियों के ज्ञानवर्धन एवं जीवन उत्थान हेतु स्थानीय, क्षेत्रीय या राष्ट्रीय स्तर पर संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, शिविरों, प्रतियोगिताओं के आयोजनों से नवीन ऊर्जा का सञ्चार होता है तथा परस्पर समन्वय, सामञ्जस्य, सौहार्द, सहनशीलता जैसे सद्गुणों का विकास सम्भव है। संघ के पदाधिकारी अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन सावधान रहकर करें। व्यक्तिगत यश-अपयश एवं कठिनाई की परवाह किये बिना कार्य के प्रति कृतसंकल्प रहें। सक्षम पदाधिकारी अनुशासन प्रिय, निष्पक्ष, निर्भय एवं परिपक्वता युक्त होते हैं। पद लेना ही अधिकार नहीं समझें, पद से जुड़े अपने दायित्वों, कर्तव्यों और अधिकारों की गरिमा का ध्यान रखते हुए पद को गौरवान्वित करें। सबको साथ लेकर चलने का प्रयास करें। कार्यकर्ताओं के लिए पूज्य

आचार्यप्रवर का चिन्तन है कि जिस संस्था में जीवनदानी कार्यकर्ता होते हैं वह संस्था जीवित रह सकती है एवं विकास को प्राप्त करती है। कार्यकर्ता दीमक नहीं दीपक सदृश हों, वे चालाक नहीं चतुर हों, संघ कर्मठ कार्यकर्ताओं से चलता है, मात्र वक्ताओं से नहीं। कार्यकर्ता में समर्पण हो, समन्वय हो, सम्यग्दृष्टिकोण हो, क्षमता हो एवं सहनशीलता हो। वह किसी काम को छोटा नहीं समझे और अपने आपको कभी बड़ा मानकर नहीं चले। जो गुणग्राही बनकर अपने जीवन को सद्गुणों की सौरभ से महकाता है, वही अपने जीवन को ऊँचा उठाता है। श्रावक-श्राविकाओं को गुणों का पारखी बनकर निज गुणों का सम्बर्द्धन करना चाहिये।

पूज्य आचार्यप्रवर का जंघाबल क्षीण हो गया है, किन्तु आत्मा के साथ मन, मस्तिष्क पूरी तरह स्वस्थ हैं। आप अधिकांश समय स्वाध्याय और आत्मानुप्रेक्षा के साथ साधना में व्यतीत करते हैं। प्राणिमात्र के प्रति अनुकम्पा और मैत्री का सन्देश देने वाले पूज्य आचार्यप्रवर बहुत कम बात करते हैं। अपने चेहरे की मुस्कान और निर्भयता का सन्देश देने वाली हस्त मुद्रा से आगन्तुकों का मार्गदर्शन करते हैं। आपने अपने प्रवचनों में जो सन्देश दिया है उसका कोई गहराई से चिन्तन-मनन करे तो अपनी आत्मा का निश्चित ही परिमार्जन कर सकता है। विषम परिस्थितियों में भी आपने समता की साधना को जीकर अपने व्यक्तित्व को सँवारा है। आपने आचार की शिथिलता से कभी समझौता नहीं किया, क्योंकि साधना के क्षेत्र में व्यक्ति महत्त्वपूर्ण नहीं, साधना की उत्कृष्टता एवं निर्दोषता ही महत्त्व रखती है। पूज्य आचार्यप्रवर महतो महीयान् हैं। आपकी दृष्टि निर्मल है, भावना निर्मल है, सबका हित चाहते हैं तथा संघ को निर्दोषता पूर्वक आगे बढ़ते हुए देखना चाहते हैं।

ऐसे महान् साधक पूज्य आचार्य श्री हीरा को उनके 32वें आचार्य पद ग्रहण दिवस पर कोटि-कोटि वन्दन-नमन। साथ ही पूज्य आचार्यश्री हस्ती एवं आचार्यश्री हीरा के सद्गुणों से सम्पन्न भावी आचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. को भी उनके 48वें दीक्षा वर्ष में कोटि-कोटि वन्दन-नमन।

## आगम-वाणी

डॉ. धर्मचन्द जैन

दुज्जए कामभोगे य, णिच्चसो परिवज्जए।  
संका-ठाणाणि सव्वाणि, वज्जेज्जा पणिहाणवं।।

-उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 16, गाथा 14

अर्थ-साधना में स्थिरचित्त मुनि दुर्जेय कामभोगों का सदैव त्याग करे और सभी प्रकार के शंका (भय) स्थानों से दूर रहे।

विवेचन-साधु पञ्चमहाव्रतों के साथ कामभोगों का विजेता होता है। वह कामभोगों का त्याग करके ही श्रमण-जीवन अङ्गीकार करता है और इस जीवन में मन, वचन तथा काया के स्तर पर कामभोगों पर पूर्ण विजय प्राप्त करने की साधना में संलग्न रहता है। साधनाशील साधु की साधना में निरन्तर अनेकविध विघ्न उपस्थित होते रहते हैं। वर्तमान काल में भोग सामग्रियों की अभिवृद्धि हुई है और साथ ही ब्रह्मचर्य के पालन में मन को विचलित करने वाले प्रसङ्ग अधिक उपस्थित हो रहे हैं। नारियों का पहनावा एवं विभूषा की अधिकता संयमी साधकों के लिए भी चुनौती का कार्य कर रहे हैं। जो युवा साधक हैं तथा जिन्होंने अपने चित्त को पूर्णतः नहीं जीता है उनका चित्त विचलित न हो, इसके लिये आगमों में श्रमणों की कठोर आचार संहिता निर्मित की गयी है। साधु उस आचार संहिता के पालन में यदि कहीं उच्छृंखल या शिथिल हो जाये तो उसकी आत्म-साधना संकट में पड़ सकती है।

उत्तराध्ययनसूत्र के 16वें अध्ययन में ब्रह्मचर्य के सम्यक् परिपालन के लिए दस ब्रह्मचर्य समाधिस्थान कहे गये हैं-(1) साधु को स्त्री, पशु एवं नपुंसक से संसक्त शयन एवं आसन का सेवन नहीं करना चाहिए। (2) निर्ग्रन्थ साधु को स्त्रियों के सम्बन्ध में कामोत्तेजक वार्ता नहीं करनी चाहिए। (3) स्त्रियों के साथ एक ही आसन पर या अधिक निकट नहीं बैठना चाहिए। (4) उनके मनोरम एवं मनोहर अङ्गों का अवलोकन नहीं

करना चाहिए। (5) परदे या दीवार के अन्तर से भी स्त्रियों के कूजन, रोदन, गीत, हास्य, आक्रन्दन, विलाप आदि के शब्दों को नहीं सुनना चाहिये। (6) प्रव्रज्या के पूर्व यदि विवाह हुआ हो तो पूर्व भोगों का स्मरण नहीं करना चाहिये। (7) अत्यधिक सरस आहार का सेवन नहीं करना चाहिये। (8) भोजन, पान का सेवन अधिक मात्रा में नहीं करना चाहिये। (9) भिक्षुक को अपने शरीर की विभूषा नहीं करनी चाहिये। (10) शब्द, रूप, रस, गन्ध और स्पर्श में आसक्त नहीं होना चाहिये। ब्रह्मचर्य पालन के लिए ये दस स्थान बड़े ही महत्त्वपूर्ण हैं। जो इनका पालन करता है वह निर्ग्रन्थ श्रमण होता है। अन्यथा शिथिलता होने पर ब्रह्मचर्य में शंका, कांक्षा और विचिकित्सा उत्पन्न हो सकती है। कदाचित् ब्रह्मचर्य का भङ्ग हो सकता है, साधु को उन्माद उत्पन्न हो सकता है अथवा वह केवली प्रभु के धर्म से भ्रष्ट हो सकता है। इन्हीं दस ब्रह्मचर्य समाधि-स्थानों को 9 गुणियों के रूप में प्रस्तुत करते हुए शब्द, रूप, गन्ध, रस और स्पर्श इन पाँच प्रकार के काम गुणों का नित्य वर्जन करने की शिक्षा दी गयी है, जो 9 प्रकार की ब्रह्मचर्य-गुप्ति का कोट है।

प्रस्तुत गाथा में कामभोगों को दुर्जेय कहा गया है। इनमें शब्द और रूप से सम्बद्ध विषयों को काम तथा शेष तीन इन्द्रियों के विषयों को भोग माना जाता है। कामभोग भी इस संसार में रूलाने एवं भटकाने वाले हैं। अतः साधक इनमें जाने वाले चित्त को ज्ञानपूर्वक जितना नियन्त्रित करने में समर्थ होगा उतना ही वह आत्मसाधना में परिपक्वता को प्राप्त कर सकेगा। सबसे पहली आवश्यकता है-एक साधु को नारियों के साथ अधिक परिचय नहीं बढ़ाना चाहिये तथा उनके साथ अधिक समय व्यतीत नहीं करना चाहिये। इसी प्रकार साध्वियों को भी पुरुषों के साथ अधिक परिचय बढ़ाने से और

उनके साथ अधिक वार्ता करने से बचना चाहिये। फिर यह साधक की साधना की परिपक्वता पर निर्भर करता है कि वह अपने को कितना समर्थ अनुभव करता है। यदि उसका चित्त डाँवाडोल होता है तो निश्चित रूप से उसे निमित्तों से सावधान होकर ज्ञानपूर्वक अपने चित्त को सबल बनाना चाहिये।

गाथा में 'पणिहाणवं' (प्रणिधानवान्) शब्द का

प्रयोग हुआ है जो साधक की जागरूकता को इंगित करता है। उसे उन समस्त शंका स्थानों का वर्जन करना चाहिए, जिनके कारण उसका ब्रह्मचर्य व्रत खतरे में पड़ता हो। यदि वह इस व्रत की सावधानी से रक्षा कर लेता है एवं मन को जीत लेता है तो उसकी साधना में निरन्तर तेजस्विता निखर सकती है और वह आत्मनियन्ता एवं आत्मजेता बन सकता है।

## अरिहन्त को समझें

श्री प्रमोद महन्ते

जैनधर्म को समझने के लिए अरिहन्त शब्द को समझना आवश्यक है। अरिहन्त का अर्थ है— 'शत्रुओं का हनन (समाप्त) करने वाला।' इसका अभिप्राय बाहरी शत्रुओं का नाश करना नहीं है, बल्कि अन्तरंग काम-क्रोध, लोभ कषाय आदि शत्रुओं का हनन करना है। बहुत से वीर मिल जायेंगे, जो शेर और हाथी जैसे बलशालियों से भी जीत सकते हैं, पर अपने अन्दर में स्थित कर्म शत्रुओं को हराने वाले अध्यात्म क्षेत्र के वीर कम ही मिलेंगे।

जैनधर्म के अनुसार मानव को अपने अन्दर की वासनाओं से लड़ना है, क्योंकि बाहर के शत्रु इन्हीं के कारण जन्म लेते हैं। अतएव जैनधर्म कहता है, अपने आप से लड़ो, विजयी बनो, वीतरागता को प्राप्त करो। सिर्फ विष-वृक्ष के पत्ते नोचने से काम नहीं चलेगा, जड़ उखाड़िये, जड़। इस तरह जब अन्तरंग हृदय में कोई सांसारिक कामना ही न होगी, वासना-विकार आदि की छाया ही नहीं रहेगी, तब बिना कारण बाह्य शत्रु क्यों जन्म लेंगे? यह एक धर्म युद्ध है, जो जीत गया, वह जिनेश्वर की राह पर आ गया। ज्ञानी कहते हैं निर्मल और सरल आत्मा में ही धर्म ठहरता है।

जैन संस्कृति, मानव संस्कृति है। यह मानव में ही भगवान् स्वरूप की झाँकी देखती है। अतः जो साधक, साधना करते हुए वीतराग भाव रूप पूर्ण विकसित पद पर पहुँच जाता है, वही यहाँ भगवान् बन जाता है और सिद्ध आत्मा कहलाता है। जैनधर्म अवतारवादी नहीं है,

वह यह नहीं मानता कि मुक्ति से वापस आकर ईश्वर यहाँ जन्म लेता है और वह संसार का भगवान् बनता है। जैनधर्म का भगवान् सिद्ध लोक से यू-टर्न लेकर आया हुआ ईश्वर नहीं, परन्तु पूर्ण विकास पाई हुई मानव आत्मा ही भगवान् है।

जैनदर्शन के अनुसार वीतराग देव अरिहन्त होते हैं। वीतरागता प्राप्त हुए बिना, अरिहन्तपना आ ही नहीं सकता। दोनों में कार्य-कारण का अटूट सम्बन्ध है। वीतरागता कारण है, अरिहन्तपना उसका कार्य है।

जैनधर्म विजय का धर्म है, पराजय का नहीं। आत्मा के शत्रुओं का सफाया करने वाला तथा उनको विनष्ट करने वाला धर्म है, उनकी दासता स्वीकार करने वाला नहीं।

इस तरह जिन्होंने अपने चार घातिया कर्मों का क्षय करके, अनन्त दर्शन, अनन्त ज्ञान, अनन्त चारित्र और अनन्त वीर्य, इस चतुष्टय को पूर्ण रूप से प्रकट (प्राप्त) कर लिया है, वे ही अरिहन्त हैं। इन्हें तीर्थंकर और जिनदेव भी कहते हैं।

जैनधर्म की साधना का मूल सम्यग्दर्शन है, उसके प्रतिज्ञा सूत्र में भी सर्वप्रथम 'अरिहन्तो महदेवो' है अर्थात् अरिहन्त भगवान् मेरे देव हैं। 'नमोत्थु णं' सूत्र जिसे प्रणिपात सूत्र भी कहते हैं, उसके द्वारा जैन धर्मी सिद्धों एवं अरिहन्तों के गुणों की अत्यन्त विनम्रता एवं बहुमानपूर्वक स्तुति करते हैं। अतः जैन संस्कृति और विचारधारा का मूल 'अरिहन्त' ही है।

-सी 345, हंस मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राजस्थान)

## आत्मा से परमात्मा

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

- ज्यों-ज्यों राग और द्वेष की आकुलता कम होती जाती है और ज्ञान का आलोक फैलता जाता है, त्यों-त्यों अन्तःकरण में शान्ति का विकास होता जाता है।
- यदि हम परमात्मा के सत्स्वरूप को लक्ष्य करके प्रार्थना करेंगे तो हमारा निशाना खाली नहीं जाएगा, हमारा प्रयत्न विफल नहीं होगा। हमारी आत्मा के विकार सदा के लिए दूर हो जाएँगे।
- जिसे आत्मबल प्राप्त है, वह सदा शान्त, अडोल और अकम्प रहता है, संसार की कोई पौद्गलिक वस्तु या कोई घटना उसके चित्त की समाधि को भङ्ग नहीं कर सकती।
- जिसके पास आत्मबल है, उसके पास परमात्मबल है। जिसके आत्मबल का दिवाला निकल चुका है, उसे परमात्मबल भी प्राप्त नहीं होता।
- भक्ति की भावना से और ज्ञान-गंगा के निर्मल नीर से प्रार्थना आत्मा की मलिनता को दूर करने के लिए है। किन्तु यदि शल्य रह गया है, पर्दा रह गया है, कहीं किसी प्रकार का कपटभाव बना रह गया है तो वह आत्मा पूर्ण रूप से शुद्ध होने में समर्थ नहीं होगी।
- जैसे समुद्र में डाला हुआ कंकर दूसरे ही क्षण अदृश्य हो जाता है, उसी प्रकार जब परमात्मा की स्तुति, चिन्तन और ध्यान में मन विलीन हो जाता है और संसार के समस्त जंजालों से पृथक् होकर तन्मय बन जाता है तो समस्त शोक, सन्ताप और आधि-व्याधियाँ गायब हो जाती हैं।
- जब आत्मा की ज्योति चमक उठती है और आन्तरिक तिमिर दूर हो जाता है, तब बाहर की जितनी भी आधि-व्याधि और उपाधियाँ प्रतीत होती हैं और जीवन में उनके अनुभव की जो कटुता होती है, वह सब नष्ट हो जाती है।
- आत्मा का सजातीय द्रव्य परमात्मा है। अतएव जब विचारशील मानव संसार के सुरम्य से सुरम्य पदार्थों में और सुन्दर एवं मूल्यवान वैभव में शान्ति खोजते-खोजते निराश हो जाता है, तब उनसे विमुख होकर निथरते-निथरते पानी की तरह परमात्म-स्वभाव में लीन होता है। वहीं उसे शान्ति और विश्रान्ति मिलती है।
- जिनका चित्त स्वच्छ नहीं है वे परमात्म सूर्य के तेज को ग्रहण नहीं कर सकते।
- दिल का दर्पण जब तक स्वच्छ नहीं होता, स्थिर नहीं होता या निरावरण नहीं होता तब तक शाब्दिक गुणगुनाहट होने पर भी आत्मा में पारमात्मिक तेज प्रस्फुटित नहीं होता।
- भौतिक ज्ञान की प्रगति के प्रतीक बमों और रॉकेटों के चमत्कार को देखकर दुनिया स्तब्ध हो जाती है, परन्तु दिल रूपी दर्पण में अगर ताकत पैदा हो जाय तो वह इससे भी बड़ा चमत्कार दिखा सकती है।
- वीतराग स्वरूप के साथ एकाकार होने के साधन हैं-प्रार्थना, चिन्तन, ध्यान, स्वाध्याय, सत्संग, संयम आदि।
- आत्मा के समस्त गुण आत्मा में उसी प्रकार एकाकार हैं, जिस प्रकार मिश्री में मधुरता, शुक्लता और कठोरता आदि गुण उसमें एक रूप हैं। कितना ही शक्तिशाली यन्त्र क्यों न हो, वह मिश्री की मधुरता, शुक्लता आदि का पृथक्करण नहीं कर सकता। इसी प्रकार आत्मा के गुण आत्मा से भिन्न नहीं हो सकते और परस्पर में भी भिन्न नहीं हो सकते।

- 'अमृत-वाक्' पुस्तक से साभार

## करणि के फल का सदुपयोग करें

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. द्वारा जयपुर चातुर्मास में प्रदत्त प्रवचन का आशुलेखन श्री अशोकजी जैन (निजी सचिव) 'हरसाना', जयपुर द्वारा किया गया है।

-सम्पादक

सर्वज्ञता के गुण को प्राप्त करने वाले अनन्त ज्ञानी तीर्थङ्कर भगवन्त तथा वीतराग वाणी के अमृत का पान कर जीवन विकास के लिए धर्म में समर्पित होकर चलने वाले परमेष्ठी भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि बन्दन।

तीर्थङ्कर भगवान महावीर की अन्तिम अनुपम वाणी उत्तराध्ययनसूत्र में संग या संगति का चमत्कार दिखाया गया है। संग जड़ से जड़ का, जड़ से चेतन का, चेतन से चेतन का होता है। जड़ से जड़ का संग भी असरकारी होता है। कभी लोहे के साथ पारस का संसर्ग हो जाय तो लोहा भी स्वर्ण में परिवर्तित हो जाता है। तिर्यञ्च के पेट में गया हुआ लोहा पेट के बाहर चुम्बक लगाकर खींच लिया जाता है। इस प्रकार जड़ का जड़ पर प्रभाव हमें व्यवहार में दिखाई देता है। जड़ का चेतन पर भी असर होता है। भाँग पीकर लोग मदमस्त हो जाते हैं, अमल और शराब पीकर भी अपनी चेतना भूल जाते हैं। लोग दूध पीकर शरीर में पौष्टिकता, ताकत का अनुभव करते हैं। यह है जड़ का चेतन पर असर। शब्द भी जड़ होते हुए असरकारी होते हैं। जड़ शब्द भी मोह में सोये हुए को ऐसा जागृत करते हैं कि वह कर्म-बन्धनों को भी तोड़ने हेतु पुरुषार्थी हो जाता है। इसी तरह जड़ आहार भी चेतन पर असर करता है। शास्त्र कह रहा 'जैसा खावे अन्न वैसा होवे मन।' अच्छी संगति से पापी से पापी भी तिर जाते हैं तो विपरीत सङ्ग से अच्छे साधनाशील भी पतन की ओर चले जाते हैं। इसलिये शास्त्र कह रहा है कि सबसे पहले सत्संग में बैठो। पान वाले की दुकान पर बैठकर गालियाँ सीख जाओगे। गप्पेबाजों की संगति में गप्पे मारना सीख जाओगे, पर अगर जीवन-निर्माण करना है, इस लोहे को पारस बनाना है या इस जीवन को

स्वर्ग तुल्य बनाना है तो अच्छी संगति करो तभी जीवन का निर्माण हो पायेगा।

सत्संगति का प्रभाव उत्तराध्ययनसूत्र के 13वें अध्ययन में बताया है। चाण्डाल पुत्र चित्त-सम्भूत अपमानित और तिरस्कृत होकर आत्महत्या करने ही वाले थे। उसके लिये वे एक पर्वत पर पहुँचे। वहाँ से कूदकर जीवन का अन्त करने की तैयारी में थे कि वहाँ एक निर्ग्रन्थ मुनि को तपस्या करते देखा। मुनि के पास जाकर दोनों ने भक्तिपूर्वक बन्दन किया। मुनि ने उनकी स्थिति जानकर कहा कि यों ही जीवन का अन्त करने की अपेक्षा इस बहुमूल्य जीवन से तप-संयम का आचरण करना श्रेयस्कर है। मैं तुम्हें आत्मीय भाव से कल्याण मार्ग की शिक्षा देकर मुनिधर्म में दीक्षित करूँगा। दोनों प्रतिबोध पाकर उक्त मुनि के शिष्य बन गये और दीक्षा ग्रहण करके वे ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की उत्कृष्ट आराधना करने लगे। संगति का प्रभाव कि आत्महत्या करने वाले तिरस्कृत चित्त-सम्भूत आज संयमी साधक हो गये। लेकिन एक बार भिक्षाटन करते हुए सम्भूत मुनि को नमुचि ने पहचान लिया। पूर्व का वैर जागृत हो गया और उसने सम्भूतमुनि के खिलाफ नागरिकों को भड़काया। फलतः उन्होंने सम्भूतमुनि को नगर में प्रवेश करने से रोक दिया। इससे मुनि का क्रोध उमड़ पड़ा, क्रोधावेश में आकर सम्भूतमुनि ने नगर में तेजोलेश्या छोड़ी। मुख से धुआँ निकलता देख चित्तमुनि ने सम्भूतमुनि को बहुत समझाया और वे शान्त हुए। परन्तु धुआँ फैला देखकर नागरिक और सनत्कुमार चक्रवर्ती भयभीत हुए और अपनी रानी सहित सम्भूतमुनि के चरणों में पहुँचकर अपने अपराध के लिए

क्षमा माँगने लगे। चक्रवर्ती की रानी ने भक्ति के आवेश में सम्भूतमुनि के चरणों में अपना सिर रखकर नमस्कार किया। रानी के बालों के कोमल स्पर्श एवं रूप लावण्य को देखकर मोहित सम्भूत मुनि ने निदान की भावना की। चित्तमुनि के बहुत कुछ समझाने पर भी निदान कर लिया कि- “मैं अपने घोर तप और संयम के प्रभाव से भविष्य में इसके जैसा चक्रवर्ती बनूँ और ऐसे सुखों का अनुभव करूँ।”

व्यक्ति कभी धन से दुःखी होता है तो कभी धनी आदमी बनने का प्रयत्न करता है, पर भाई! माँगने पर मिलता है या करणी से मिलता है। करणी से मिलता है तो फिर नाकोड़ाजी, भैरूजी, देवीजी के चरणों में माथा क्यों टेकते हो। अपनी करणी को ऐसी पुण्यशाली बनायी जाय जिससे इच्छित सुख मिलता ही चला जाय। पुण्यशालिता घट गई तो धन्धा भी ठप्प हो जायेगा। शास्त्र कह रहा है-हे मानव! एके साथे सब सधे, सब साथे सब जाय। सम्भूतमुनि ने भी अपनी करणी का निदान करके अपनी साधना दावँ पर लगा दी।

एक धर्म कायम है तो जितने भी सुख, ऐश्वर्य, धन-सम्पदा है वह स्वतः ही आ जायेगी। गर्मी में नीम कभी टूँठ हो जाय, एक-एक पत्ता झड़कर गिर जाये, मात्र पेड़ कायम है तो भी कभी न कभी हरा हो ही जायेगा। राजा हरिश्चन्द्र श्मशान में चले गये, पहरा दिया, पर सत्य धर्म को कायम रखा। सत्य धर्म कायम है तो देवता भी हाथ जोड़कर खड़े हो जायेंगे। डालियाँ खिली हुई हैं, पत्ते हैं, किन्तु जड़ सूख गई, मूल सूख गया, तो फिर हरे-भरे पत्ते भी शीघ्र ही सूख जायेंगे, कुछ समय लगेगा समाप्त होने में। भगवान महावीर का कथन है- जड़ को सींचें। क्रदम-क्रदम पर जीव घबराता है। सम्भूतमुनि ने निदान किया फलस्वरूप ऐश्वर्य, सम्पदा परिपूर्ण कुल में जन्म लिया। चक्रवर्ती का सुख पाया। 14 रत्न, नौ निधि का वैभव प्राप्त किया। भौतिक वैभव परिपूर्ण प्राप्त कर लिया, पर आध्यात्मिक वैभव दूर हो गया। पुण्यशाली जीव के जहाँ पैर पड़े वहाँ पौबारा पच्चीस, भाग्यहीन के पैर पड़े वहीं बरबादी।

सम्भूतमुनि के ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती बनने के बाद एक दिन महोत्सव देखते-देखते केवली भगवान के चरणों में विमान को जाते देखा। चिन्तन चला कि मैंने भी कहीं ऐसा विमान देखा है। जाति-स्मरण ज्ञान हो गया।

पूर्व जन्म की स्मृतियाँ करते-करते ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती मूर्च्छित हो गया। शीतल उपचार करके उन्हें स्वस्थ किया गया। पिछले पाँच जन्म की याद आने लगी। अपने सगे भाई चित्त से मिलने को मन आतुर-बेचैन हो उठा। पर वह है कहाँ? कहाँ पता लगे उसका? भाई की खोज करने के लिए चक्रवर्ती ने एक श्लोक के दो चरण बनाये-

आस्व दासौ मृगौ हंसौ मातंगावमरौ तथा।

और अपने सेवकों को कहा-यह गाथा सर्वत्र प्रचारित कर दो, जो इस गाथा के अगले चरण की पूर्ति कर देगा उसे आधा राज्य दिया जायेगा। चक्रवर्ती के आदेशानुसार गाथा प्रचारित हो गई। जन-जन के मुँह पर यह श्लोक नाचने लगा।

इधर चित्त के जीव ने देवलोक से च्यवकर पुरिमताल नगर के इभ्यसेठ के घर जन्म लिया। पूर्व संस्कारों के कारण वैराग्य हुआ और वह दीक्षा लेकर तपस्या-कायोत्सर्ग करने लगा। मुनि विहार करते हुए काम्पिल्यपुर के बाहर मनोरम वन में आकर ठहरे और कायोत्सर्ग में स्थित हो गये। पास ही एक किसान का खेत था। किसान खेत में हल चला रहा था और साथ ही गाथा भी बोलता जा रहा था-

आस्व दासौ मृगौ हंसौ मातंगावमरौ तथा।

चित्तमुनि के कानों में यह श्लोक पड़ा तो तुरन्त ही उन्होंने आगे के चरण को यों पूरा कर दिया-

एषा नौ षष्ठिका जातिः अन्योन्याभ्यां वियुक्तयोः॥

किसान ने श्लोक पूर्ति सुनी तो वह मारे हर्ष के उछल पड़ा। आगे के चरण को वह रटता हुआ तुरन्त दौड़ा और राजसभा में पहुँचा। चक्रवर्ती को सूचना भेजी कि कोई श्लोक की पूर्ति लेकर आया है। चक्रवर्ती ने उसे बुलाया; श्लोक सुना, बस सुनते ही स्नेहवश मूर्च्छित

हो गया। उपचार से चक्रवर्ती को होश आ गया और सारी घटना पूछी। ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती नंगे पाँवों दौड़कर चित्तमुनि के पास पहुँचे।

चक्रवर्ती को सिंहासन पर बैठे हुए भी भाई याद आ रहा है और आज तो सुख-दुःख में भी भाई याद नहीं आता। बड़े आदमी के पास पैसा आ जाय, बड़ा बन जाय तो गरीब भाई को कभी याद ही नहीं करता। भाग्यशाली हैं वे जो सुख में होते हुए भी भाई को याद करते हैं। दुःख में स्मरण करने वाले बहुत हैं। दुःख में तो सभी अपने लगते हैं, ज्योंही सुखी हुआ सब पराये हो जाते हैं। यहाँ तक कहूँ जिन्होंने जन्म दिया वे भी याद नहीं आते। सुख में जन्म देने वाला भी याद नहीं आता।

दौलत में दो दोष कहे हैं-1. कम सुने, 2. कम दिखे। जिसके पास दौलत आ जाती है, उसकी गर्दन में स्प्रिंग लग जाती है, उसे दिखता भी कम है और वह सुनता भी कम है। ज्ञानी हमेशा धर्म को आगे रखता है। ब्रह्मदत्त ने नमस्कार किया और चित्तमुनि के पास बैठे तथा बैठने के साथ सुख-साता पूछी। कहने लगे मैं तो मेरी पिछले जन्म की करणी से सुख भोग रहा हूँ। मेरे पास तो सब कुछ है, पर आपकी यह स्थिति कैसे? ब्रह्मदत्त को लगा चित्तमुनि सुखी नहीं है, कोई दुःख होगा इसलिये सन्त बने हैं। महाराज कौन बने? जिसके घर में सम्पन्नता न हो, रोज लड़ाई होती हो, शायद सन्त बनने को भाग्यहीन समझा जाता है। किन्तु कोई महाराज बिना पुण्य के नहीं बनता। महाराज को सब ले जाने को तैयार हैं कोटा वाले भी, जयपुर वाले भी, लेकिन महाराज बनने को कोई तैयार नहीं हैं। महाराज आप तो जानते ही हो हम तो संसारी जीव हैं, महाराज तो बन सकते नहीं, आप तो क्षमा के सागर हो, आप ही पधारो। ब्रह्मदत्त की सारी शंकाओं का समाधान करने के लिए चित्त ने कहना प्रारम्भ किया। सम्भूत! तू समझ रहा है मैं गरीब हूँ, परन्तु मैं श्रेष्ठी धनसार के जहाँ जन्मा और लाखों की सम्पदा का धनी था, कोई कमी नहीं थी। मैंने यह समझा कि जो भी बहुत कुछ पाया है पिछले जन्म से पाया है। अब इस जन्म को भी सार्थक करना है और इसी लक्ष्य से मैंने

दीक्षा अङ्गीकार की है। यहाँ स्थायी रूप से धन, वैभव रहने वाला नहीं है। इसलिये मैंने भोगों को छोड़कर संयम ग्रहण कर लिया।

सर्वं विलवियं गीयं, सर्वं णट्टं विडंबियं।

सर्वे आभरणा भारा, सर्वे कामा दुहावहा॥

-उत्तराध्ययनसूत्र 13.16

शायद तुम्हें पता नहीं परन्तु सब गीत विलाप रूप हैं, सभी नाटक विडम्बना रूप हैं, सभी आभूषण भारभूत हैं तथा समस्त कामभोग दुःखप्रद हैं।

ये पदार्थ विनश्वर हैं तथा सब सम्बन्ध स्वार्थ के हैं। लेकिन इन नश्वर वस्तुओं के पीछे भी लोग बावले हो रहे हैं। ये स्वार्थ के सम्बन्ध जिस दिन स्वार्थ टूट जायेगा छूट जायेंगे। बेटे तक को नहीं देखना चाहेंगे, ये जितनी बातें हैं राजी करने की और ठगने की हैं। जितने सुख हैं वे सब दुःख देने वाले हैं जितने मीठे शब्द सुन रहे हैं, रूप देख रहे हैं ये सब सुख नहीं, दुःख देने वाले हैं। इस प्रकार चित्तमुनि ने वैराग्य पुरित उपदेश दिया।

ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती ने चित्तमुनि का उपदेश ध्यान पूर्वक सुना, पर जीवन में उतारने का संकल्प नहीं कर सका। बरसात के कीड़े माटी खाते हैं माटी में ही पैदा हुए, अज्ञानी जीव भोग में जन्मते हैं, भोग करते हैं और भोग में ही मर जाते हैं। शास्त्र कह रहा है ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती पद पाकर भी 7वीं नरक में गया और चित्तमुनि धर्म का आचरण कर अनुत्तर गति में। एक अधस्तल पर है और दूसरा ऊर्ध्वपटल पर। किसके सहारे? धर्म के सहारे। करणी के फलस्वरूप दोनों ही भाइयों ने अपार धन वैभव प्राप्त किया, लेकिन ब्रह्मदत्त उस वैभव को ही सब कुछ मान आसक्ति के कारण नरक का मेहमान बना और चित्त ने वैभव का त्यागकर आत्मवैभव को प्राप्त किया। अपनी करणी देखकर ऊपर जाना चाहते हो तो पाप घटाओ, धर्म बढ़ाओ और नीचे जाना चाहते हो तो कुछ कहने की जरूरत नहीं है। पानी को जहाँ छोड़ दोगे नीचे आता है यदि उसको ऊपर चढ़ाना है तो साधना रूपी यन्त्र लगाना पड़ेगा। धर्म की ये सीढ़ियाँ स्वीकार करोगे तो सिद्ध-बुद्ध-मुक्त हो जाओगे। ★

## दुःख का मूल है निज ज्ञान का अनादर

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. द्वारा सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा, जोधपुर में 28 मई, 2017 को फरमाए गए प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया है।

-सम्पादक

चल-अचल, अनित्य-नित्य, परिवर्तनशील-अपरिवर्तनशील इस भेद विज्ञान का आदर करते हुए परिपूर्ण ज्ञान को प्रकट करने वाले अनन्त-अनन्त उपकारी वीतराग भगवन्त और वीतराग भगवन्तों द्वारा प्ररूपित इस आगम-वाणी के अवलम्बन से विवेक का आदर करते हुए सम्यग्दर्शन के गुण को प्रकट कर मुमुक्षुओं को विवेक के आदर की प्रेरणा प्रदान करने वाले आचार्य भगवन्त-उपाध्याय भगवन्त के चरणों में वन्दन करने के पश्चात्.....

हर आदमी सुख चाहता है, दुःख किसी को नहीं चाहिए। दुःख नहीं चाहिए, तो दुःख के आने का कारण क्या है, यह भी समझना होगा। दुःख कहो या दुर्गति अथवा दुर्भाव, उसका मूल कारण है निज ज्ञान का अनादर। हमें जो विवेक प्राप्त है उसका उपयोग नहीं करना दुःख का कारण है। अपनी जानकारी का जीवन पर प्रभाव नहीं होना भी दुःख का ही कारण है। कई हैं जो दूसरों से अपेक्षा तो रखते हैं, किन्तु स्वयं के व्यवहार से उपेक्षित होकर रह जाते हैं वह भी दुःख का ही कारण है। मेरा जीवन जिन अभावों से युक्त है उनका सर्जक कोई दूसरा नहीं, मैं ही हूँ। अभाव होता है लाभान्तरायकर्म से। लाभान्तराय होती है अप्राप्त की कामना से और प्राप्त की ममता से। जड़ का स्वामी चेतन है, पुद्गल की मिल्कियत जीव की है, इसी नासमझी से, इसी वासना से, इसी संस्कार से, इसी मिथ्यात्व से अनादि काल से जीव दुःख पा रहा है। स्वामित्व बदलता है, मालिकाना हक छूटता है, हर क्षण-हर पल परिवर्तन होता रहता है, पर दुःख-दुर्गति-दुर्मति पीछा नहीं छोड़ते। यही मानसिकता है जिसके कारण मनुष्य पुद्गल के अस्थायी स्वरूप को स्थायी बनाने के लिए तत्पर रहता है।

लोक में एक भी परमाणु बढ़ने वाला नहीं है, पर पुद्गल का परिवर्तन हो सकता है। कोयला हीरे में और लोहा इस्पात में परिवर्तित हो सकता है। जीव की संख्या भी न बढ़ने वाली है और न ही घटने वाली। फिर यह जमीन मेरी, यह मकान मेरा, यह दुकान मेरी, यह फैक्ट्री मेरी, इस प्रकार आज आदमी किन-किन पर अपनी मिल्कियत जताता है? जबकि स्थायी कुछ भी नहीं है। आपने सुना होगा-

धरती अखण्ड कँवारिया, वर किए कई लाख।

मुसलमान सब गड़ गए, हिन्दू हो गए राख।।

आदमी हाय-तौबा करता है उसका मूल कारण है-अपने से विमुख होकर और पराये के सम्मुख होकर दुःख-दुर्भाग्य की शृङ्खला में निरन्तर कैद होकर रहना। इससे सरलतम मार्ग कठिनतम बन रहा है। हम जैसा दूसरों से नहीं चाहते हैं वैसा व्यवहार दूसरों के साथ नहीं करना चाहिए। यह सरल मार्ग है। इस मार्ग पर चलने के लिए न व्याख्यान सुनना पड़ता है और न ही किसी पुस्तक को पढ़ने की ही जरूरत है, पर अधिकतर लोग सरल रास्ते पर चलते कहाँ हैं? दूसरों की गलती नज़र आते ही अधिकांश लोग राई का पहाड़ करने को तैयार हो जाते हैं। यह भूल है, निज ज्ञान का अनादर है।

अभी आप-हम व्याख्यान में बैठे हैं। व्याख्यान के बाद सन्त भी कहते हैं-जल्दी करो, देरी हो रही है, देर मत करो। कारण क्या? जरा-सी गर्मी सहन करना भारी लगता है। तीन-चार दिन पहले इधर से जाने का प्रसङ्ग बना। सड़क गर्म थी। किसी ताँगे वाले ने बीच सड़क पर ताँगा खड़ा कर दिया। घोड़े को भी गर्मी लग रही थी, पर

वह क्या करे? धूप कड़क थी। हम तो पास में जहाँ छाया थी, वहाँ से जा रहे थे, लेकिन घोड़े को तो धूप में ही खड़ा रहना है।

हम आवश्यक कार्य के लिए रेल की पटरी के किनारे-किनारे जाते हैं। हमने देखा है पटरी के किनारे-किनारे न जाने कितने परिवार उस खाली जमीन पर रहते हैं। कई पेड़ों के नीचे बैठे मिलते हैं तो कई झोपड़ी में जहाँ तिरपाल लगे हैं वहाँ रहते हैं। वे आसपास की लकड़ियाँ तोड़-तोड़कर लाते हैं और पेट भरने की जोड़-तोड़ में लग जाते हैं। हमें सोचना होगा-हमको जरा-सी पीड़ा सहन नहीं होती, पर कई प्राणी हैं जिन्हें कष्ट-पीड़ा सहनी होती है।

समझने की बात है-प्रत्येक निर्बल बलवान से स्वयं के जीवन की रक्षा चाहता है। सुरक्षा और सहयोग की सब चाहना करते हैं। एक बच्चा चिड़ियाघर में शेर को पिंजड़े में देख रहा है। मान लो कभी पिंजड़ा खुल जाय और शेर बाहर आए या नहीं, तब भी बच्चा शेर से बचना चाहता है। मतलब क्या? शक्तिशाली से हमारी अपेक्षा है कि वह हम पर अपनी शक्ति का दुरुपयोग न करे। हम से जो भी निर्बल हैं वे भी ऐसी ही अपेक्षा रखते हैं। आपके घरों में नौकर-नौकरानी काम करते हैं, दुकान पर मुनीम-गुमास्ते रहते हैं, सभी अपने से अधिक बलवान से रक्षा-सुरक्षा और सहयोग चाहते हैं। निर्बल बलवान से सहायता चाहता है। इसी तरह आपसे जो भी निर्बल हैं, कमजोर हैं उनकी सहायता में संकोच करना निज विवेक का अनादर है। आप नोट कर लें-किसी से कुछ चाहें नहीं और किसी की हितकारी चाह को पूरा करने में हिचकिचाएँ नहीं।

यहाँ हितकारी शब्द लगा है। हितकारी शब्द महत्त्वपूर्ण है। कोई कहे-मुझे वेश्या के यहाँ ले जाओ तो उस चाहना का क्या प्रयोजन? प्रयोजन है-हितकारी चाहना से। जिससे किसी की आत्मा का हित होता है तो उस चाहना को पूरा करने में हिचकिचाना नहीं।

कुछ लोग सोचते हैं कि सुख बाहर से मिलेगा।

ऐसा सोचना सही नहीं है। ऐसी सोच विपरीत मान्यता है। एक औरत चौबीस केरेट सोने से लदी है। उसके आभूषण असली हैं, खुद के हैं। वह गहने न तो चोरी के हैं और न ही माँगकर लाई है। ऊपर से नीचे तक गहनों से लदी वह बहिन घर-घर और दुकान-दुकान पर जाकर कुछ माँगे तो...? क्या उस औरत का माँगना ठीक है?

आप तुरन्त कह देंगे कि उस औरत की मानसिकता विकृत है। माँगना किसके लिए? माँगना कब? एक निष्परिग्रही का माँगना तो उचित है, लेकिन जिसके पास पहले से बहुत-कुछ है वह यदि माँगनी करे तो ठीक नहीं। हाँ, परोपकार के लिए माँगना तो ठीक है, पर साधन सम्पन्न पेट-पूर्ति के लिए माँगे तो वह उचित नहीं है।

जयपुर के सुश्रावक श्री हरिश्चन्द्रजी बडेर थे। वे कहते-परहित काम के लिए माँगने में कोई शर्म नहीं। आप कहीं अस्पताल, स्कूल-कॉलेज, स्थानक बनवा रहे हैं तो उस काम के लिए माँगना गलत नहीं है, अन्यथा माँगना और मरना एक समान होता है।

मर जाऊँ माँगूँ नहीं, अपने तन के काज।

परहित कारण माँगते, मोहि न आवे लाज।।

बडेर साहब अमर जैन रिलीफ सोसायटी के लिए माँगते, दया के कार्यों के लिए माँगते। हित शिक्षा के दोहे में कहा भी है-

माँगन मरण समान है, मत कोई माँगो भीख।

माँगन से मरना भला, यही सदगुरु की सीख।।

आप थोड़ा विचार तो करिये-जीव और अजीव का संयोग ही संसार है। मरने वाले को अमर मानना, मिटने वाले को अमिट मानना, अनित्य को नित्य मानना और परिवर्तनशील को अपरिवर्तनशील मानते रहना ही संसार में संसरण का प्रमुख कारण है। यह तो उसकी मिथ्या मान्यता है कि मुझे जड़ से सुख मिलेगा, सत्ता से स्नेह प्राप्त होगा, पैसे से प्रेम मिलेगा। आदमी गलत धारणा से परिग्रह-संग्रह करता है, दूसरों के बल से सहयोग की अपेक्षा करता है और स्वयं प्राप्त बल का

दुरुपयोग करता है। तो कहना होगा-यह पथ का अन्तिम लक्ष्य नहीं हो सकता।

पथ का अन्तिम लक्ष्य नहीं है,  
सिंहासन चढ़ते जाना।  
सब समाज को लिए साथ में,  
आगे है बढ़ते जाना।  
इतना आगे, इतना आगे,  
जिसका कोई छोर नहीं।  
जहाँ पूर्णता मर्यादा हो,  
सीमाओं की डोर नहीं।  
सभी दिशाएँ मिल जाती हैं,  
उस अनन्त नभ को पाना।।

यह कविता भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयीजी की है। हमें आगे बढ़ना है, इसलिये अचानक कविता स्मृति-पटल पर आ गई।

आप भाग्यशाली हैं क्यों? तो आपको आर्य क्षेत्र मिला, जोधपुर जैसी नगरी में जहाँ सन्त-सतीवृन्द के दर्शन-वन्दन का निरन्तर सौभाग्य मिलता है, अतिथि संविभाग का लाभ भी प्राप्त होता है तो मानकर चलिए यह आपकी पुण्यवानी है। अब रुकने-ठहरने के लिए समय नहीं। हम और आप पुरुषार्थ करें, परिपूर्ण पुरुषार्थ करें और लक्ष्य पर दृष्टि रखते हुए आगे बढ़ें।

लक्ष्य कैसा हो? शुद्ध लक्ष्य है-अक्रिय, अयोगी, अलेश्यी, अनाहारक होना। याद रखें-निज स्वरूप में अचलता का बोध ही ज्ञान है। जो जड़ से जुड़े हैं उनके लिए क्रिया है, योग है, लेश्या है, आहार है। इनकी विवशता से प्रवृत्ति करनी पड़ती है।

दो मार्ग हैं। एक है-अपवाद मार्ग और दूसरा है उत्सर्ग मार्ग। आपने देखा होगा-नदी पर जहाँ भी पुल बनाते हैं, सड़क के पास नीचे से एक रास्ता निकाला जाता है। उस, बनाए गए रास्ते पर वाहन चलते हैं। कारण विशेष की स्थिति में, जब तक पुल पूरा नहीं बन जाता, नीचे बनाए गए रास्ते से वाहन निकालने पड़ते हैं। यह अपवाद मार्ग है।

साधु को सामान्यतः चिकित्सा नहीं करवानी, पर रोग है और रोग अधिक न बढ़ जाय, इसलिए चिकित्सा करवानी पड़ती है यह भी अपवाद मार्ग ही है। साधु छः कारणों से आहार करता है। क्षुधा की शान्ति के लिए, बड़ों की वैयावृत्य के लिए, ईर्या-समिति की पालना के लिए, संयम-रक्षण के लिए, प्राणों को धारण करने के लिए और धर्म के चिन्तन के लिए। क्षुधा है तो आहार करना ही होता है। नहीं तो फिर, “भूखे पेट भजन न होय गोपाला, यह लो कण्ठी-यह लो माला।”

हाँ, तो अपनी बात चल रही थी कि निज स्वरूप में अचलता का बोध ही ज्ञान है। वह ज्ञान कैसे होगा? क्रिया को क्रिया से देखा नहीं जा सकता। क्रिया को क्रिया से अतीत ज्ञान सत्ता से देखा जाता है। यह हाथ कपड़े को उठा रहा है। हाथ उसे नहीं देख सकता, उसे आँखों से देखा जाता है। ज्ञानेन्द्रिय की क्रिया भी मन के द्वारा देखी जाती है। आपके सामने से कोई निकल गया, लेकिन आपने देखा नहीं। क्यों नहीं देखा? तो मन कहीं ओर था। मन की क्रिया बुद्धि के द्वारा देखी जाती है। ध्यान करते-करते मन न जाने कहाँ-कहाँ भटक रहा है? मन का दौर-दौरा चलता ही रहता है। ध्यान करते-करते दिल्ली का कुतुबमीनार, आगरे का ताजमहल और न जाने मन कहाँ-कहाँ के दृश्य देखता है। मन भटक सकता है, लेकिन बुद्धि उसे वापस अपनी जगह लाती है। बुद्धि मन को कहती है-भटक मत। मतलब क्या? मन भटका तो बुद्धि ने देखा। बुद्धि का क्रिया में, निज रूप में अवस्थित होना ही परम पुरुषार्थ है। बुद्धि में समता नहीं तो राग-द्वेष पनपता है। कवि ने ठीक ही कहा-

मूल दुःखों का राग-द्वेष है, कर्म बीज यह कहलाता।  
ग्रन्थि इसकी गूढ़ व कर्कश, तोड़न जोर बहुत आता।।  
भाव विशुद्धि निर्मल धारा, गुण श्रेणी चढ़ते जाना।  
आगे है बढ़ते जाना।।

सिर का मुण्डन, श्वेत वस्त्र धर, गुरुचरणों दीक्षा पाना।  
पथ मुक्ति का मोह नाश हित, आगे है बढ़ते जाना।।

आगे बढ़ने के लिए सब जीवों पर समता हो। वही समता पात्रों की भिन्नता से प्रमोद, करुणा, माध्यस्थ भाव आदि से परिणत होती है। गुणीजनों को देखकर समता प्रमोद भाव में विकसित होती है। पंच परमेष्ठी गुणीजन हैं। अरिहन्त-सिद्ध देव हैं तो आचार्य, उपाध्याय और साधु पूजनीय-वन्दनीय हैं। श्रावकों में भी जो क्रियावान हैं उन्हें देखकर प्रमोद आना चाहिए। गुणियों को देखकर प्रमोद और दुःखियों को देखकर करुणा की भावना आनी चाहिए।

अपना विषय चल रहा है-निज विवेक का अनादर। अनादृत ज्ञान ही अज्ञान है। गलत प्रवृत्ति के प्रति उदासीनता और सही प्रवृत्ति में आत्मीयता होने पर सुधार की सम्भावना है। सुधार की सम्भावना न भी हो तो भी हितभावना जरूर रखें। आचार्य विद्यासागरजी

महाराज ने मूक माटी में बहुत अच्छा चित्रण किया-हिंसा की हिंसा करना ही अहिंसा की पूजा है, प्रशंसा है और हिंसक की हिंसा या पूजा अहिंसा की हत्या है, नृशंसा है।

घृणा पाप से हो, पापी से नहीं। ऐसा बोलना सरल है, किन्तु जीवन में अपनाने से जीव का उत्थान सम्भव है। घृणा और द्वेष से किसी का सुधार नहीं हो सकता।

आप ज्ञान-क्रिया के भेदविज्ञान को जानें, समझें। जो मिला है उसे पराया समझकर सदुपयोग करें। बल है तो सेवा करें। तन-मन-धन सबका उपयोग दान है। याद रखें-स्थायी प्रसन्नता वही पाता है जो संसार की ओर से आने वाली सभी प्रसन्नताओं का अन्त कर देता है।



### साधक मोहनमुनिजी म.सा.

श्री मन्मोहनचन्द बाफ्ना

(तर्ज :: देख तेरे संसार की हालत....)

रत्नसंघ की फुलवारी में, मोहनमुनि गुणखान,

इनकी साधना बड़ी महान्।

क्रोध न करते, मान न करते,

धरते प्रभु का ध्यान, इनकी साधना बड़ी महान्॥

रतनचन्द के रतन कहाये,

भुसावल में मुनि प्रकटाये।

जतनबाई की कोख से आये,

गौरव धोका कुल का बढ़ाये।

आत्म-साधना में मुनि महान्,

पा हीरा गणी से ज्ञान।

इनकी साधना बड़ी महान्॥

सत्य अहिंसा धर्म अपनाके,

स्वाध्याय का संबल पाके।

भरापूरा परिवार त्याग के,

संयम पथ में मन को रमाके।

हीरा पूज्य गुरुवर पाये,

खिल गया मन उद्यान

इनकी साधना बड़ी महान्॥

त्याग तपस्या साधक मुनि की,

गणी सेवा में मन हरसाया।

बेला-तेला से जीवन साधा,

शुद्ध आराधक बन के छाया।

आनन्द मंगल का अनुभव करते,

कर आत्म उत्थान।

इनकी साधना बड़ी महान्॥

क्रिया उद्धारक भूमि में आये,

तत्त्वचिन्तक प्रमोद को पाये।

वृद्ध अवस्था मन सशक्त था,

पच्चकखाणो को मन से ध्याये।

संधारा ले गुरु आपने,

किया मुक्ति पथ प्रस्थान।

इनकी साधना बड़ी महान्॥

-प्रमोद दाल मिल, कानपुर (उत्तरप्रदेश)

## वर्णमाला में भावी आचार्यश्री

श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. द्वारा महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी, भावी आचार्य श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के 48वें संयम दिवस 15 मई, 2022 को महावीर भवन, किरण पथ, मानसरोवर-जयपुर में फरमाए गए प्रवचन का संकलन श्री गजेन्द्र कुमार जी जैन, जयपुर के द्वारा किया गया। -सम्पादक

समस्याओं के चौराहे पर खड़े विश्व को समाधान प्रदान करने वाले अनन्त-अनन्त उपकारी तीर्थेश प्रभु महावीर को भावपूर्वक वन्दन-नमन। जिनके आचरण में आगम की आभा है, जिनके प्रवचन में निर्ग्रन्थ प्रवचन की प्रभा है, जिनके शासन में सुधर्मा की शोभा है, ऐसे परमाराध्य, परम पूज्य, आचार्य भगवन्त एवं स्वाध्याय ही जिनका श्वास है, वैराग्य ही जिनका विश्वास है, समझ ही जिनकी सुवास है और मुक्ति पाना ही जिनका प्रयास है, ऐसे अनन्त-अनन्त उपकारी पूज्य भावी आचार्य भगवन्त, संयम वृत्ति और संयमी प्रवृत्तियों के स्वामी बनने वाले रत्नाधिक सन्त-मुनिराजों के श्री चरणों में भाव-भरा वन्दन-नमन।

धर्मप्रेमी सज्जनों!

आज का दिवस उस त्याग-मूर्ति के नमन का दिवस है जिन्होंने वैराग्य भाव के साथ संसार को त्यागा है। त्याग बाह्य होता है वैराग्य आन्तरिक। विचारों में पापों से विरक्त होना वैराग्य है और व्यवहार में पापों से बचे रहना त्याग है। इस प्रकार वैराग्य विचारों में जन्म लेता है तथा आचार में त्याग बनकर ढलता है। वैराग्य अनुभूति का विषय है बाहर से दिखता नहीं, मगर त्याग बाहर में दिखता है। वैसे ही जैसे-फूल दिखते हैं, मगर सुगन्ध नहीं, ट्यूब दिखती है मगर उसमें प्रवाहित विद्युत ऊर्जा नहीं, फ्रीज में रहे पदार्थ दिखते हैं मगर ठण्डक नहीं। बिना वैराग्य का त्याग मात्र दिखावे का होता है वैसे ही जैसे-बिना सुगन्ध का फूल, बिना मशीनरी का कम्प्यूटर। त्याग से वैराग्य तथा वैराग्य से त्याग बढ़ता है। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं, एक-दूसरे से पूर्ण होते हैं। जैसे-विद्या से विनय बढ़ता है तथा विनय से विद्या बढ़ती है। दूसरी तरफ अगर जीवन में वैराग्य है मगर

त्याग नहीं तो वहाँ साधुत्व गौरवान्वित नहीं होता। इसलिए कहा-आज का दिवस उस त्यागमूर्ति के नमन का दिवस है जिन्होंने वैराग्य-भाव के साथ संसार त्यागा है। आज का यह दिवस उस साधक का दिवस है जिस साधक ने समर्पण की स्याही से सुसंवेदना की कलम से समय के पटल पर अभिनव लेख लिखा है।

आज का दिवस उस अमर व्यक्तित्व का दिवस है जिसने अपने व्यक्तित्व को चमकाने की बजाय, अपने आपको व्यक्तियों से जोड़ने के बजाय गुरु एवं प्रभु-वचनों से जोड़ा तथा अपनी शरण में आने वाले को गुरु हीरा से जोड़ा, ऐसे व्यक्तित्व के धनी को नमन करने का आज पावन दिवस है।

आज का यह मंगलमय दिवस भावी आचार्य के रूप में प्रतिष्ठापित उन सन्तप्रवर का है जिन्होंने सेवा के क्षेत्र में, स्वाध्याय के क्षेत्र में, समर्पण के क्षेत्र में एक नवीन पहचान बनाई है।

आज का यह दिवस उस साधक धायमाता को धन्यवाद ज्ञापित करने का दिवस है, जिन्होंने संघ में सारणा-वारणा-धारणा-विचारणा-गवेषणा कर अपने आपको धन्यातिधन्य बना लिया।

आज हम एक ऐसी पावन आत्मा की चर्चा करने जा रहे हैं जिनकी चर्चा बोलती है, आचरण बोलता है, जिनकी जुबान कम एवं जीवन अधिक बोलता है। आज का यह दिवस उस साधक का दिवस है, जिन्होंने संयम-जीवन की वर्णमाला से मुझे परिचित कराया। हम उस साधक के जीवन को वर्णमाला के अक्षरों के माध्यम से उनके गुणों का अवलोकन करें, गुणों का संगान करें।

बन्धुओं! स्कूल में, विद्यालय में प्रवेश के पश्चात् सर्वप्रथम बारहखड़ी, वर्णमाला का प्रारम्भिक ज्ञान दिया जाता है, वर्णमाला के अक्षरों से ही शब्द बनता है, शब्द से ही वाक्य बनता है, वाक्य से अनुच्छेद और अनुच्छेद से निबन्ध पूर्ण होता है। कहने का अभिप्राय है पूर्ण निबन्ध में वर्णमाला का अहम् योगदान एवं स्थान होता है।

वर्णमाला का सर्वप्रथम वर्ण है-

**क**-कार्य कुशलता। भावी आचार्य भगवन्त प्रत्येक कार्य में कुशल हैं। कार्यकुशलता उनका अद्भुत गुण है। प्रत्येक कार्य चाहे वह संयम-जीवन के बहिरंग हो अथवा अन्तरंग हो, सबमें वे कुशल हैं। बहिरंग में प्रार्थना, प्रवचन, वाचना, जिज्ञासा-समाधान, पढ़ना-पढ़ाना इत्यादि कार्य आते हैं। संयमी जीवन के अन्तरंग कार्य में-गोचरी, पानी, परठना, प्रतिलेखना, सिलाई, धुलाई, रंगाई अथवा भलाई करने का कार्य आते हैं। उनको सभी में पूर्ण दक्षता, पूर्ण कुशलता हासिल है। भावी आचार्य भगवन्त कार्य को कभी भी काम समझकर नहीं करते, अपितु कल्याण का कारक, कल्याण का हेतु समझकर करते हैं, इसी वजह से उनके कार्य करने में थकान नहीं मुस्कान रहती है।

जहाँ कार्य को कामचलाऊ समझकर किया जाता है-वह नौकरी है। जो कर्तव्य समझकर करता है, उसका कल्याण होता है और कल्याण समझकर करता है उस आत्मा को 'कृतकृत्य' अवस्था संप्राप्त हो जाती है। भावी आचार्य भगवन्त कार्य को कभी भी कामचलाऊ समझकर नहीं अपितु कर्तव्य और कल्याण का मार्ग समझकर करते हैं, इसीलिए भावी आचार्य भगवन्त कार्य करते-करते और अधिक ऊर्जावान् बन जाते हैं। भावी आचार्य भगवन्त का नारा है-कार्य को भार नहीं, भाग्य समझें। कार्य को कर्तव्य समझें, करणीय समझें, कृतकृत्य होने का करिश्मा समझें।

वर्णमाला का दूसरा अक्षर-

**ख**-ख से भावी आचार्य भगवन्त खरे हैं, खरी

बात कहते हैं, खरा काम करते हैं और किसी से खारे नहीं बनते हैं। भावी आचार्य भगवन्त मन से खरे हैं, वचन से खरी बात कहते हैं और व्यवहार में खरा काम करते हैं, इसीलिए भावी आचार्य भगवन्त किसी को भी 'अखरते' नहीं हैं।

खरी बात वही कह सकता है जो स्वयं मन से खरा होता है, हृदय से निष्कपट होता है अन्यथा वर्तमान का जमाना सुगर कोटेड है। भावी आचार्य भगवन्त व्यवहार में खरा काम करते हैं अर्थात् जिसे करते समय डरना पड़े और करने के बाद रोना पड़े, ऐसे कार्यों से स्वयं को दूर रखते हैं। स्वयं को भय लगे और दूसरों/औरों को सन्देह हो ऐसे कार्य भावी आचार्य भगवन्त नहीं करते, इसीलिए व्यवहार में खरा काम करते हैं।

वर्णमाला का तीसरा वर्ण-

**ग**-गति में तेज, गवेषणा में सतर्क और गम्भीरता में सागर के समान गहन हळि-भावी आचार्य भगवन्त। भावी आचार्य भगवन्त की गति इस अवस्था में भी अनुमोदनीय है, सामान्य व्यक्ति उनके कदम-ताल के साथ अपने कदम मिलाकर चलने में असमर्थता अनुभव करता है। साथ ही प्रत्येक कार्य करने में भी भावी आचार्य भगवन्त की गति तेज है, स्फूर्तिजनक है, मगर उतावलापन नहीं है। उतावलापन अधूरेपन की जननी है। स्फूर्ति सदगुण है, उतावलापन अवगुण है। भावी आचार्य देव गति में तेज होने के साथ-साथ गवेषणा में सतर्क हैं। आज हम 48वाँ संयम दिवस मना रहे हैं भावी आचार्य भगवन्त के ही मुखारविन्द से सुना-दीक्षा के तीसरे साल में ही गोचरी की व्यवस्था छोटे लक्ष्मीचन्दजी म.सा. ने सम्भलाई।

देखिये लगभग पिछले 45 वर्ष के लम्बे अन्तराल के दरम्यान भावी आचार्य भगवन्त गोचरी की गवेषणा में संलग्न हैं, सतर्क हैं। हम देखते हैं थोड़ा सा शिष्य समुदाय या छोटी सी जिम्मेदारी मिल जाने पर साधक गोचरी, परठने आदि के प्रमुख कार्य से स्वयं को मुक्त कर लेता है, पर हमारे भावी आचार्य भगवन्त अभी भी

नियमित रूप से गोचरी आदि प्रत्येक सेवा में सन्नद्ध हैं। देख-देखकर आश्चर्य होता है कि भक्तों की भावना का समादर कर सन्तों के संयमानुकूल आहार लाने के साथ-साथ पात्रों की सेटिंग इस तरह से करना कि कहीं कोई विराधना का कारण न हो। गवेषणा में सतर्कता के अनेक प्रसङ्ग हैं जिनमें भावी आचार्य श्री ने अपनी सूक्ष्मता का परिचय देते हुए सन्त-चर्या को सुरक्षित रखा।

एक गाँव का प्रसङ्ग है-भावी आचार्य श्री गोचरी पधारे। वहाँ जयपुर के एक श्रावक ने आगरे के पेठे किसी एक घर में सन्तों के गोचरी जाने से पहले बहराने के लिए रख दिये। भावी आचार्यदेव उस समय मुनि पर्याय में गोचरी पधारे, अनेक घरों को फरसते हुए उसी घर में पधारे जहाँ पूर्व से ही आगरे के पेठे रख दिये गये थे। भाई भावना भाने लगा, आग्रह करने लगा। उसी समय भावी आचार्य श्री ने भाई की भावना को भाँपते हुए तुरन्त सक्रियता के साथ आगरे के पेठे जिस स्टील के टिफिन में रखे थे, उस पर नज़र दौड़ाई तो उस पर जयपुरवासी का नाम अंकित था, उसी समय भावी आचार्य श्री ने उस वस्तु को छोड़ने के साथ-साथ जयपुरवासी को सचेत करते हुए संयम-जीवन में सहयोगी बनने की सचोट प्रेरणा की और पुनः इस प्रकार की गलती नहीं दोहराने हेतु कटिबद्ध किया। गवेषणा में सतर्कता के बिना इस तरह की निर्दोष वृत्ति आहार-चर्या में सम्भव नहीं।

गम्भीरता में गहन इतने कि थाह न मिले, मर्यादित इतने कि मर्यादा स्वयं आपसे उपमित हो। गम्भीरता का अर्थ होता है-अपने दुःख को नहीं कहना और दूसरों के दोष को नहीं बताना। हमें याद नहीं आता कि भावी आचार्य श्री ने अपने सामान्य दुःखों की कभी चर्चा की हो, छोटे-मोटे दुःख सहने में भावी आचार्य श्री की धीरता, वीरता, गम्भीरता जबरदस्त है। दूसरों के दोष कहने की बात तो सम्भव ही नहीं। संघ की धायमाता होने के कारण सन्त-सती, श्रावक-श्राविका रूप चतुर्विध संघ की न्यूनताएँ ध्यान में होते हुए भी कभी भी सार्वजनिक रूप से उनकी कोई चर्चा नहीं, कारण कि वे

गम्भीरता में सागर के समान हैं।

वर्णमाला का चौथा वर्ण-

घ-जीवन घड़ने में कुशल और घटनाओं में अपना मन्तव्य निष्पक्ष रूप से रखने में निपुण हैं-भावी आचार्यदेव। जीवन-निर्माण करने में दो तत्त्वों की आवश्यकता होती है-1. आत्मीयता और 2. अनुशासन।

यदि पिता के द्वारा पुत्र को, गुरु के द्वारा शिष्य को सिर्फ प्यार, वात्सल्य, आत्मीयता ही मिलती रहे तो पुत्र और शिष्य को उच्छृङ्खल बनते देर नहीं लगती और सिर्फ अनुशासन ही अनुशासन मिले तो पुत्र और शिष्य कुण्ठाग्रस्त हुए बिना नहीं रह सकते। इसलिए अभिभावकगण का यह उत्तरदायित्व होता है कि पुत्र एवं शिष्य के जीवन-निर्माण में आत्मीयता और अनुशासन दोनों का समन्वय करें, सन्तुलन करें, जिससे उच्छृङ्खलता के स्थान पर स्वतन्त्रता और कुण्ठाग्रस्तता के स्थान पर उत्साहपूर्ण जीवन जीने का अन्दाज बन सके, लक्ष्य बन सके। हमने देखा, हमने पाया, हमने अनुभव किया-भावी आचार्यश्री में पिता के समान कड़क अनुशासन है तो माता के समान मधुर वात्सल्य एवं ममता का निर्झर बहता है। गोचरी करवाने का वक्त हो, रात्रि में शयन करने (छोटे सन्त) के बाद सम्भालने का समय हो, अस्वस्थ होने पर औषध-उपचार करवाना हो उस समय भावी आचार्य श्री बिल्कुल मक्खन के समान कोमल, माँ के समान मधुर और काँच के समान नाजुक बन जाते हैं और वहीं संयम चर्या की बात हो, सामाचारी पालना की सौगात हो, व्यवहार-रक्षण की करामात हो उस समय मिश्री के समान कड़क, पिता के अनुरूप अनुशासन प्रिय बन जाते हैं। मेरे जीवन को घड़ने में भावी आचार्यश्री का ही अहम् योगदान है। मेरे धार्मिक जीवन के आदि सूत्रधार हैं-भावी आचार्यश्री, जिन्होंने मेरी अंगुली पकड़कर मुझे संयम के मार्ग पर चलना सिखाया और आज भी मेरा हाथ थामे हुए हैं। भावी आचार्यश्री जीवन को घड़ने में

कुशल हैं। उनकी ओर से जीवन निर्माण में कोई कोर कसर नहीं रही, जो कमी है, जो कमियाँ रही हैं वे मेरी निजी भूल के कारण हैं, पर भावी आचार्यश्री तो घड़ने में अत्यन्त कुशल हैं।

जीवन-व्यवहार के कार्य निष्पादित करने में अनेक प्रकार की घटना/दुर्घटना घटित हो जाती है। घटना घटित होना पार्ट ऑफ लाइफ है, मगर घटनाओं में समभाव, सन्तुलन और समझ टिकाये रखना यह आर्ट ऑफ लाइफ है। भावी आचार्य भगवन्त के जीवन में मैंने देखा-घटनाओं के घटित होने पर, समस्याओं के उत्पन्न होने पर सम्यक् समाधान कैसे सुझाना जिससे सबको सन्तोष हो सके, समाधान हो सके, इसमें आप कुशल हैं। मैं एक घटना का जिक्र आपके सामने करना चाहूँगा।

प्रसङ्ग है-2013 का। मालपुरा गाँव के आस-पास नवदीक्षित श्री अभयमुनिजी के रीढ़ की हड्डी का फ्रेक्चर होने पर उपचार हेतु संघ हित-चिन्तकों का विचार-चिन्तन चला। मन्थन होने के पश्चात् गुरुदेव के पास (उस समय गुरुदेव सुमेरगंजमण्डी विराजमान थे) समाचार आए कि अभयमुनिजी की स्वास्थ्य की इस परिस्थिति में श्रावक वर्ग इन्हें पुनः गृहस्थ जीवन में जाने हेतु विचार कर रहा है। गुरुदेव असमञ्जस में थे कि क्या किया जाय ? उसी समय भावी आचार्य श्री ने पूज्य गुरुदेव को सविनय निवेदन किया-भगवन्! आपका निर्णय सर्वोपरि है, पर मेरा यह भाव है-जिस सन्त को हमने जीवनपर्यन्त के लिए श्रमण दीक्षा प्रदान की, उसे परिस्थिति (स्वास्थ्य के कारण) प्रतिकूल होने पर इस तरह असंयम में भेजना मन को नहीं गमता, शासन की शोभा का कारण नहीं बनता। अभयमुनिजी की जीवन पर्यन्त सेवा की जिम्मेदारी हमारी है पर असंयम की बात बिल्कुल उचित नहीं। बन्धुओं! उसी समय पूज्य गुरुदेव के भीतर में, चिन्तन में नयी ऊर्जा का सञ्चार हुआ और भगवन्त ने स्पष्ट शब्दों में श्रावकों को अपना मन्तव्य, अपना निर्णय देते हुए फरमाया-जीवनभर सेवा की जिम्मेदारी मेरी होगी, पर किसी भी कारण से मैं सन्त को असंयम में ले जाने की अनुमति नहीं दूँगा। इस प्रकार

भावी आचार्यश्री ने समय-समय पर अपनी कुशल प्रज्ञा से जनहित में, जिनशासन हित में अपना मन्तव्य निष्पक्ष रूप से रखकर सम्यक् समाधान सुझाया, जिससे प्रयोगमति सम्पदा का परिचय संघ को मिलता रहा।

वर्णमाला के क, ख, ग, घ का वर्णन होने के पश्चात् क वर्ग का पाँचवाँ अक्षर अपूर्ण, असक्षम, अधूरा होने से हम च वर्ग के प्रथम अक्षर का चिन्तन करते हैं-

च-चारित्रवान्, चतुर। भावी आचार्य श्री का आज हम 48वाँ संयम दिवस मना रहे हैं। आगम वचन है-जाए सद्भाए णिक्खंतो तमेव अणुपालिया। जिस श्रद्धा के साथ संयम स्वीकार किया उसी श्रद्धा और संयम के प्रति समर्पण के भावों के साथ संयम-जीवन का अनुपालन करें। हम देखें-भावी आचार्य भगवन्त के संयम-जीवन की प्रत्येक चर्या को, प्रत्येक क्रिया को जिसमें आज भी नवीनता है, नवीन उत्साह, उमंग, उल्लास है, चारित्रपालन में दृढ़ता है, आपकी चारित्र रूपी चादर इतनी धवल है कि उसमें अतिक्रम-व्यतिक्रम-अतिचार-अनाचार रूप दोषों का दाग नहीं है। पडिक्कमामि-निंदामि-गरिहामि-अप्पाणं वोसिरामि रूप दोष निकन्दन के चार पायों में हमेशा संलग्न बने रहते हैं। यही आपकी चारित्र निष्ठा है। तीनों योगों की दुष्प्रवृत्ति को रोककर दोषों का वर्जन, गुणों में रमण करना यही आपके चारित्र की प्रतिष्ठा है। आपके चारित्रिक जीवन के विश्वास के प्रति जनमानस में गहरी छाप है, सन्देह और संशय का कोई स्थान नहीं, कारण कि आप चारित्र का पालन औरों को दिखाने के लिए नहीं अपितु आत्मा को तिराने के लिए करते हैं।

जो चारित्र मात्र काया से होता है वह दुनिया को दिखाने का होता है। जो चारित्र मात्र वाणी से अभिव्यक्त होता है वह दुनिया को लुभाने का होता है। जो चारित्र मात्र मन से होता है वह व्यक्तित्व को सजाने का होता है और जो चारित्र आत्मा से प्रकट होता है वह भवों को घटाने वाला होता है। भावी आचार्य भगवन्त चारित्र का

पालन आत्मा से आत्मा के लिए आत्मा को तिराने के लिए करते हैं। चारित्रवान् होने के साथ-साथ भावी आचार्य भगवन्त चातुर्य के गुण से भी सम्पन्न हैं। चतुर होना अच्छा है चालाक बनना श्रेष्ठ नहीं। चतुर व्यक्ति हमेशा चौकन्ना रहता है, हमेशा सजग रहता है, हमेशा भारण्ड पक्षी के समान अप्रमत्त रहता है। चतुर व्यक्ति का सबसे श्रेष्ठ गुण होता है-वह चाल चलता नहीं और चाल में फँसता नहीं। चालाक बनता नहीं, पर सामने वाले की चाल को समझ जरूर लेता है। भावी आचार्यदेव भी चाल चलते नहीं, किसी की चाल में फँसते नहीं, चालाक बनने का कदापि प्रयास करते नहीं, पर सामने वाले की चाल को जरूर भाँप लेते हैं। हम भाग्यशाली हैं, सौभाग्यशाली हैं कि हमें ऐसे गुण सम्पन्न भावी आचार्यश्री मिले हैं। हम इनके गुणों की भक्ति करें इनकी महिमा का बखान करें और अपने अन्तर में आनन्द का अनुभव करें।

वर्णमाला का सातवाँ वर्ण-

**छ**-छल-छद्म से रहित, छह काया के रक्षक, अपने-आपको छोटा समझकर चलने वाले हैं-भावी आचार्य भगवन्त। भावी आचार्य भगवन्त के जीवन से प्रस्फुटित होने वाला एक सूत्र है-रहो निश्चल, बनो निश्चल। जो दूसरों का छलता है वह नरक में उछलता है। छल-कपट का भाव साधक-जीवन का प्रदूषण है, छल युक्त व्यवहार जीव को सरल नहीं बनने देता। सरलता के बिना धर्म नहीं। अतः साधक-जीवन की बुनियाद है-सरलता, छल-छद्म से रहितता। भावी आचार्यदेव का जीवन सरलता के गुणों से ओत-प्रोत है।

छह काया के रक्षक होना संयम-जीवन का द्रव्य प्राण है और अपने आपको छोटा समझकर चलना संयम-जीवन का भाव प्राण है। भावी आचार्यदेव द्रव्य और भाव दोनों ही प्राणों से अनुप्राणित हैं। हर कार्य में अपने आपको छोटा समझ, स्वयं को गौण कर, हर कार्य में गुरु हीरा को प्रमुखता देना यह आपके जीवन का वैशिष्ट्य है। अभी-अभी का ताजा प्रसङ्ग देखिये-जो

हमारी आस्था, श्रद्धा को तरोताजा कर देता है।

प्रसङ्ग है-14 फरवरी का पीपाड़ के सुश्रावक श्री मोतीलालजी कटारिया अस्वस्थ चल रहे थे। परिवार वालों ने मांगलिक फरमाने हेतु निवेदन किया-गुरुदेव ने भावी आचार्य श्री को मांगलिक, प्रत्याख्यान हेतु संकेत फरमाया। गुरुदेव के इंगियागार सम्पन्न भावी आचार्यश्री ने तुरन्त हाथ में झोली ले कटारिया जी के घर की ओर प्रस्थान किया। शारीरिक लक्षण देखकर कहा-संवर रूप साधन के माध्यम से श्रावक यदि इन्हें गुरुदेव के श्री चरणों में ला सके तो गुरुदेव के मुखारविन्द से संथारा हो सकता है। आप देखिये यहाँ भावी आचार्य श्री की लघुता, उनके सामने अवसर था-संथारा पच्चक्खाने का, फिर भी अपने-आपको गौण करके गुरु हीरा को प्रमुखता देकर उन्हें गुरु हीरा के मुखारविन्द से संयम और संथारा यानी दूसरा एवं तीसरा मनोरथ साकार करने का अवसर मिला।

हमने देखा-संवत्सरी महापर्व 11 सितम्बर, 2021 को जब भावी आचार्य पद की घोषणा पूज्य गुरुदेव के मुखारविन्द से हुई। उसी समय भावी आचार्य श्री खड़े हुए और भरी सभा के सम्मुख गुरुदेव को निवेदन किया-भगवन्! गुरु हस्ती ने संयम प्रदान कर संसार का भार उतार दिया और आज आपश्री ने मेरे कन्धों पर चतुर्विध संघ का भार दे दिया। मैं इस उत्तरदायित्व को आपकी आज्ञा मानकर शिरोधार्य करता हूँ। साथ ही भविष्य में आपको इस निर्णय में कोई परिवर्तन-परिवर्धन करना हो तो मेरी ओर से आप सहर्ष मुक्त हैं। धन्य हो गए हमारे श्रोत्रेन्द्रिय (रूपी कर्ण) जब इस प्रकार के निर्लिप्त भावों से भरे उद्गार सुने। धन्य हो गए हमारे नेत्र जब ऐसे नज़ारे देखने को मिले। बन्धुओं! ऐसे उद्गार-परिवर्तन परिवर्धन करने का---कब निकलते हैं जब व्यक्ति अपने आपको गौण करता है, अपने आपको छोटा समझने लगता है।

वर्णमाला के क्रम को आगे बढ़ाते हुए अगले क्रम में-

ज-जागृति, जिम्मेदार। भावी आचार्य भगवन्त जागृत भी हैं तो जिम्मेदार भी हैं। भावी आचार्य श्री ने एक बार एक प्रसङ्ग सुनाया-दीक्षा के कुछ समय बाद की बात है-सायंकाल प्रतिक्रमण के पश्चात् भावी आचार्यश्री (उस समय नवदीक्षित मुनि श्री) जल्दी सो गए। गुरु हस्ती जो संयम के सजग प्रहरी थे, पधारे और भावी आचार्यश्री को फरमाने लगे-संयम सोने के लिए नहीं, पापमल धोने के लिए मिला है। आप युवा हैं, तरुण हैं, रात्रि के पहले प्रहर में नहीं सोना, यही हमारी आगम मर्यादा है और उसी समय भावी आचार्यश्री गुरु हस्ती के चरणों में नतमस्तक हो संकल्प करते हैं-स्वस्थ रहते रात्रि के प्रथम प्रहर में शयन नहीं करूँगा।

श्रावकों के होने पर, चर्चा-वार्ता में, प्रथम प्रहर में जगना सामान्य बात है, जब कोई नहीं, उस समय भी अपने संकल्प में दृढ़ रहना यह आपकी जागृति की पहचान है। रात्रि में पहले प्रहर में सोना नहीं और रात के अन्तिम प्रहर रहते जग जाना यह आपकी साधकता की पहचान है। जिम्मेदार वही होता है जिसे जगाने के लिए अलार्म की जरूरत नहीं होती, उसे जिम्मेदारियाँ ही जगा देती हैं। हर कार्य को समय के साथ पूर्ण करना यही आपके जिम्मेदार होने का प्रबल सबूत है, प्रबल प्रमाण

है। भावी आचार्यश्री का कथन है-

सोना, पन्ना आदि जड़ की खूब करते हैं चौकीदारी।  
अविनाशी चेतन के प्रति कितनी रखते हैं जिम्मेदारी॥

वर्णमाला के एक-एक वर्ण भावी आचार्य भगवन्त के गुणों का वर्णन करने में परिपूर्ण हैं, पर समय की सीमा है हम समय-सीमा के साथ ही अपनी बात करेंगे। आप सभी श्रावक-श्राविकाओं के द्वारा श्रद्धा और समर्पण अर्पित करने का आज विशेष दिवस है। जयपुर वासियों ने एक आह्वान, एक संकेत, एक प्रेरणा से 480 एकाशन की साधना को लक्ष्याधिक साकार रूप प्रदान किया है। हमारे भावी आचार्यश्री महान् हैं, गुणवान् हैं, ज्ञानवान् हैं, पुण्यवान् हैं। हम अपने भीतर में उनके प्रति, उनके गुणों के प्रति श्रद्धा-भक्ति जगाकर संघ-समर्पित होने का प्रयास करें। वर्णमाला के कुछ वर्णों का वर्णन हो सका, यह तो मात्र एक झँकी है शेष वर्णों का वर्णन करना बाकी है। आप ट्रेलर देखकर ही-  
-पिक्चर कैसी होगी? इसका अनुभव कर लेते हैं। एक चावल देखकर ही अन्य शेष चावल का अनुमान हो जाता है। बस इसी तरह से शेष रहे वर्णों में छुपे हुए गुण-वर्णन का आकलन कर हम भी गुणवान् बनें, एक दिन भगवान् बनें। इसी मंगल-मनीषा के साथ।

48वाँ दीक्षा दिवस

## बड़े गुणवान हैं

श्री धर्मचन्द्र जैन

(महान् अध्यवसायी, भावी आचार्य, परम श्रद्धेय, श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. के 48वें दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में जोधपुर जिले के देवलिया ग्राम में प्रवचन सभा में प्रस्तुत गीतिका।)

तर्ज :: पूज्यवर हीरा जिनशासन की शान हैं  
महेन्द्र गुरुवर, निर्मल संयमवान हैं,  
बड़े गुणवान हैं जी, बड़े गुणवान हैं॥  
माता सोहनी के जाये, लोढ़ा कुल की शान हैं।  
गुरु हस्ती से बोध पाये, प्रतिभा महान हैं॥  
तत्त्व बोध, आगम बोध, सम्यक् त्रिग्यावान हैं॥१॥

धीरता गम्भीरता, समाधि युक्त तप है।  
स्वाध्याय सेवा, गुरु आज्ञा में प्रणत हैं॥  
संयत-विरत-प्रतिहत पच्चक्खाण है॥२॥  
आचार की दृढ़ता, समिति आराधना।  
हीरा गुरुवर प्रति, सेवा निष्ठा भावना॥  
भावी आचार्य श्री को, वन्दन बारम्बार है॥३॥  
शासन की दीप्ति में, सदा ही सजग हैं।  
समाचारी पालन में, तत्परता गजब है॥  
युग-युग जिओ गुरु, यही अरमान है।  
बड़े गुणवान हैं, जी बड़े गुणवान हैं॥४॥

-रजिस्ट्रार- अ.भा.श्री जैन रत्न  
आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

## जैन जीवनशैली की वैज्ञानिकता

महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द

जैन सन्त-परम्परा में निहित स्वास्थ्य-सम्बन्धी चेतना का उल्लेख मुझे प्रासङ्गिक लगता है। हम सब जानते हैं कि आधुनिक इतिहास में सर्जिकल मास्क लगाने की शुरुआत वर्ष 1897 में की गई, जब शल्य चिकित्सकों ने ऑपरेशन के दौरान स्वयं को बैक्टीरिया से सुरक्षित रखने के लिए मास्क का प्रयोग करना शुरू किया। उसके बाद, आज से लगभग एक सौ वर्ष पूर्व, वर्ष 1918-19 में स्पेनिश लू के दौरान सामान्य लोगों ने भी मास्क पहनना शुरू किया। कोविड-19 की महामारी के कारण लगभग ढाई वर्षों से मास्क का उपयोग जीवाणुओं से बचाव के प्रभावी माध्यम के रूप में किया जा रहा है। परन्तु जैनधर्म के प्रवर्तकों ने सदियों पहले ही मास्क की उपयोगिता को समझ लिया था। मुँह और नाक को ढकने से वे हिंसा से बचाव के साथ-साथ शरीर में जीवाणुओं के प्रवेश को भी रोक पाते थे जिससे शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता मजबूत बनी रहती थी। इसलिए आज पूरी मानवता जैनधर्म के प्रवर्तकों के प्रति अपनी श्रद्धा और कृतज्ञता का भाव प्रदर्शित करती है।

इसी प्रकार, जैन सन्तों ने शारीरिक परिश्रम के महत्त्व को रेखांकित करते हुए पैदल भ्रमण करने पर बहुत जोर दिया है। प्रायः देखा गया है कि पैदल भ्रमण और शारीरिक श्रम करने वाले हमारे जैन साधु-सन्त स्वस्थ और दीर्घायु होते हैं। मुझे विश्वास है कि परम्परा में निहित वैज्ञानिकता के आधार पर मानव समाज को स्वस्थ जीवन की जो दिशा सन्तों ने दिखाई है उस पर चलने का प्रयास इस अस्पताल द्वारा किया जाएगा।

जैन परम्परा में पर्यावरण के अनुकूल संयमित और सन्तुलित जीवनशैली अपनाने की शिक्षा दी गई है। वर्तमान समय में सामान्य लोगों की जीवनशैली और

खान-पान का तरीका प्रकृति से दूर होता जा रहा है। हमने देखा है कि जैन साधु और साध्वीगण तथा उनके श्रद्धानिष्ठ अनुयायी सूर्योदय और सूर्यास्त के बीच ही भोजन कर लिया करते हैं। सूर्य ही ऊर्जा का मूलभूत और सर्वश्रेष्ठ स्रोत है। सूर्य की दैनिक गति के अनुसार जीवनशैली को अपनाना स्वस्थ रहने का सुगम उपाय है, यही सीख हमें जैन सन्तों की आदर्श जीवनशैली को देखकर मिलती है। इसका प्रमाण हमें कहीं और जाकर ढूँढ़ने की जरूरत नहीं है। आज यहाँ जितने साधु-साध्वियों का हमें सान्निध्य मिल रहा है, वे सभी हम गृहस्थ लोगों से अधिक स्वस्थ हैं। इस प्रकार जैन समाज के प्रवर्तकों ने हम सबको स्वस्थ रहने के सुगम उपाय बताए हैं। जरूरत उन्हें पालन करने की है। मेरा मानना है कि अस्पतालों में आधुनिक चिकित्सा पद्धति के साथ विज्ञान-सम्मत परम्पराओं का समन्वय स्वस्थ जीवन के लिए और भी सहायक होगा।

जैन शास्त्रों में बीमारी से बचने के लिए भोजन की शुद्धता पर विशेष बल दिया गया है। जैन ग्रन्थ 'ओघ निर्युक्ति' में कहा गया है-

हियाहारा मियाहारा, अप्पाहारा य जे नरा।  
न ते विज्जा तिगिच्छन्ति, अप्पाणं ते तिगिच्छगा।

यानी, वह व्यक्ति जो हितकर और अल्प-आहार करेगा उसको किसी चिकित्सक की जरूरत नहीं होगी, वह स्वयं ही अपना चिकित्सक है।

स्वास्थ्य को सबसे बड़ा सुख माना गया है। सामान्य जनता के बीच यह उक्ति प्रचलित है कि 'पहला सुख नीरोगी काया।' हमारी परम्परा में समस्त विश्व के आरोग्य और कल्याण की कामना की गई है। सदियों से हम प्रार्थना करते आए हैं कि सभी सुखी रहें

और सभी रोगमुक्त रहें—सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे संतु निरामयाः। मुझे प्रसन्नता है कि भगवान महावीर सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल तमाम लोगों को रोगमुक्त रखने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण योगदान देगा।

विश्व कल्याण की दृष्टि से जैनधर्म में चार तरह के दान बताए गए हैं। ये दान हैं—अभयदान, औषधिदान, अन्नदान और ज्ञानदान। मुझे लगता है कि जैन परम्परा में दान का जो महत्त्व है उसके पीछे यह अकाट्य नियम है जिसके अनुसार इस संसार में हम जो कुछ भी देते हैं उसका कई गुना हमें वापस मिलता है। हमारे सत्कर्मों का प्रतिफल कई गुना मिलता है। इस प्रकार, जिन लोगों ने इस अस्पताल के निर्माण हेतु दान किया है उन्होंने तो यह स्वास्थ्य या औषधि दान निस्वार्थ भाव से किया है, परन्तु सत्कर्मों के प्रतिफल नियम के अनुसार यह निश्चित है कि उनके लिए आजीवन स्वास्थ्य सेवाओं के उपलब्ध रहने का मार्ग प्रशस्त हो गया है। वे कभी भी अपने जीवन में औषधि या उपचार की कमी का अनुभव नहीं करेंगे।

इस सन्दर्भ में, अन्नदान या गोचरी के पुण्य से जुड़ा अपना निजी अनुभव मैं आप सबके साथ साझा करना चाहूँगा। शायद वर्ष 1994-95 की बात है जब डॉ. शंकरदयाल शर्मा भारत के राष्ट्रपति थे। आचार्य श्री पद्मसागर सूरेश्वरजी महाराज का राष्ट्रपति से मिलने का समय नियत किया गया। उन दिनों मेरा निवास साउथ एवेन्यू में हुआ करता था। मुझे पहले से ही महाराज जी के सम्पर्क में रहने का सौभाग्य प्राप्त था। संयोग से उनका कार्यक्रम कुछ इस तरह बना कि दादाबाड़ी महारौली से लगभग तीन घण्टे की पदयात्रा के बाद उन्होंने मेरे निवास स्थान में गोचरी ग्रहण करने की कृपा

की और उसके बाद वे राष्ट्रपति भवन गए। मैंने तो महाराज जी और अन्य साधुगणों को गोचरी केवल श्रद्धाभाव से ही समर्पित की थी, परन्तु सन्तों की कृपा और सत्कर्मों के प्रभाव से मैंने अनुभव किया कि आज तक मेरे परिवारजनों को कभी भी खाद्यान्न की कमी का अहसास नहीं करना पड़ा है।

मैं आज के इस शुभ अवसर पर, इस आयोजन के लिए 'महासती मोहन देवी जैन शिक्षण समिति' के सभी सदस्यों को बधाई देता हूँ। अन्त में मैं तीर्थंकरों की स्तुति में रचित लोगस्स पाठ की कुछ पंक्तियाँ दोहराता हूँ और सभी देशवासियों के आरोग्य हेतु तीर्थंकरों की वन्दना करता हूँ—आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहि-वर-मुत्तमं दिंतु। हे प्रभो! हमें आरोग्य प्रदान करें। हे प्रभो! हमें बोधि प्रदान करें। हे प्रभो! हमें उत्तम समाधि प्रदान करें। जय जिनेन्द्र! जय हिन्द!

टिप्पणी—अक्षय तृतीया, 3 मई 2022 को दिल्ली में भगवान महावीर सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल के नवीनीकरण शिलान्यास समारोह में राष्ट्रपति द्वारा प्रदत्त भाषण का अन्तिम भाग। समारोह में उपस्थित डॉ. दिलीप धींग ने बताया कि राष्ट्रपति ने अपने सम्बोधन की शुरुआत भी 'जय जिनेन्द्र' अभिवादन से की थी। आरम्भ में उन्होंने अक्षय तृतीया को प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के वर्षीतप पारणे से जोड़ा। उन्होंने बिहार में चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर की जन्मस्थली और निर्वाणस्थली की यात्राओं का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि उन्हें समय-समय पर सभी सम्प्रदायों के अनेक जैन साधु-साध्वियों का सान्निध्य पाने का सौभाग्य मिला। यह कार्यक्रम स्थानकवासी जैन साध्वी मोहनदेवी के नाम से 1986 में बनी 'महासती मोहनदेवी जैन शिक्षण समिति' द्वारा आयोजित था।

—संकलनकर्ता, श्री सुरेशचन्द्र धींग, बम्बोरा-  
313706, जिला-उदयपुर (राज.)

## मास्क और मुँहपत्ती में अन्तर

(श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. के प्रवचन से संकलित)

■ मास्क शरीर की सुरक्षा के लिए और मुँहपत्ती जीव रक्षा के लिए है। ■ मास्क में एक-दो पट्टे होते हैं, मुँहपत्ती में 8 पट्टे होते हैं। ■ मास्क प्रशासन के लिए, मुँहपत्ती जिनशासन के लिए। ■ मास्क कोरोना (से बचाव) के लिए, मुँहपत्ती करुणा के लिए।

—संकलनकर्ता, गजेन्द्र कुमार जैन, जयपुर (राजस्थान)

## आओ सम्मूर्च्छिम मनुष्य की विराधना को समझें

श्री धर्मचन्द जैन

**जिज्ञासा (1)**—सम्मूर्च्छिम मनुष्य किसे कहते हैं?

**समाधान**—अनन्तज्ञानियों ने केवल ज्ञान के आलोक में 4 गति के जीवों में साधना के आधार पर मनुष्य गति को प्रधान एवं उत्तम गति के रूप में जाना, देखा तथा प्रतिपादित किया। उन्हीं भगवन्तों ने इस गति के जीवों को दो रूपों में प्रतिपादित किया—

1. गर्भ से उत्पन्न होने वाले गर्भज मनुष्य।
2. गर्भज मनुष्यों के अशुचि स्थानों में उत्पन्न होने वाले सम्मूर्च्छिम मनुष्य।

(उत्तराध्ययनसूत्र 36/196 से 200, प्रज्ञापना पद 1, जीवाजीवाभिगम आदि)

**जिज्ञासा (2)**—क्या केवल मनुष्य ही सम्मूर्च्छिम होते हैं?

**समाधान**—नहीं। तिर्यञ्च गति में गर्भज तिर्यञ्चों को छोड़कर शेष सारे तिर्यञ्चों को भी सम्मूर्च्छिम कहा जाता है। तत्त्वार्थ 2/34, 35, 36 में तीन प्रकार के जन्म बताये—(1) नारक और देवों का उपपात जन्म, (2) जरायुज, अण्डज और पोतज सन्नी पञ्चेन्द्रिय-तिर्यञ्च एवं मनुष्यों का गर्भज जन्म, (3) शेष सभी असन्नी तिर्यञ्च और असन्नी मनुष्यों का सम्मूर्च्छिम जन्म।

**जिज्ञासा (3)**—ये सम्मूर्च्छिम जीव कहाँ उत्पन्न होते हैं?

**समाधान**—सूक्ष्म एकेन्द्रिय के जीव सम्पूर्ण लोक में उत्पन्न होते हैं, किन्तु बादर जीव अपनी उत्पत्ति के योग्य सामग्री की प्राप्ति होने पर उन-उन स्थानों पर उत्पन्न होते हैं। प्रज्ञापनासूत्र के द्वितीय स्थान पद में इसका विवेचन देखने को मिलता है। मनुष्यों की उत्पत्ति के स्थान इस प्रकार बतलाये हैं—

कहि णं भंते! मणुस्साणं पज्जत्तापज्जत्तागाणं ठाणा पण्णत्ता ?

गोयमा! अंतो मणुस्सखेत्ते पणयालीसाए जोयणसयसहस्सेसु, अङ्गाइज्जेसु, दीवसमुद्देसु, पण्णरससु, कम्मभूमीसु, तीसाए अकम्मभूमीसु, छप्पण्णाए अंतरदीवेसु, एत्थ णं मणुस्साणं पज्जत्तापज्जत्तागाणं ठाणा पण्णत्ता। उववाएणं लोयस्स असंखिज्जइ भागे, समुग्घाएणं सव्वलोए, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखिज्जइभागे।

अर्थात् हे भगवन्! पर्याप्तक और अपर्याप्तक मनुष्यों के स्थान कौनसे बतलाये हैं?

हे गौतम! 45 लाख योजन प्रमाण मनुष्य क्षेत्र के अन्दर अढ़ाई द्वीप और दो समुद्रों में, 15 कर्मभूमियों में, 30 अकर्मभूमियों में और 56 अन्तरद्वीपों में पर्याप्तक और अपर्याप्तक मनुष्यों के स्थान कहे गए हैं। वे उपपात की अपेक्षा लोक के असंख्यातवें भाग में, समुद्घात की अपेक्षा सर्वलोक में और स्वस्थान की अपेक्षा लोक के असंख्यातवें भाग में हैं।

**जिज्ञासा (4)**—सम्मूर्च्छिम मनुष्यों के उत्पत्ति स्थान कौनसे बतलाये हैं?

**समाधान**—प्रज्ञापनासूत्र के प्रथम पद में सम्मूर्च्छिम मनुष्यों के उत्पत्ति स्थान बताये हैं, वे इस प्रकार हैं—

से किं तं संमुच्छिममणुस्सा? कहि णं भंते! संमुच्छिममणुस्सा संमुच्छंति? गोयमा! अंतो मणुस्सखेत्ते पणयालीसाए जोयणसयसहस्सेसु, अङ्गाइज्जेसु, दीवसमुद्देसु, पण्णरससु, कम्मभूमीसु, तीसाए, अकम्मभूमीसु, छप्पण्णाए अंतरदीवएसु गब्भवक्कंतियमणुस्साणं चव उच्चारएसु वा, पासवणेसु वा, खेलेसु वा, सिंघाणेसु वा, वंतेसु वा, पित्तेसु वा, पूएसु वा, सोणिएसु वा, सुक्केसु वा, सुक्कपुग्गलपरिसाडेसु वा, विगयजीवकलेवरेसु वा,

थीपुरिससंजोएसु वा, णगरणिद्धमणेसु वा, सव्वेसु चेव असुइद्वाणेसु, एत्थ णं, संमुच्छिममणुस्सा संमुच्छंति अंगुलस्स असंखेज्जइभागमेत्ताए ओगाहणाए। असण्णी मिच्छादिद्वी अण्णाणी सव्वाहिं पज्जत्तीहिं अपज्जत्तगा अंतोमुहुत्ताउया चेव कालं करेति। से तं संमुच्छिममणुस्सा।

सम्मूर्च्छिम मनुष्य कितने प्रकार के कहे गए हैं? हे भगवन्! सम्मूर्च्छिम मनुष्य कहाँ उत्पन्न होते हैं?

हे गौतम! मनुष्य क्षेत्र के अन्दर 45 लाख योजन परिमाण क्षेत्र में अढ़ाईद्वीप और समुद्रों में, 15 कर्मभूमियों में, 30 अकर्मभूमियों में एवं 56 अन्तरद्वीपों में गर्भज मनुष्यों के 1. उच्चारों (विष्टाओं) में 2. प्रस्रवणों (मूत्रों) में, 3. कफों में, 4. सिंघाण-नाक के मैलों में, 5. वमनों में, 6. पित्तों में, 7. मवादों में, 8. रक्तों में, 9. शुक्रों-वीर्यों में, 10. पहले से सूखे हुए शुक्र के पुद्गलों को गीला करने में, 11. मरे हुए जीवों के कलेवरों में, 12. स्त्री-पुरुष के संयोगों में, 13. नगर की गटरों या मोरियों में, 14. सभी अशुचि स्थानों में सम्मूर्च्छिम मनुष्य उत्पन्न होते हैं। इन सम्मूर्च्छिम मनुष्यों की अवगाहना अंगुल के असंख्यातवें भाग मात्र की होती है। ये असंज्ञी, मिथ्यादृष्टि, अज्ञानी एवं सभी पर्याप्तियों से अपर्याप्त होते हैं और अन्तर्मुहूर्त्त की आयु भोगकर काल करते हैं। यह सम्मूर्च्छिम मनुष्यों का वर्णन हुआ।

**जिज्ञासा (5)**—जब उच्चारों में, प्रस्रवणों में सम्मूर्च्छिम मनुष्य की उत्पत्ति होती है, तब क्या इसका आशय यही हुआ कि शरीर के भीतर रहे मलमूत्रों में सम्मूर्च्छिम मनुष्यों की उत्पत्ति होती है?

**समाधान**—नहीं। उच्चार प्रस्रवण शब्द की व्युत्पत्ति और आगम प्रमाणों से स्पष्ट है कि शरीर के भीतर रहे मल-मूत्रों में सम्मूर्च्छिम मनुष्यों की उत्पत्ति नहीं होती, एक-एक प्रमाण को देखें, एक-एक शब्द की व्युत्पत्ति देखें—

(1) उच्चार शब्द का अर्थ अभिधान राजेन्द्रकोष

के द्वितीय भाग के पृष्ठ 733 पर इस प्रकार आया है— 'शरीरादुत्प्राबल्येन च्यवतेऽपयाति उच्चारतीति-चोच्चार।' इसमें शरीर से प्रबलता से निकलने की प्रक्रिया में ही उसे उच्चार कहा है। शरीर में रहते हुए नहीं। 'पासवण' शब्द का अर्थ भी अभिधान राजेन्द्रकोष भाग-5 पृष्ठ 912 में किया— 'प्रकर्षेण स्रवणं स्रवतीति, प्रस्रवणम् एकाक्रियाम्।' शरीर से प्रकर्ष से स्राव होने की या स्राव की बाधा होने की स्थिति में ही इसे प्रस्रवण माना गया है, स्राव शब्द का प्रयोग बाहर निकलने के अर्थ में ही देखा जाता है।

(2) ज्ञाताधर्मकथा सूत्र के आठवें अध्ययन में मल्ली ने जितशत्रु आदि राजाओं से कहा—हे देवानुप्रियों! इस स्वर्णमयी प्रतिमा में प्रतिदिन मनोज्ञ अशन, पान, खादिम और स्वादिम आहार में से एक-एक पिण्ड डालते-डालते इस प्रकार का अशुभ पुद्गल का परिणमन हुआ, तो यह औदारिक शरीर तो कफ को झराने वाला, खराब उच्छ्वास और निःश्वास निकालने वाला है, अमनोज्ञ मूत्र एवं दुर्गन्धित मल से परिपूर्ण है। (मूल में स्पष्ट शब्द—'दुरुवमुत्तपूतिय-पुरीस पुण्णस्स') कितना स्पष्ट कर रहा है यह आगमिक कथा प्रसङ्ग-शरीर में है तब तक मूत्र, मल कहा है, उच्चार प्रस्रवण नहीं कहा है। मूल प्राकृत में मुत्त, पुरीस शब्द हैं, उन्हें उच्चार, पासवण की संज्ञा नहीं दी गई है।

(3) ज्ञाताधर्मकथा सूत्र का 18वाँ अध्ययन सुंसुमा में भी स्पष्ट रूप से दोनों शब्दों का उपयोग किया है, वह इस प्रकार है—'मुत्त-पुरीस-पूय-बहुपडिपुण्णस्स उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाणग-वंत-पित्त-सुक्क सोणिय संभवस्स।' अर्थात् जो अशुचि मूत्र, पुरीष, मवाद से भरपूर है, जो उच्चार, प्रस्रवण, कफ, नासिका मल, वमन, पित्त, शुक्र शोणित की उत्पत्ति का स्थान है। अर्थात् शरीर के भीतर हैं तब तक मूत्र, पुरीष ही कहलाते हैं उन्हें उच्चार प्रस्रवण नहीं कहते और बाहर निकले हुए मूत्र, पुरीष को ही उच्चार, प्रस्रवण कहते हैं।

(4) भगवतीसूत्र शतक 9 उद्देशक 33 जमालि का अधिकार क्या कह रहा-‘माणुस्सगा कामभोगा असुई, असासया, वंतासवा, पित्तासवा, खेलासवा, सुक्कासवा, सोणियासवा, उच्चार-पासवण-खेल सिंघाणगवंतपित्तपूय-सुक्क सोणियसमुब्भवा।’

अर्थात् जमालि क्षत्रिय कुमार ने अपने माता-पिता से इस प्रकार कहा-हे माता-पिता! ये मनुष्य सम्बन्धी काम-भोग निश्चित रूप से अशुचि और अशाश्वत हैं। वात, पित्त, श्लेष्म, वीर्य और रुधिर के झरने हैं। उच्चार पासवण..... आदि की उत्पत्ति के स्थान हैं।

(5) उत्तराध्ययनसूत्र के 24वें अध्ययन की गाथा 15 में फैंकने योग्य पदार्थ कौनसे हैं और किस विधि से फैंकना है, इसका विवेचन देखें तो स्पष्ट होता है कि शरीर से बाहर निकलने पर अशुचि को किस नाम से सम्बोधित किया जाता है। मूल गाथा इस प्रकार है-

उच्चारं पासवणं, खेलं सिंघाणजल्लियं।  
आहारं उवहिं देहं, अन्नं वा वि तहाविहं॥15॥

अर्थात् मल-उच्चार (विष्ठा), प्रस्रवण (मूत्र), मुख का मल, नासिका का मल, शरीर का मल, आहार, उपधि, देह अन्य भी इसी प्रकार के फैंकने योग्य पदार्थ, इन सबको विधिपूर्वक यतना से परठें। स्पष्ट रूप से उच्चार, पासवण शब्द शरीर से बाहर निकलने पर ही कहे जाते हैं और इन्हीं में सम्मूर्च्छिम मनुष्यों की उत्पत्ति होती है।

(6) स्थानाङ्गसूत्र के 5वें ठाणे में पाँच समिति का वर्णन है और पाँचवीं समिति में ‘उच्चार पासवण’ शब्द का प्रयोग परिष्ठापन अर्थात् छोड़ने के अर्थ में हुआ। इससे निष्कर्ष-जो छोड़ने योग्य पदार्थ है, उनकी संज्ञा सभी आगमों में समान है। उच्चार का अर्थ पुरिस, मल (विष्ठा), पासवण का अर्थ-मूत्र, खेल का अर्थ मुँह से निकलने वाला कफ, सिंघाण का अर्थ-नाक से निकलने वाला श्लेष्म है।

(7) व्यवहारसूत्र के छठे उद्देशक में तथा स्थानांग

सूत्र के पाँचवें ठाणे में आचार्य-उपाध्याय के पाँच अतिशय बताए गए हैं, उसमें दूसरा अतिशय है-‘आयरिय उवज्झाए अंतो उवस्सयस्स उच्चारपासवणं विगिंचमाणे वा विसोहेमाणे वा णाइक्कमइ।’ अर्थात् आचार्य और उपाध्याय उपाश्रय के भीतर उच्चार (मल) और प्रस्रवण (मूत्र) का व्युत्सर्ग और विशोधन करते हुए आज्ञा का अतिक्रमण नहीं करते हैं।

यहाँ व्युत्सर्ग और विशोधन करते हुए उच्चार पासवण शब्द का प्रयोग किया है। शरीर में रहते हुए मल, मूत्र को उच्चार, पासवण कहना शास्त्रकारों को कथमपि अभीष्ट नहीं है।

(8) सूत्रकृताङ्गसूत्र के नवें अध्ययन की 19वीं गाथा में परिष्ठापन कह कर उसका विवेक जताते हुए उच्चार पासवण शब्द का प्रयोग आगमकार कर रहे हैं-  
उच्चारं पासवणं हरितेसु ण करे मुणी।  
वियडेण वा वि साहट्टु णायमेज्ज कयाइ वि॥19॥

अर्थात् मुनि हरी वनस्पति वाले स्थान में मल-मूत्र न करें तथा बीज आदि सचित्त वनस्पति को हटाकर सचित्त जल से भी कदापि आचमन न करे।

(9) बृहत्कल्पसूत्र के तीसरे उद्देशक में, निशीथसूत्र के तीसरे उद्देशक में, भगवतीसूत्र के शतक 3 उद्देशक 4 में भी छोड़ने के अर्थ में उच्चार पासवण शब्द का प्रयोग हुआ है।

(10) आवश्यकसूत्र हारिभद्रीय वृत्ति भाग-6 सूत्र 1410-11 के अनुसार मल-मूत्र आदि शरीर के भीतर होने के बावजूद मनुष्य स्वाध्याय, देवपूजा आदि करता है। यदि मल-मूत्र शरीर के बाहरी भाग में लगा हुआ हो तो स्वाध्याय आदि करना सम्भव नहीं है।

जिनकल्पी मुनि को भी यद्यपि हाथ-पैर धोना निषेध है, परन्तु अशुचि को दूर करना तो उनके लिये भी आवश्यक है। स्पष्ट है कि शरीर के बाहर मल-मूत्र का निष्कासन अशुचि की कोटि में आता है। भीतर में रहा मल-मूत्र अपशिष्ट पदार्थ होता है।

(11) प्रज्ञापनासूत्र के नवें पद में योनि अर्थात्

जीवों की उत्पत्ति के स्थान बताए हैं, उसे हम चार्ट में समझने का प्रयास करें तो-

	अ	ब	स
<b>योनि</b>	1. शीत	1. सचित्त	1. संवृत
	2. उष्ण	2. अचित्त	2. विवृत
	3. शीतोष्ण (मिश्र)	3. सचित्त-अचित्त (मिश्र)	3. संवृत-विवृत (मिश्र)
1. गर्भज मनुष्य की योनि	शीतोष्ण	सचित्त-अचित्त (मिश्र)	संवृत-विवृत (मिश्र)
2. सम्मूर्च्छिम मनुष्य की योनि तीनों	तीनों	तीनों	विवृत (खुली)

इस योनि पद से सुस्पष्ट है कि गर्भज मनुष्य की योनि शीतोष्ण (मिश्र), सचित्त-अचित्त (मिश्र), संवृत-विवृत (मिश्र) है। तीनों प्रकार की योनियाँ नहीं है। सम्मूर्च्छिम मनुष्य की योनि में शीत, उष्ण, शीतोष्ण, सचित्त, अचित्त, सचित्ताचित्त तथा विवृत बताई है अर्थात् मानव शरीर के भीतर सम्मूर्च्छिम मनुष्यों की उत्पत्ति घटित नहीं हो सकती। मानव शरीर के बाहर ही सम्मूर्च्छिम मनुष्यों की उत्पत्ति होती है। यदि सम्मूर्च्छिम मनुष्य शरीर के अन्दर ही उत्पन्न होते तो शरीर के अन्दर उत्पन्न होने वाले गर्भज मनुष्य की भाँति सम्मूर्च्छिम मनुष्य की योनि तीनों में मिश्र ही कहलाती-जो प्रथम प्रकार में शीतोष्ण, द्वितीय प्रकार में सचित्त-अचित्त और तृतीय प्रकार संवृत-विवृत बताई है पर प्रज्ञापनासूत्र में प्रारम्भ के दो प्रकार की योनियों में सम्मूर्च्छिम मनुष्य के तीनों प्रकार की योनियाँ बतायी गयी, शरीर के भीतर उत्पन्न होने पर अचित्त योनि हो ही नहीं सकती थी और तीसरे प्रकार की योनि के भेद विवृत (खुली) तो सुस्पष्ट कर रहे हैं कि शरीर से बाहर निकलने के पश्चात् ही सम्मूर्च्छिम मनुष्यों की उत्पत्ति होती है।

(12) शरीर में रहे हुए मल-मूत्र-रक्तादि में सम्मूर्च्छिम मनुष्यों की योनि नहीं बनती है, इसलिए इनमें सम्मूर्च्छिम मनुष्यों की उत्पत्ति नहीं मानने की प्राचीन परम्परा है। 1500 वर्षों से भी अधिक प्राचीन ग्रंथ आवश्यक निर्युक्ति में गाथा 137-138 में निर्गम द्वार का उल्लेख है, वहाँ निर्गम द्वार में 9 भेद किए गए-

1. सचित्त से सचित्त का निर्गम

2. सचित्त से अचित्त का निर्गम
3. सचित्त से मिश्र का निर्गम
4. अचित्त से सचित्त का निर्गम
5. अचित्त से अचित्त का निर्गम
6. अचित्त से मिश्र का निर्गम
7. मिश्र से सचित्त का निर्गम
8. मिश्र से अचित्त का निर्गम
9. मिश्र से मिश्र का निर्गम

इन 9 भेदों में उच्चार पासवण को आठवें भेद में दिखाया है अर्थात् मनुष्य, मनुष्यनी का शरीर मिश्र (सचित्त-अचित्त) (प्रज्ञापना सूत्र में भी 9वें पद में मिश्र कहा है।) साथ ही निकलने वाले उच्चार, पासवण आदि पदार्थ अचित्त हैं। अचित्त पदार्थ निकलते समय उनमें जीव नहीं होते, सम्मूर्च्छिम नहीं होते।

इससे स्पष्ट है कि शरीर में रहते हुए मलादि में सम्मूर्च्छिम मनुष्य की उत्पत्ति नहीं होती है।

(13) 'विगयजीव कलेवरेसु' से भी स्पष्ट है मृत कलेवर में सम्मूर्च्छिम होते हैं अन्यथा जीवित शरीर में सम्मूर्च्छिम की बात आगमकार कह देते।

(14) व्यवहार सूत्र उद्देशक 9 में मोक पीने का वर्णन है। पूर्व से ही (शरीर के भीतर रहे) मूत्र में सम्मूर्च्छिम होते तो उस मूत्र को पीने का अचित्त भोजी साधु को भगवान निषेध कर देते।

**जिज्ञासा (6)**-अंगुल के असंख्यातवें भाग की अवगाहना वाले तथा अन्तर्मुहूर्त्त की स्थिति इतने छोटे जीवों की विराधना किस प्रकार हो सकती है?

**समाधान**-यह प्रभु की वाणी का ही चमत्कार है। हम आप सरीखे अल्पज्ञ को तो उस वाणी के अवलम्बन से इन जीवों का ही नहीं, सत्त्व अर्थात् पृथ्वीकाय, अप्काय, तेजस्काय, वायुकाय और सूक्ष्म जीवों का अस्तित्व भी मानना होता है। सूक्ष्म जीव तो सारे लोक में दूँस-दूँस कर भरे पड़े हैं। मेरु का अत्यन्त ठोस भाग भी उन जीवों की उत्पत्ति एवं जीवन में बाधक नहीं हो सकता। सूचना प्रौद्योगिकी (Information

Technology) का आधुनिक विकास इस ओर समुचित संकेत प्रदान करता है। सूक्ष्म तरंगों दीवारों से नहीं रुकती, हजारों तरंगों एक आकाश-प्रदेश से निकलती हुई अपने-अपने नम्बर पर जाकर ही घण्टी बजाती है, पर उनको भी हैक (Hack) कर लिया जाता है अर्थात् बादर से बाधित नहीं होने वाली तरंगों को भी सूक्ष्म से बाधित कर लिया जाता है। इसी प्रकार सूक्ष्म नामकर्म के उदय वाले वनस्पतिकाय के जीव अर्थात् सूक्ष्म निगोदिया जीव आहार पर्याप्ति के समय सूक्ष्म जीवों का आहार करते हैं। इसलिये इनकी योनि सचित कहलाती है। ऐसा प्रज्ञापना सूत्र के 9वें पद से सुस्पष्ट है। पुद्गलों में परिणमन चलता रहता है। औदारिक वर्गणा के बादर पुद्गल सूक्ष्म पुद्गल बन जाते हैं और सूक्ष्म पुद्गल बादर पुद्गल बन जाते हैं। मुक्त बादर पुद्गल भी औदारिक वर्गणा में रहते हुए सूक्ष्म रूप को धारण कर सूक्ष्म जीवों की विराधना कर सकते हैं। जब सूक्ष्म जीवों की भी विराधना हो सकती है तो सम्मूर्च्छिम मनुष्य की अवगाहना तो सूक्ष्म जीवों से बड़ी होती है, उनकी विराधना होने में तो कोई बाधा ही नहीं है। अतः आगमवाणी में सम्मूर्च्छिम मनुष्य की विराधना सुस्पष्ट है।

**जिज्ञासा (7)**—आगमवाणी से स्पष्ट किया कि सम्मूर्च्छिम मनुष्य की विराधना होती है, पर अब इस पर प्रकाश डालिए कि क्या इन सम्मूर्च्छिम मनुष्य की विराधना मनुष्यों की कायिक प्रवृत्तियों से हो सकती है?

**समाधान**—जी हाँ! सम्मूर्च्छिम मनुष्यों की विराधना मनुष्यों की कायिक प्रवृत्तियों से होती है।

भगवान महावीर स्वामी की गहन-गम्भीर अनुपम वाणी के दिव्य उद्घोष इस प्रकार हैं—

(1) भगवतीसूत्र शतक 8 उद्देशक 10 में बताया— जघन्य ज्ञान आराधना से अर्थात् केवल 5 समिति 3 गुप्ति के ज्ञान से जीव जघन्य 3 भव में मोक्ष चला जाता है। वहाँ 5 समिति हैं—1. ईर्या, 2. भाषा, 3. एषणा, 4. आदान भाण्ड मात्र निक्षेपणा, 5. उच्चार पासवण खेल

जल्ल सिंघाण परिष्ठापनिका समिति।

समिति का अर्थ है—यत्नपूर्वक सम्यक् प्रकार से प्रवृत्ति करते हुए जीवों की रक्षा करना। अर्थात् उच्चार प्रस्रवण समिति भी यतना से होनी चाहिए। इसमें यतना की बात भगवान ने क्यों फरमायी होगी? इससे यही समझ में आता है कि भगवान उन सम्मूर्च्छिम जीवों की भी विराधना न हो, इसका ही विवेक साधक को दे रहे हैं।

हिंसा होगी तो मूल गुणों की विराधना होगी और जिसे साधना करनी है, उसे अहिंसक बनना होगा। मनुष्य की कायिक प्रवृत्ति से क्षुद्र से क्षुद्र प्राणी को भी पीड़ा न हो, ऐसी चर्या भगवान ने बतायी। उच्चार पासवण आदि क्रिया में अयतना से विराधना नहीं होती तो 5वीं समिति की बात ही क्यों आती?

(2) भगवतीसूत्र शतक 5 उद्देशक 6 में बतलाया गया कि कोई पुरुष धनुष को ग्रहण करे, धनुष पर बाण को लगाकर कान तक खींचे, खींच कर ऊँचे आकाश में बाण फेंके। ऊँचे आकाश में फेंका वह बाण जिन प्राण, भूत, जीव, सत्त्वों का अभिहनन करे, यावत् पीड़ा पहुँचाये, उन्हें क्लान्त करे, जीवन रहित करे तो उस धनुष चलाने वाले को कायिकी आदि पाँच क्रियाएँ लगती हैं। जिन जीवों से वह धनुष, धनुषपृष्ठ, डोरी, स्नायु, बाण आदि बने हैं, उन जीवों को भी पाँचों क्रियाएँ लगती हैं।

एकेन्द्रियादि सूक्ष्म-बादर जीवों की विराधना होने के कारण उन-उन जीवों को भी पाँच क्रियाएँ लग सकती हैं। आगम का यह कथन स्पष्ट सूचित कर रहा है कि सम्मूर्च्छिम मनुष्य तो असन्नी पञ्चेन्द्रिय है, अतः उसकी कायिक विराधना मानने में तो कोई आपत्ति ही नहीं है।

(3) तत्त्वार्थसूत्र 2/53 में चरम शरीरी असंख्यात वर्षायुष्क (युगलिक) श्लाघनीय और उपपात जन्म वाले (देव, नारक) को छोड़कर शेष को अपवर्तनीय और अनपवर्तनीय आयु वाला कहा है। ठाणांगसूत्र के 7वें

ठाणे में 7 प्रकार के शस्त्र बतलाये हैं-

(1) राग, द्वेष, भय आदि भावों की तीव्रता से।  
 (2) शस्त्राघात आदि के निमित्त से। (3) आहार की हीनाधिकता या निरोध से। (4) ज्वर, आतंक, रोग आदि की तीव्र वेदना से। (5) पर के आघात से, गड़डे आदि में गिर जाने से। (6) सांप आदि के स्पर्श से-काटने से। (7) आन-पान, श्वासोच्छ्वास के निरोध से।

इनमें से 6 प्रकार के शस्त्र (पहले को छोड़कर) बादर नामकर्म के उदय वाले सम्मूर्च्छिम मनुष्यों पर भी कारगर होते हैं, जिससे भी स्पष्ट है कि सम्मूर्च्छिम मनुष्यों की विराधना मनुष्यों की कायिक प्रवृत्तियों से हो सकती है।

(4) भगवतीसूत्र शतक 2 उद्देशक 5 में एक बार के स्त्री-पुरुष के सम्भोग में होने वाली हिंसा का कथन करते हुए आचार्य हरिभद्रसूरि ने सम्बोध प्रकरण के तीसरे अधिकार में लिखा है-

इत्थीण जोणिमज्झे, गम्भगया चेव हुंति नवलक्खा।  
 इक्को व दो व तिण्णि व, गम्भपुहुत्तं च उक्कोसा।।73।।  
 इत्थीण जोणिमज्झे, हवन्ति बैदिया असंखा य।  
 उप्पजंति चयंति य, समुच्छिमा जे ते असंखा।।74।।  
 इत्थी संभोगे समगं तेसि, जीवाण हुंति उद्वणं।  
 रुयग नल्लिया जोगप्पओग दिट्ठंत सब्भावा।।75।।

अर्थात् स्त्रियों की योनि में नौ लाख गर्भज जीव (मनुष्य) होते हैं। इनमें से एक, दो, तीन और अधिक से अधिक गर्भ पृथक्त्व पुत्र रूप में उत्पन्न हो सकते हैं। स्त्रियों की योनि में द्वीन्द्रिय आदि त्रस जीव उत्पन्न होते हैं और मरते हैं। सम्मूर्च्छिम मनुष्य भी असंख्य उत्पन्न होते हैं और मरते हैं। सम्भोग के समय रूई नल्लिका योग-प्रयोग दृष्टान्त के सद्भाव से उन सभी जीवों का एक साथ विनाश हो जाता है।

(5) प्रज्ञापनासूत्र के तृतीय पद की 98 बोल की अल्पबहुत्व से स्पष्ट है कि उसमें मनुष्य से मनुष्यणी संख्यात गुणी है। अपर्याप्त में मरने वाले नपुंसकवेदी ही होते हैं। इस अल्प बहुत्व में नपुंसकवेदी गर्भज मनुष्यों

को पुरुषवेदी में सम्मिलित किया जाता है। पुरुषवेदी से स्त्रीवेदी 27 गुणा 27 अधिक होती है। इससे स्पष्ट हुआ है कि पुरुष वेद में सम्मिलित नपुंसकवेदी तो बहुत कम हैं। बहुत सारे जीव तो मैथुन सेवन से मरते हैं, वे नपुंसक वेदी-अपर्याप्त सम्मूर्च्छिम मनुष्य ही हो सकते हैं।

(6) भगवतीसूत्र शतक 25 उद्देशक 1 में जीवों के योगों की अल्पबहुत्व बताया है, इस अल्पबहुत्व में 28 बोल बतलाये हैं उनमें से अपर्याप्त असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय का जघन्य योग छठे नम्बर तथा उत्कृष्ट योग 22वें नम्बर पर बतलाया है।

जब सूक्ष्म बादर अपर्याप्त एकेन्द्रिय जो 1, 2 नम्बर पर ही आते हैं, फिर भी उन जीवों की कायिक विराधना हो सकती है तो फिर छठे तथा बाईसवें नम्बर वाले सम्मूर्च्छिम मनुष्यों की कायिक विराधना होने में तो कोई बाधा ही नहीं समझनी चाहिए।

(7) 'अपनी परम्परा' पुस्तक में प्रश्न संख्या 230, पृष्ठ संख्या 240 पर आचार्य उमेशमुनिजी 'अणु' समाधान फरमाते बता रहे हैं कि पहले के त्यागे हुए मल-मूत्र में असंख्य सम्मूर्च्छिम मनुष्य उत्पन्न हो जाते हैं। उस मल-मूत्र पर मल-मूत्र का त्याग करने पर अपने शरीर से निकले उष्ण मल-मूत्र में नगर दाह जैसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है अर्थात् नगर में आग लगने पर जैसे मनुष्य घबराते हैं, व्याकुल होते हैं, मरते हैं, जलते हैं, ऐसी स्थिति उन सम्मूर्च्छिम मनुष्यों की हो जाती है।

(8) प्रज्ञापना पद-11 से स्पष्ट है कि जितनी भी क्रियाएँ लगती हैं एवं कर्मबन्ध होता है, वह योगों से ही होता है। कषाय भी योगों के माध्यम से ही प्रवाहित होते हैं। प्रज्ञापना पद-22 में जीवों को 3,4,5 क्रिया लगना तथा अक्रिय होना बतलाया है। कायिकी क्रिया अर्थात् काया से लगने वाली क्रिया।

एक प्रमत्त जीव को कायिकी आदि 3 क्रियाएँ तो निरन्तर लगती रहती हैं। तो इन क्रियाओं के आधार पर सम्मूर्च्छिम मनुष्यों को पीड़ा पहुँचाना एवं मारना तो स्वतः ही स्पष्ट हो जाता है।

(9) प्रज्ञापना पद-22 तथा भगवतीसूत्र शतक 8 उद्देशक 6 में सम्मूर्च्छिम मनुष्य तथा सूक्ष्म जीवों से क्रिया लगने का निषेध नहीं किया है। अतः दोनों स्थलों पर 3-4-5 क्रियाएँ लगना स्पष्ट हो जाता है।

मनुष्य और तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय मरकर 24 ही दण्डकों में जाते हैं। उनके मृत शरीर को कुत्ते आदि जानवर इधर-उधर घसीटते हुए सम्मूर्च्छिम मनुष्य युक्त मल-मूत्रादि में रहे हुए जिन सम्मूर्च्छिम मनुष्यों की हिंसा होती है, उनकी अपेक्षा से आगमकारों ने 24 ही दण्डकों के जीवों को पाँच क्रिया लगना बताया है। जब मृत शरीर से दबने पर भी सम्मूर्च्छिम मनुष्यों की हिंसा हो सकती है तो जीवित व्यक्ति के पाँव आदि से दबने पर उसकी हिंसा होना एवं पाँच क्रियाएँ लगना तो सहज ही समझा जा सकता है।

**जिज्ञासा (8)**—यद्यपि ऐसा है नहीं, फिर भी कदाचित् यह मानें कि सम्मूर्च्छिम मनुष्यों की विराधना अपने आप होती है तब भी क्या कायिकी आदि 5 क्रियाएँ लगेगी?

**समाधान**—जो यह कहते हैं कि हमारे कारण सम्मूर्च्छिम जीवों की विराधना नहीं होती, उनकी विराधना में हम निमित्त नहीं बनते, उनकी तो विराधना अपने आप होती ही रहती है। वे भी इन जीवों के जन्म-मरण की वेदना होना तो मानते ही हैं, जब तक मल-मूत्रादि का संग्रह करेंगे तब तक उनमें उत्पन्न सम्मूर्च्छिम मनुष्यों को जन्म-मरण की घोर वेदना चलती ही रहती है।

जिनकी आयु अनपवर्तनीय थी, कैसा भी निमित्त मिले, नहीं टूटे, आयुष्य पूर्ण होने पर ही टूटे, ऐसे श्री कृष्ण वासुदेव जब जंगल में पीताम्बर ओढ़कर सो रहे थे तब जराकुमार द्वारा उन पर बाण चलाया गया। कहा भी जाता है कि बाण लगने से उनकी मृत्यु हुई। यह सही है कि यदि उस समय बाण उनको नहीं भी लगता, तब भी आयुष्य पूरा होने से वे स्वयं ही मरने वाले थे, किन्तु जराकुमार को उनकी मृत्यु का निमित्त बनने से कायिकी आदि 5 क्रियाएँ तो लगेगी ही। क्योंकि उसी के निमित्त

से वे पीड़ा पाकर मृत्यु को प्राप्त हुए। इसी तरह गजसुकुमाल मुनि को मारने वाले सोमिल को और चरम शरीरी 500 साधुओं को घाणी में पीलने वाले पालक को 5 क्रियाएँ लगेगी ही। इसी प्रकार हम भी सम्मूर्च्छिम मनुष्य की विराधना में निमित्त बनेंगे। चाहे वे स्वयं ही मरने वाले हैं, फिर भी कायिकी आदि 5 क्रियाएँ तो हमें लगेगी ही।

**जिज्ञासा (9)**—भलीभाँति समझ में आया कि सम्मूर्च्छिम मनुष्यों की विराधना मनुष्यों की कायिक प्रवृत्ति से हो सकती है। पर क्या मल-मूत्रादि परठने की विधि आगम में बतलायी है? यदि हाँ तो उसे समझाइए।

**समाधान**—(1) दशवैकालिकसूत्र के चौथे अध्ययन में भगवान फरमाते हैं कि कीट, पतंगा, कुंथु या पिपीलिका आदि त्रस जीव वस्त्र, पात्र आदि तथा 'उडगंसि वा' अर्थात् स्थण्डिल पात्र पर आ जाये तो उसे यतना पूर्वक अलग कर दे।

'उडगंसि'—स्थण्डिल पात्र रखने का विधान स्पष्ट रूप से किया है तो इस स्थण्डिल पात्र के रखने का प्रयोजन यही तो होगा—मलमूत्रादि का विसर्जन।

(2) साधुओं के आचार का निरूपण करने वाला आगम आचाराङ्गसूत्र के द्वितीय श्रुतस्कन्ध के 10वें अध्ययन में परठने की जो विधि बतायी है, उसे आपवादिक मानना उचित नहीं है। पात्र में विसर्जन करके परठने में संयम में, समिति में कोई बाधा नहीं आती। आगम के सन्ध्या के समय तीन परिष्ठापन भूमियाँ देखने की विधि बताई है, वे सीधे परठने की अपेक्षा से ही बताना कतई उचित नहीं है।

(3) दशाश्रुतस्कन्ध की तीसरी दशा में 33 आशातनाओं का वर्णन है, उसमें से 13वीं आशातना में बताया है कि रात्रि में बड़ों के द्वारा पूछे जाने पर जागृत हो तब भी छोटा मौन रहता है तो छोटे को आशातना लगती है। यदि रात्रि में भाजन में परिष्ठापन की विधि नहीं होती तो बड़ों को इस प्रकार पूछने की आवश्यकता ही नहीं रहती। अनेक बार करके वे रख देते, सूर्योदय के बाद छोटे

परठ देते, पर इससे स्पष्ट है कि रात्रि में मूत्रादि भाजन में विसर्जन करके रात्रि में ही परठने की परम्परा थी।

(4) रात्रि में परठने की भाष्य-चूर्णि में निम्न बाधाएँ बताई-चोरों के द्वारा पकड़े जाना, सिंह आदि का भय, विरोधियों द्वारा आरोप लगाया जाना इत्यादि कारणों से सूर्योदय से पहले नहीं परठना। इससे स्पष्ट है कि जहाँ ये कारण न हो तथा जो उपाश्रय उच्चार पासवण भूमि से सम्पन्न हो, वहाँ भाजन में निवृत्त होकर रात्रि में परठने में बाधा नहीं है।

रात्रि में परठने हेतु जाने वाले मुनियों की ठोकर से ही मेघश्रमण संयम के भावों से विचलित हुए थे। ज्ञाताधर्मकथासूत्र का पहला अध्ययन स्पष्ट कह रहा। इससे स्पष्ट है रात्रि में परठने की परम्परा आगम विहित है। **जिज्ञासा (10)**—मल में कृमि हो तो उन्हें पीड़ा न हो उसके लिये छाया देने का विधान है, लेकिन सम्मूर्च्छिम मनुष्यों के लिए छाया देने का विधान क्यों नहीं बतलाया?

**समाधान**—ओघ निर्युक्ति गाथा 527 तथा आवश्यक निर्युक्ति-हरिभद्रीय वृत्ति भाग-6 सूत्र-81 में कृमि आदि विकलेन्द्रिय जीवों की रक्षा हेतु निर्देश दिया है कि मल विसर्जन के बाद साधु एक मुहूर्त तक छाया देता हुआ खड़ा रहे, क्योंकि वे कृमि उतनी देर में स्वयमेव परिणमन को प्राप्त हो जायेंगी। स्पष्ट है कि विकलेन्द्रिय जीवों का रक्षक साधु पञ्चेन्द्रिय जीवों की रक्षा का ध्यान भी अवश्य रखेगा। आगमों में सम्मूर्च्छिम मनुष्यों की रक्षा हेतु छाया देने जैसा कोई विधान नहीं होने से स्पष्ट होता है कि शरीर के भीतर रहे हुए मल आदि में सम्मूर्च्छिम मनुष्यों की उत्पत्ति नहीं होती तो उसकी रक्षा का प्रश्न ही नहीं उठता है।

सम्मूर्च्छिम मनुष्यों को छाया देने का विधान नहीं है अर्थात् सम्मूर्च्छिम के उत्पत्ति स्थान रूप अशुचि स्थान यानी मल-मूत्र को सूर्य का प्रकाश रूप ताप देने का विधान है—(निशीथसूत्र उद्दे-3)। क्योंकि जितना शीघ्र प्रसवण, रक्त, शुक्र, उच्चार आदि सूखेंगे उतना

सम्मूर्च्छिम जीवों की विराधना से स्वयं को बचा पायेंगे। प्रसवण, रक्त आदि सूख जाने के बाद अयोनि होने से उनमें सम्मूर्च्छिम मनुष्य उत्पन्न नहीं होते हैं, मात्र सूखे हुए शुक्र को छोड़कर। यह शुक्र पुनः आर्द्र होता है तब भी सम्मूर्च्छिम मनुष्य पैदा हो सकते हैं, इसलिये इसका स्थान अलग से बताया है। छाया करने से अशुचि देर तक आर्द्र रहती है तो उसमें सम्मूर्च्छिम मनुष्यों की उत्पत्ति की सम्भावना भी बढ़ जाती है, इसलिये आगम में उनकी छाया का विधान नहीं है। अपितु शीघ्र शुष्क बनाने हेतु सूर्य ताप या खुले पर परठने का विधान है।

यदि शीघ्र सुखाने से सम्मूर्च्छिम मनुष्यों की विराधना नहीं रुकती तो रात्रि में अछाया में बाहर जाने की आज्ञा जिनेश्वर भगवन्त कभी नहीं देते।

सूर्य का ताप देकर या शीघ्र सुखाने की दृष्टि से ही अणुगण सूरिए शब्द का कथन किया है। यदि हमारी कायिक प्रवृत्ति से सम्मूर्च्छिम मनुष्यों की विराधना का कोई सम्बन्ध नहीं होता तो उगए सूरिए या अणुगए सूरिए आदि कोई शब्द नहीं आता।

**जिज्ञासा (11)**—क्या मूत्र को पौँछने, स्पर्श करने से सम्मूर्च्छिम मनुष्यों की हिंसा होती है?

**समाधान**—यदि मूत्र को पौँछने, स्पर्श करने आदि से हिंसा होती तो शास्त्रकार उसका विधान कैसे करते?

शरीर से निकले उच्चार या प्रसवण, रक्त या शुक्र आदि तत्काल पौँछने पर (अचित्त होने से) उसमें सम्मूर्च्छिम मनुष्यों की उत्पत्ति नहीं होने से जीव हिंसा की विराधना का पाप लगने का प्रश्न ही नहीं उठता है। हाँ, दीर्घकाल तक शरीर के अशुचि से भरे रहने पर इसे साफ करने, पौँछने-स्पर्शित करने पर जीव हिंसा का पाप लगता है। इसी कारण आगमकारों ने पहले मार्ग में शुद्धि करके आगे अपना प्रयोजन पूर्ण करने को कहा है।

**जिज्ञासा (12)**—राख आदि क्षार पदार्थ में रहे मल में सम्मूर्च्छिम मनुष्यों की उत्पत्ति होती है अथवा नहीं?

**समाधान**—प्रज्ञापनासूत्र के छठे विरह पद में सम्मूर्च्छिम मनुष्यों का विरह काल जघन्य 1 समय, उत्कृष्ट 24

मुहूर्त बताया है। यह उत्कृष्ट विरह अत्यन्त उष्ण या अत्यन्त शीत के निमित्त से होना कहा है। परन्तु सारे अढ़ाई द्वीप में एक सरीखी तीव्रता सम्भावित नहीं, कहीं तो मध्यम तो कहीं जघन्य भी रह सकती है। विशेषकर अकर्मभूमि में ऐसी तीव्रता सम्भव नहीं है। अतः इसे स्वाभाविक ही मानना युक्ति सङ्गत है। फिर भी इससे इन अशुचियों में प्रति समय सम्मूर्च्छिम मनुष्य उत्पन्न हो ही, ऐसी अनिवार्यता नहीं है।

पानी की बहुलता, राख, चूना आदि खारे पदार्थ उत्पत्ति को रोकने वाले हैं। राख का जहाँ-जहाँ स्पर्श अधिक हो, वहाँ उत्पत्ति रूकने में बाधा नहीं, किन्तु राख आदि से अस्पृष्ट में तो अपने विरह काल को छोड़कर शेष समयों में विसर्जन के अन्तर्मुहूर्त पश्चात् सम्मूर्च्छिम मनुष्यों की उत्पत्ति की सम्भावना रहती ही है।

**जिज्ञासा (13)**—गर्भज मनुष्य की अशुचि में सम्मूर्च्छिम मनुष्य कब उत्पन्न होते हैं ?

**समाधान**—गर्भज मनुष्य की अशुचि में सम्मूर्च्छिम मनुष्यों की उत्पत्ति के बारे में 19 फरवरी 1956 को नोखा मण्डी में प्रमुख मुनियों द्वारा चर्चा-वार्ता कर निर्णय लिया गया कि बड़ी नीत, लघुनीत, अन्तर्मुहूर्त (30 मिनट) उपरान्त रहे तो उसमें सम्मूर्च्छिम मनुष्यों की उत्पत्ति मानना चाहिए, उसका संघट्टा होने पर 1 बेले का प्रायश्चित्त लेना भी स्वीकार किया गया।

रत्नसंघ तथा ज्ञानगच्छ परम्परा में वर्तमान में 24

मिनट पश्चात् लघुनीत-बड़ीनीत रहने पर प्रायश्चित्त के रूप में 1 बेले या 10 हजार गाथा की स्वाध्याय का विधान है। सजगता बनी रहे, इसलिए महापुरुषों ने एक घड़ी बाद प्रायश्चित्त का विधान किया है। मूर्तिपूजक परम्पराओं में एक मुहूर्त पश्चात् सम्मूर्च्छिम मनुष्यों की उत्पत्ति मानी जाती है।

**जिज्ञासा (14)**—सम्मूर्च्छिम मनुष्यों की जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति कितनी होती है ?

**समाधान**—(1) प्रज्ञापना पद 4 में सम्मूर्च्छिम मनुष्यों की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट भी अन्तर्मुहूर्त बतायी है।

(2) जीवाजीवाभिगम सूत्र की प्रतिपत्ति 2 में अकर्मभूमि एवं अन्तर्द्वीपज सम्मूर्च्छिम मनुष्यों की जघन्य स्थिति से उत्कृष्ट स्थिति बड़ी होना बताया है। टीकाकारों ने जघन्य से उत्कृष्ट स्थिति विशेषाधिक होना बताया है।

(3) अनुयोग द्वार में सम्मूर्च्छिम मनुष्यों को इनकी अन्तर्मुहूर्त की जघन्य स्थिति की अपेक्षा-अपर्याप्त और बड़े अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट स्थिति की अपेक्षा पर्याप्त कहा है।

उक्त तथ्यों को प्रस्तुत करते हुए जिनाज्ञा के विपरीत कुछ लेखन हुआ हो तो मिच्छामि दुक्कडं।

—रजिस्ट्रार, अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

## जिनवाणी पर अभिमत

डॉ. पुष्पेन्द्रमुनिजी

‘जिनवाणी’ के मई-2022 के अंक में विद्वान् साहित्यकार डॉ. दिलीप जी धींग का निबन्ध ‘जैन भक्तिकाव्य एवं विनयचन्द चौबीसी’ अभिनव-अनुपम लगा। इसमें लेखक डॉ. धींग ने बड़े ही निष्पक्ष भाव से अनेक जानने योग्य बातें बताईं और अनेक विचारणीय बिंदुओं की ओर ध्यान आकर्षित किया है।

स्थानकवासी जैन संघों की पत्रिकाओं में जिनवाणी का स्थान सबसे ऊँचा है। जैन पत्रिकाओं में भी जिनवाणी श्रेष्ठ पत्रिकाओं में गिनी जाती है। विचरण विहार में रहते हुए भी हम जिनवाणी प्राप्त करके इसे पढ़ते हैं। इस पत्रिका में हमें प्रवचन देने के लिए भी काफी सामग्री मिल जाती है। प्रकाशक, सम्पादक और लेखकगण, सभी धन्यवाद के पात्र हैं।

—श्री तरस्क गुरु जैन ग्रंथालय, गुरु पुष्कर मार्ग, शास्त्री सर्कल, उदयपुर-313001

## भीतर से करुणा का स्रोत बहाएँ

श्री पदमचन्द्र गाँधी

परिस्थिति से मनःस्थिति के प्रभावित होने की मान्यता का नाम भौतिकवाद है। आज भौतिकवादी जीवन दर्शन ने मानवीय सत्ता को पूरी तरह अपने शिकंजे में कस रखा है। इसलिये मानसिक स्तर को ऊँचा उठाने की आवश्यकता नहीं समझी जा रही है। आज भौतिकवाद की आँधी अपने प्रवाह में सभी को उड़ाते चली जा रही है। भौतिकवाद के इस उद्दाम वेग का आधार है बुद्धिवाद। बुद्धि तो बढ़ी है, लेकिन भाव, संवेदनाएँ एवं श्रद्धा खत्म या क्षीण हो गयी हैं। उपभोगवादी संस्कृति ने इन्हें एक प्रकार से अमान्य कर दिया है। आज के युग का हलाहल है—अहंकार, स्वार्थ, संकीर्णता एवं तृष्णा का व्यामोह। इसी हलाहल के प्रभाव से समर्थ एवं सक्षम चिन्तनशील ऋषि की भूमिका निभाने वाला मनुष्य पाशविक एवं पैशाचिक प्रवृत्तियों में तल्लीन हो रहा है। वह संवेदनहीन होकर अपनी सारी ऊर्जा को इसी में खपा कर नष्ट कर रहा है।

नवयुग का सृजन भाव—संवेदनाओं की पृष्ठभूमि पर निर्भर है। भाव—संवेदनाएँ ही करुणा को जन्म देती हैं, और करुणा से उत्पन्न होती है—अहिंसा, दया और अनुकम्पा। अहिंसा कोई थोपी हुयी या क्रय करके दी जाने वाली वस्तु नहीं है, इसका सीधा सम्बन्ध आत्मीयता से है। इसके लिए धर्म पर श्रद्धा, अध्यात्म पर अटूट विश्वास तथा सद्गुरु के प्रति समर्पण का भाव जरूरी है। इसके लिए जरूरी है मन में त्याग एवं तप की इच्छा तथा दिल में परमार्थ भावना की बयार। लेकिन देखने में आता है आज मानव का लक्ष्य मात्र अपने स्वार्थ एवं निजी महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति तक सीमित हो गया है। उसका उद्देश्य भी क्षुद्र बन गया है एवं मानसिकता भी संकीर्ण बनकर रह गयी है। इस प्रकार की संकीर्णता एवं स्वार्थपरता को धीरे-धीरे व्यक्तित्व का

विनाश करने का अवसर मिल जाता है। ऐसे व्यक्ति अपने जीवन का लक्ष्य मात्र विलास, वैभव एवं भोग को मान बैठते हैं और अपने आत्मोन्नति के मार्ग को अवरुद्ध कर लेते हैं। इन्हीं भोगपूरित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए व्यक्ति अपने शरीर, स्वस्थ मन एवं विचारों को तबाह करते दिखाई पड़ते हैं। क्षुद्र विचारों के निरन्तर प्रहारों से उनका मस्तिष्क श्मशान की तरह मनोभावों की जलती चिताओं से भरा रहता है। जिस जीवन को शान्ति, सुख एवं आनन्द के साथ जिया जा सकता है उसी जीवन को वे दुःख का जखीरा बना लेते हैं। क्षुद्रता, संकीर्णता, स्वार्थपरता व्यक्ति के मौलिक गुण नहीं हैं। मौलिक गुण हैं करुणा, धृति, क्षमा, दया, अस्तेय, इन्द्रिय संयम, सत्य, अहिंसा इत्यादि। जो आन्तरिक प्रगति के आधार हैं, जो सार्वभौम हैं, जिनसे मानवता का जन्म होता है। लेकिन ये सभी तभी सम्भव हैं जब व्यक्ति उत्कृष्ट विचारों का चिन्तन करे। आदर्श विचारों में ही व्यक्ति की आत्मा का बिम्ब, प्रतिबिम्ब झलकता है। विचार व्यक्ति की प्रवृत्ति के अनुसार होते हैं, क्योंकि जो जैसा सोचता है वह वैसा ही करता है। अतः अपनी सोच एवं विचारों को शुद्ध रखना जरूरी है। क्योंकि विचार ही व्यक्ति को करुणामय बनाते हैं तथा उसके चारित्र का निर्माण करते हैं।

आज व्यक्ति की लालसा एवं स्वार्थपरता ने उसे संकीर्ण बना दिया है। वह अपनी सारी मर्यादाएँ तोड़कर अपने स्वार्थों को पूर्ण करना चाहता है, इसके लिए वह कुछ भी करने को तैयार हो जाता है। यह सच है, उफनती हुई नदी जब तक अपनी मर्यादाओं की सीमा में बहती है, चहुँओर हरियाली और खुशहाली लाती है, परन्तु सीमा का अतिक्रमण करते ही चहुँओर बरबादी और विनाश का आलम छा जाता है। क्योंकि जब-जब

मर्यादाएँ टूटी हैं विनाशकारी घटनाएँ घटित हुयी हैं। आज युवा पीढ़ी अपनी सभी मर्यादाएँ तोड़कर हट्टे पार कर रही है। स्वतन्त्रता के नाम पर वह स्वच्छन्द एवं उच्छृंखल बन रही है। भोगवाद ने उसका दृष्टिकोण बदल दिया है। उसे हर वस्तु चाहिए, आज नहीं, अभी चाहिए। युवा इसको पाने के लिए हर तरह के समझौते भी कर लेते हैं। वे आज ही उसका भोग करना चाहते हैं। कल का धीरज उनमें नहीं है। इजीमनी की लालसा ने पुरुषार्थ को भी भुला दिया है। ऐसी परिस्थितियों में उनके मन में करुणा के लिए स्थान कैसे सम्भव है?

अगर हम देखें कि मनुष्य के स्वार्थ ने क्या किया है? उसके अहंकार ने क्या किया है? तो स्पष्ट होता है कि स्वार्थ ने मनुष्यता को निगल लिया है, इसने संवेदनाओं को निगल लिया है और हमारे अन्दर यदि संवेदना जगती भी हैं तो हम डर के कारण, उनको दबा देते हैं। हमारी भावनाएँ भय के बोझ के कारण दब गयी हैं। आज अरिहन्तों के वचन, सिद्धों की आवाज तथा गुरु भगवन्तों की देशना हमें समझाती है, जिनवाणी हमें समझाती है, आगम हमें समझाते हैं, लेकिन ये सभी ऊपर से निकल जाते हैं। आज के दौर में संवेदनशील एवं करुणाशील बनने का कोई स्थान नहीं। संवेदनाएँ अब शब्दों में सिमट गयी हैं। केवल इसके शब्द रह गये हैं, अर्थ नहीं। अगर हम देखें तो संसार में मनुष्यता, मानवता, जीवन का रस, एक तरह से सूख गया है, जीवन मुरझा गया है। इन सबका केवल मात्र एक कारण है कि संवेदनाएँ सिञ्चित नहीं हैं, संवेदनाओं में अभि-सिञ्चन नहीं है।

आज सुर्खियों में आता है कि आदमी करुणाहीन बनकर एक-दूसरे का अनीति से फायदा लेने में जुटा हुआ है। फायदे के लिए ही सबके अपने-अपने स्वार्थ हैं, अपने-अपने ढंग हैं, अपनी-अपनी रीति है। लेकिन यह जीवन का अपमान है; सम्मान नहीं। आज हमारे हृदय केन्द्र को जाग्रत करने की आवश्यकता है। जीवन में सबको प्यार की तलाश है, सभी प्यार पाना चाहते हैं और आचाराङ्ग में स्पष्ट है कि कोई भी जीव मरना नहीं

चाहता है, सबको अपना-अपना अस्तित्व प्रिय है, सब को जीने का अधिकार है, लेकिन आज हर कोई शोषण करता है, गुलाम बनाता है, अपने अधीन रखना चाहता है, निर्बल एवं कमजोर को तुच्छ समझता है, उस पर चोट करता है, ये सभी हिंसा की श्रेणी में आते हैं। महावीर ने कहा है कि सभी को अपना जीवन प्रिय है, उसके जीने में सहायक बनें, यदि आप जीवन दे नहीं सकते तो आपको उसे मारने एवं मानसिक प्रताड़ना देने का हक भी नहीं है। मित्रि मे सव्व भूएसू, वेरं मज्झं न केणई अर्थात् मेरे सभी मित्र हैं कोई शत्रु नहीं है, मेरा किसी से वैरभाव नहीं है। ऐसी भावना से मैत्री विकसित होती है। जब सभी जीव मित्र हैं तो वैर नहीं होगा और हिंसा होगी ही नहीं। इससे सभी के प्रति प्रेम भाव होगा। यह सच है जीवन संवेदना से सिञ्चित होता है, किन्तु व्यक्ति इसे सिञ्चित करना ही नहीं चाहते। वे केवल सिञ्चित होना चाहते हैं, प्रेम पाना तो चाहते हैं, लेकिन प्रेम देना नहीं चाहते। हम पुण्य करे बगैर, पुण्य का फल पाना चाहते हैं। शुभ कार्य करना नहीं चाहते हैं, सत्कर्म करना नहीं चाहते हैं, किन्तु सत्कर्मों के परिणाम पाना चाहते हैं। हम पाना चाहते हैं कि हमारे साथ अच्छा-अच्छा होता चला जाये, लेकिन हम अच्छे कर्म करें, अच्छे भाव रखें और अच्छे विचार रखें इसकी आवश्यकता महसूस नहीं होती।

आज हम देखते हैं कि जीवन दुर्दशाग्रस्त है, जीवन संकट में है, मनुष्यता आज संकट में है तो वह इसलिए नहीं है कि कोई बड़ी आपदा आ गयी है, बल्कि कारण यह है कि आज संवेदनाएँ एवं भावनाएँ सूख गयी हैं, बिखर गयी हैं, विक्षुब्ध होकर शुष्क हो गयी हैं। दुनिया में संवेदनाएँ सूखती जा रही है और इसलिए हमें दूसरों की पीड़ा एवं परेशानी भी नज़र नहीं आती। कोरोना महामारी इसी का परिणाम है। घटना दिल्ली की हो या जयपुर की, सड़क पर दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति तड़पता रहता है, कितने ही राहगीर उसे देखकर निकल जाते हैं। कितने ही वीडियो बनाकर वायरल कर देते हैं इस अवधि में वह तड़पकर दम भी तोड़ देता है, लेकिन उपचार हेतु

हॉस्पिटल लेकर नहीं जाते। यही असंवेदनशीलता है, जिसने इन्सानियत को खत्म कर दिया है।

संवेदनशीलता तो वह है, जो दूसरों की पीड़ा एवं परेशानी को अपनी समझे, उसके दर्द में अपने दर्द को देखे। दूसरों का दुःख जब अपना लगने लगे तभी करुणा का जन्म होता है। समाज को आज फिर से संवेदनशीलता और सृजनशीलता की आवश्यकता है, ऐसे में हमें गुरु भगवन्तों की आवश्यकता महसूस होती है। जो समाज पर प्रेम का, एकता का, सरलता का, हृदय की विशालता का, ज्ञान का, कौशल का, कर्तव्य परायणता का, करुणा का एवं संवेदनाओं का सञ्चार कर सकें।

मैत्री और करुणा की परिपालना ही मानवता को श्रेष्ठ बनाती है। जैनदर्शन में आत्मचेतना को सम्यग्दर्शन की संज्ञा दी है तथा सम्यग्दर्शन के पाँच लक्षण-शम, संवेग, निर्वेद, अनुकम्पा और आस्तिक्य बताये गये हैं। जिसकी आत्मा में अनुकम्पा का भाव नहीं, करुणा की धारा नहीं, किसी पीड़ित और सन्तप्त आत्मा को

देखकर सहानुभूति की स्फुरण नहीं होती तो उसमें सम्यग्दर्शन का प्रादुर्भाव भी नहीं हो सकता। सद्गुणों एवं गुणीजनों के प्रति प्रमोद भावना का गुण भी विकसित किया जाये, जिससे दूसरों को हँसते देखकर स्वयं भी खुश हो सके। मानव चेतना की मुख्यधारा है मैत्रीभाव, करुणाभाव और प्रमोदभाव। यही चेतना की विराटता है इसलिये अनुकम्पा और करुणा को सम्यग्दर्शन का मुख्य लक्षण माना है। अतः भीतर से करुणाहीन बनते मानव को करुणाशील एवं संवेदनशील बनने के लिए प्रयास करना है। इसकी पात्रता के लिए सम्यग्दर्शन को समझना होगा। जिसका आधार जिनवाणी है, आगमवाणी है, गुरु के अमृतमय प्रवचन हैं, जिनके माध्यम से भीतर में दबी हुयी करुणा के स्रोत बहने लगे और चहुँओर प्रेम, मैत्री का वातावरण बन सकें। इसी से मानव करुणाशील एवं संवेदनशील बनकर 'मानवता' एवं 'इन्सानियत' का इतिहास पुनः सृजित कर सकता है।

-25, बैंक कॉलोनी, महेश नगर विस्तार-बी,  
गोपालपुरा बाईपास, जयपुर (राज.)

### दुर्लभ दस बोल

श्रीमती अंशु संजय सुराणा

(तर्ज :: मेरी साँसों में तू है समाया....)

जिनशासन में जन्म है पाया,  
भाग्य अपना हाँ हमने सराहा-2  
अब तो श्रद्धा न हो कभी कम,  
प्रभु वीर वचन, बसे तेरे तन मन,  
जीवन का हर क्षण, रहे इसमें मगन....॥टेर॥  
नरकों की अग्नि में झुलसे कभी हम,  
वेदना निगोद की सही है अनन्त जन्म  
वज्र के प्रहार सहे देवगति में,  
तिर्यञ्च के दुःख भी कहाँ थे? कुछ कम।  
निर्जरा की अकाम, हुआ पुण्य उदय,  
तब है पाया मानव भव सा कञ्चन॥

प्रभु वीर वचन.....॥1॥

आर्य क्षेत्र नीरोगी काया, इन्द्रियाँ पूरी,  
कुल पाया उत्तम लम्बी आयु मिली,  
मिला धर्म का श्रवण और मिल गया हमें सन्त समागम  
संयम की राह पे, बढ़ा लूँ क्रदम,  
बस मेरा चले ऐसा ही चिन्तन...

प्रभु वीर वचन.....॥2॥

दुर्लभ दस बोल, प्रभु फरमाते,  
अतिशय पुण्य हो तब कहीं पाते  
इन बोलों का लाभ जो उठाते,  
भवसागर में न गोते खाते,  
मेरी समता बढ़े, आत्मा श्रेणी चढ़े,  
सिद्ध बन जाऊँ मैं भी हाँ एक दिन  
प्रभु वीर वचन.....॥3॥

-एस 149, महावीर नगर, टॉक रोड, जयपुर

## गुरुमहेन्द्रगुणाष्टकम्

श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा. द्वारा वैशाख शुक्ला चतुर्दशी 15 मई, 2022 को महान् अध्यवसायी, भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के 48वें दीक्षा दिवस पर स्व-रचित रचना जनपरिषद् में सुनायी गई, जिसका संकलन श्री धर्मचन्द्रजी जैन, रजिस्ट्रार ने किया है।

-सम्पादक

### शिखरिणीवृत्तम्

उदाहरण-1. यदीये चैतन्ये मुकुर.....

2. असारं संसारं वदति.....

सुतेजःसम्पन्नं मधुरवदनं नेत्रयुगलम्,  
कृपावृष्टिं कुर्वद् गुरुगुणयुता गीश्च शुभदा।  
तथा दिव्यं देहं, रुचिरनवधाराधरनिभम्,  
महेन्द्रो योगीन्द्रो नवतमगणीन्द्रो विजयते॥1॥

जिनका मधुर वदन (मुख) तेज सम्पन्न है, जिनके नेत्र युगल कृपावृष्टि करते हैं, गुरु के गुणों को गाने में लगी हुई जिनकी वाणी शुभता को देने वाली है और जिनका शोभायमान देह सुन्दर नवीन बादलों की (कृष्ण) छवि को धारण करता है। ऐसे मुनियों के स्वामी रत्नसंघ के भावी नवम पट्टधर श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. की जय-विजय हो।

गतामर्षो मर्षे-ण विजनिहर्षेण सहितः,  
समानो निर्मानो ह्युपधिधृतगात्रो निरुपधिः।  
अहो मुक्त्यै तृष्णां दधदपि च तृष्णाविरहितः,  
महेन्द्रो योगीन्द्रो नवतमगणीन्द्रो विजयते॥2॥

अहो आश्चर्य है। ये महापुरुष अमर्ष (क्रोध) रहित होकर भी मर्षोत्पन्न (क्षमाजनित) हर्ष से सहित हैं। स-मान (मान सहित, पक्ष में-सभी पर समान दृष्टि वाले) होकर भी निर्मान (मान रहित) हैं। उपधियुक्त (माया युक्त, पक्ष में-उपधि-उपकरण युक्त) होकर भी निरुपधि (माया रहित) हैं। मुक्ति की तृष्णा धारण करने पर भी तृष्णा रहित हैं। ऐसे भावी नवम पट्टाधिपति योगिराज महर्षि श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. की जय हो।

गुरु हस्तीमल्लं जगति मुनिमल्लं गतमलं,  
गणिं हीराचन्द्रं सततगततन्द्रं परिचरन्।

चरन् ज्ञानं ध्यानं समलभत मानं च मुनिषु,  
महेन्द्रो योगीन्द्रो नवतमगणीन्द्रो विजयते॥3॥

जिन्होंने इस जगत् में सभी मुनियों में श्रेष्ठ और निर्मल जीवन जीने वाले गुरुदेव हस्तीमलजी म.सा., आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. की निरन्तर अप्रमत्तता से सेवा करते हुए और ज्ञान-ध्यान करते हुए मुनियों में सम्मान प्राप्त किया है, ऐसे भावी नवम पट्टस्वामी आचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. की विजय हो।

वयोभि दीक्षाब्दै र्जिनवचनशिक्षादिसुगुणैर्,  
महत्त्वं बिभ्राणः परमपि दधानो गुरुपदम्।  
अहो धात्रीकल्पो लघुमुनिसुसेवां प्रकुरुते,  
महेन्द्रो योगीन्द्रो नवतमगणीन्द्रो विजयते॥4॥

जो उम्र से, दीक्षा पर्याय से, जिनवचनों की शिक्षा (आगमज्ञान) आदि सुगुणों से ज्येष्ठ होकर भी और उत्कृष्ट गुरु पद को प्राप्त करके भी जो धायमाता के समान लघुसाधुओं की सेवा करते हैं। ऐसे मुनियों के नाथ, भावी नवम पट्टविभूषण श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. की जय हो।

विचारे वोचचारे शुभतरसमाचारविषये,  
मनोवाक्कायानां समजनि सुयोगो समतया।  
यथान्तो योगीशो बहिरपि तथा स्वं प्रथयते,  
महेन्द्रो योगीन्द्रो नवतमगणीन्द्रो विजयते॥5॥

विचार, उच्चारण और सदाचार के विषय में जिनकी मन, वचन और काया समान रूप से लगी हुई हैं, अर्थात् जो मन, वचन और काया से एक हैं और जैसे अन्दर हैं वैसे ही स्वयं को बाहर प्रवर्तते हैं, ऐसे योगिराज महर्षि भावी नवमपट्टावतंसक श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. की जय हो।

अदुष्यं वैदुष्यं भुवि विभुप्रभावः प्रभवताम्,  
विशिष्टं वैशिष्ट्यं मधु विधुरयन्ती मधुरता।  
सुपुण्यं नैपुण्यं चरणकरणे जीवितमहो,  
महेन्द्रो योगीन्द्रो नवतमगणीन्द्रो विजयते॥6॥

इनकी विद्वत्ता अदूषित है और इस पृथ्वी पर प्रभावशाली जनों में इनका विशाल प्रभाव है, जिनका वैशिष्ट्य भी विशिष्ट है और मधुरता मधु की भी अवहेलना करने वाली है। चरण-करण (साध्वाचार) में इनका नैपुण्य अनूठा है और इनका जीवन भी सुतरां पवित्र है। ऐसे भावी नवमपट्टधारी मुनीन्द्र महेन्द्र की जय हो।

अहो कीर्तिस्तोमः कलितकलहंसद्युतिरिह,  
यदीयः क्षीराब्धेर्जनयति दविष्टं भ्रममतिम्।  
यशःढक्का यस्योल्बणमतितरां वाद्यत इह,  
महेन्द्रो योगीन्द्रो नवतमगणीन्द्रो विजयते॥7॥

अहो! इस जगत् में जिनका कीर्तिसमूह राजहंस की शोभा को धारण किए हुए है तथा चारों ओर दूर-दूर तक क्षीरसमुद्र होने के भ्रम को उत्पन्न कर रहा है और जिनके यश का नगाड़ा यहाँ पृथ्वी पर अतिशयेन स्पष्ट बज रहा है, ऐसे कुशलवंश के भावी नवम पट्टालंकरण मुनिराज श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. की जय।

प्रपदे शैथिल्यं न हि विषमकाले कलियुगे,  
सवात्सल्यं शिष्यान् निपुणमनुशास्तिं वितनुते।  
स्वपोषां निर्दोषां जिनकथितचर्यां प्रयतते,  
महेन्द्रो योगीन्द्रो नवतमगणीन्द्रो विजयते॥8॥

इस विषम कलियुग में भी जिन्होंने शिथिलता को स्वीकार नहीं किया है। जो वात्सल्य के साथ अपने शिष्यों पर निपुण अनुशासन करते हैं तथा सदैव आत्मा को पुष्ट करने वाली जिनकथित कठिन मुनिचर्या का निर्दोष पालन करने के लिए प्रयासरत रहते हैं। ऐसे भावी नवमपट्टदीपक आचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. की जय हो।

द्रुतविलम्बित वृत्तम्

अधिघटं जलधिश्च किमाविशेत्,  
क्रमयुगैर्विपुलं विपुलातलम्।  
अधिशरावदरं दिनदीपकः,  
करयुगेन वियत् किमु मीयते॥1॥  
गणिवरस्य तथा गुणसंहतिं,  
तनुकृतिश्च कथं मम गाहते।  
इति विचार्य च बालविजृम्भितं,  
सुमतयः सदयं कुरुत क्षमाम्॥2॥

छोटे से घड़े में समुद्र कैसे समा सकता है? दोनों पैरों से इस विपुल पृथ्वी को कैसे मापा जा सकता है? क्या छोटे से सकोरे में सूर्य समाहित हो सकता है? क्या कोई अपने दोनों हाथों से विशाल आकाश को माप सकता है? यदि नहीं, तब फिर मेरी इस छोटी-सी कृति में गणिवर के गुणों की विशाल राशि भी कैसे समा सकती है।

अतः विद्वज्जन मेरे इस कार्य को बालचेष्टा समझकर दयापूर्वक मुझे क्षमा कर दें।

## पूत के पग पालने में

श्री अभय कुमार बाँठिया

प्रसङ्ग है श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ बेंगलूरु द्वारा आयोजित मुमुक्षु सुश्री रेणुजी गुन्देचा (अब महासती श्री रचनाजी म.सा.) के पाट बैठाई का। संघ के स्वाध्याय भवन परिसर में आयोजित समारोह में परिजनों के साथ-साथ अनेक संघों के पदाधिकारी भी पाट बिठाई में आशीर्वाद की कुञ्जी के साथ सहभागी बन रहे थे। मैं भी अपने शान्त-क्रान्ति संघ बेंगलूरु और अलसूर संघ के मन्त्री के रूप में अपने संघ के साथ मुमुक्षु सुश्री रेणुजी के पास

पहुँचा और अनेक शुभकामनाओं के साथ यह भी भावना व्यक्त की कि आपका चेहरा देखकर लग रहा है कि आप रत्नसंघ का नाम खूब रोशन करेंगे। मुमुक्षु ने तुरन्त मुझ से कहा कि नहीं, आप ऐसा कहें कि जिनशासन का नाम रोशन करूँ। जिनशासन है तो रत्नसंघ हैं। मैं अभिभूत हो गया कि अभी से आपकी कितनी निर्मल दृष्टि है, स्तुत्य शासन निष्ठा है। तुरन्त अहसास हो गया कि एक अनमोल रत्न जिनशासन को मिल रहा है। “पूत के पग पालने में” कहावत की महत्ता को स्पष्ट कर रहे हैं।

-अलसूर, बेंगलूरु (कर्नाटक)

## विरक्त से देवराज का संवाद

श्री त्रिलोकचन्द्र जैन

दुनिया बाहर से सुख पाना चाहती है, परन्तु यह कैसे सम्भव है ? जो चीज बाहर में है ही नहीं, वह बाहर से प्राप्त कैसे हो सकती है ? जैसे आकाश पुष्प की कल्पना कोरी है, बालू रेत से तेल प्राप्ति सपना है, वैसे ही पदार्थों से सुख की आशा करना मात्र छलावा है। हम रास्ता ही गलत चुन रहे हैं और फिर दुःख को प्राप्त कर के हताश-निराश हो रहे हैं। हम जितने अंशों में बाह्य पदार्थों में रचते-पचते जायेंगे, उतने ही अंशों में सुख से दूरी बनती चली जायेगी।

प्रत्येक सांसारिक सुख के पीछे दुःख का भय लगा हुआ है। इष्ट-वियोग और अनिष्ट-संयोग का भय संसार में सुखी रहने नहीं देता और आर्त्त-रौद्र ध्यान में धकेल देता है। अतः जहाँ निर्भयता हो, ऐसा स्थान ही सुख का स्थान हो सकता है। यह निर्भयता कहाँ प्राप्त होती है और इसे कैसे प्राप्त किया जाता है ? ऐसे अनेक प्रश्न मन में उभरकर आते हैं। समाधान रूप में आचार्य भर्तृहरि कहते हैं-

भोगे रोग भयं, कुले च्युतिभयं, वित्ते नृपालाद् भयं।  
माने दैन्यभयं, बले रिपुभयं, रूपे जराया भयम्॥  
शास्त्रे वादभयं, गुणे खलभयं, काये कृतान्ताद् भयम्।  
सर्वं वस्तु भयान्वितं भुवि नृणां, वैराग्यमेवाऽभयम्॥

-वैराग्यशतक 31 वाँ श्लोक

भोग में रोग का भय, उच्चकुल में पतन का भय, धन होने पर राजा से भय, मान में दीनता का भय, बल होने पर भी शत्रु का भय, सुन्दर रूप होने पर बुढ़ापे का भय, गुण होने पर दुर्जनों की सङ्गति का भय, शरीर को मृत्यु का भय, इस प्रकार संसार की समस्त वस्तु एवं परिस्थितियों में भय है। एकमात्र अभय का स्थान तो वैराग्य है। मन की वह वृत्ति जिसके अनुसार संसार की

विषय-वासना तुच्छ प्रतीत होती है तथा जिसमें सांसारिक राग परिवर्तित होकर धर्म अनुराग हो जाता है, उसे वैराग्य कहते हैं। वैराग्य जीवन जीने की श्रेष्ठ कला है। कहा भी है-

लग जाता है वैराग्य का चस्का, ज्ञान सुधारस पीने का।  
सारे स्वाद फीके लगते, इस दुनिया में जीने का॥

वैराग्य निस्पृहता का जीवन्त स्वरूप है। वैराग्य सुख का अखण्ड स्रोत है। वैराग्य अपने ज्ञान का समादर है। वैराग्य वीतरागता की सीढ़ी है। महर्षि पतंजलि कहते हैं-

दृष्टानुश्रविकविषयवितृष्णस्य वशीकार संज्ञा वैराग्यम्।  
-पातंजल योगसूत्र 1.15

देखे और सुने हुए विषयों में सर्वथा तृष्णा रहित चित्त की जो वशीकार अवस्था है, वही वैराग्य है।

निर्भयता का एकमात्र स्थान वैराग्य है। परन्तु इस वैराग्य की प्राप्ति किस प्रकार सम्भव है ? दशवैकालिकसूत्र का श्रामण्यपूर्वक अध्ययन कहता है- 'छिंदाहि दोसं विणएज्ज रागं, एवं सुही होहिसि संपराय।' अर्थात् द्वेष का छेदन और राग के त्याग से उत्पन्न वैराग्य ही इस संसार में सुखी बनाता है।

वैराग्य उत्पत्ति में 12 भावनाओं का चिन्तन एक अनिवार्य अंग है। ये भावनाएँ राग के दाग और द्वेष के लेश को मिटाने में सक्षम हैं। उत्तराध्ययनसूत्र के 9वें अध्ययन में वैराग्य की विरल विभूति नमिराजर्षि का देवराज इन्द्र से संवाद 12 भावनाओं के चिन्तन का उदाहरण प्रस्तुत करता है। नमिराज का एक-एक जवाब भावनाओं से भावित था और वैराग्य की अमर कहानी कह रहा था। नमिराजर्षि और देवराज इन्द्र का संवाद वैराग्यपूरित 12 भावनाओं को भाने वाला प्रेरक संवाद है।

**(1) अशरण भावना-**

देवराज-मिथिला में कोलाहल का कारण क्या है?

नमिराज-पक्षीगण के आश्रयस्थल वृक्ष के उखड़ जाने पर जिस प्रकार पक्षीगण कोलाहल करते हैं, उसी प्रकार बहुत से लोगों के उपकारक शरणदाता के चले जाने पर प्रजाजन एवं परिजनों का दुःखी होकर कोलाहल करना स्वाभाविक ही है। लेकिन यह शाश्वत सत्य है कि यदि वायु वेग से वृक्ष उखड़ सकता है तो आयु वेग से प्राण भी छूट सकते हैं। इसलिए मोह-स्वार्थ रूपी शरण की अपेक्षा धर्मरूपी सच्ची शरण ही स्वीकार करनी चाहिए। एकमात्र धर्म ही शरण एवं त्राण रूप है और नहीं परभव का साथी है। मैंने अरिहन्त, सिद्ध, साधु-साध्वी एवं धर्म की सच्ची शरण को स्वीकार किया है। ये अज्ञानीजन सच्ची शरण को नहीं पहचानने के कारण दुःखी होकर कोलाहल कर रहे हैं। इस प्रकार नमिराज अशरण भावना से भावित होकर धर्मरूपी सच्ची शरण से वैराग्य में कदम बढ़ाते हैं।

**(2-3) अनित्य एवं अन्यत्व भावना-**

देवराज-आपका राजभवन एवं अन्तःपुर जल रहा है, इनको क्यों नहीं देख रहे हैं?

नमिराज-जब मैंने जन्म लिया था, तब अकेले ही जन्म लिया था। ये सब संयोग इस भव के हैं और इस भव तक ही रहेंगे। इसलिए इन नश्वर संयोगों के लिए जीवन को लगा देना समझदारी नहीं है। अनित्य का संयोग हुआ, अब इस अनित्य की अनित्यता का बोध करके हमें नित्य की ओर गतिशील होना चाहिए। ये राजभवन, अन्तःपुर आदि सब अनित्य हैं, इनके जलने से मेरे स्वयं का कुछ जलने वाला नहीं है। ये इस भव के संयोग मात्र हैं। अनित्य के जलने से शोक करना पागलपन से ज्यादा कुछ नहीं है। आचार्य हस्ती के शब्दों में-

हम सुख से जीते बसते हैं, नहीं यहाँ हमारा कुछ भी है। मिथिला के जलने से मेरा, जलता न यहाँ पर कुछ भी है।

मिथिला जल रही है, इसमें नमिराज का कुछ भी नहीं जल रहा है, क्योंकि मैं तो इसकी आसक्ति का त्याग कर चुका हूँ। इस प्रकार नमिराज ने अनित्य भावना से पूरित समाधान इन्द्र को दिया।

जीव की शरीर से सबसे अधिक निकटता होती है। शरीर मरणधर्मा है जबकि आत्मा अजर-अमर है। अनादि काल से इस शरीर का आत्मा ने सङ्ग कर रखा है, फिर भी मेरे आत्म-प्रदेशों का एक भी प्रदेश शरीर रूप में परिवर्तित नहीं हुआ। जब अनादि सम्बन्ध वाला यह शरीर भी अन्य है, तो राजभवन आदि की तो बात ही क्या? कहा भी है-

जिस देह में आत्म रहे, वह देह भी जब अन्य है। तब क्या करें उनकी कथा, जो क्षेत्र से भी भिन्न हैं। जो जानते इस सत्य को, वे ही विवेकी धन्य हैं। ध्रुवधाम के आराधकों की, बात ही कुछ अन्य है।

नमिराज ने तन से चेतन की भिन्नता का बोध प्राप्त किया। अपनी आत्मा के सिवाय सभी पदार्थ अन्य हैं, इस ज्ञान को प्राप्त किया। राजभवन-अन्तःपुर के जलने पर उन्हें स्वयं का कुछ भी नुकसान प्रतीत नहीं हुआ। इस प्रकार अन्यत्व भावना को भाते हुए वे शिवमार्ग पर आरूढ़ हुए।

**(4-5) निर्जरा एवं बोधि दुर्लभ भावना-**

देवराज-दीक्षा पूर्व आपको नगर की सुरक्षा करना आवश्यक है।

नमिराज-मैं नगरी की ही सुरक्षा करने जा रहा हूँ, बस फर्क इतना है कि आप मुझे नश्वर नगरी की सुरक्षा के लिए कह रहे हो, पर मैं श्रद्धा रूपी नगरी की सुरक्षा के लिए उद्यत हूँ। मैंने मेरी श्रद्धा रूपी आत्म नगरी का निर्माण किया है, इसकी सुरक्षा के लिए शंका, कांक्षा आदि शत्रुओं का कहीं आक्रमण नहीं हो जाये, इसलिए सजग बना हूँ। गुरुदेव के शब्दों में-

श्रद्धा नगरी वास हमारा, चिन्मय कोष अनूप। निराबाध सुख में झूलूँ मैं, सद्चिद् आनन्द रूप॥ मैं हूँ उस नगरी का भूप, जहाँ नहीं होती छाया धूप॥

मुझे आत्म नगरी में आत्मगुणों की रक्षा करनी है और सुरक्षा कषाय रूपी दोषों से रखनी है। लेकिन इससे पूर्व जिन दोषों ने आत्म (श्रद्धा) नगरी पर बलात् कब्जा कर रखा है, उन्हें निकालना आवश्यक है तब ही मेरी आत्मनगरी सुरक्षित रह पायेगी। इसके लिए मैंने मेरे विकारों से युद्ध छेड़ रखा है। इन दोषों के निस्तारण हेतु मैं निर्जरा भावना से भावित होता हूँ। जिससे इन दोषों की निर्जरा करके जन्म-जरा रहित नगरी को प्राप्त कर सकूँ। अपने कर्म शत्रुओं को पराजित कर हटाने के भाव निर्जरा भावना की चिन्तवना है।

अनादिकाल से पर में सुख मानकर हम पदार्थ की गुलामी ही तो कर रहे थे। कुसंस्कारों का प्रभाव इस कदर हावी था कि आनन्द का अखूट स्रोत स्वयं के भीतर होते हुए भी पद, पैसे, पदार्थ, परिवार आदि में ही आनन्द को खोज रहे थे। इस सम्यक् समझ का अभाव ही दर-दर की ठोकरें खिलाकर, चौरासी के चक्कर लगा रहा था। अब जागृति का सवेरा हुआ है, समझ का सकारात्मक स्वरूप प्रकट हुआ है, दबे सुसंस्कारों ने असर दिखाया है, इस कारण जो बोध दुर्लभ था अब सुलभ हो पाया है। अब सत्य का साक्षात्कार हुआ है। सच्ची सुरक्षा क्या है और स्वयं की शाश्वत नगरी कौनसी है, यह विशेष बोध हुआ है। अब नमिराजर्षि को बोधि दुर्लभ भावना ने बोधित्व सुलभ करवाया है। इस प्रकार नमिराज नगरी और सुरक्षा के स्वरूप से निर्जरा और बोधि दुर्लभ भावना भाते हुए वैराग्य के रंग में आनन्दित हुए जा रहे थे।

#### (6) लोक भावना-

**देवराज**-अपने परिजनों के लिए महल, घर आदि बनाकर प्रव्रजित होना चाहिए।

**नमिराज**-जहाँ अस्थायी मुकाम है वहाँ घर बनाने से क्या मतलब? घर वहीं बनाना चाहिए जहाँ शाश्वत निवास करना हो, मैं इसी श्रेष्ठ कार्य में योजित होने जा रहा हूँ। लोक के अग्रभाग पर स्थित सिद्धों के शाश्वत स्थान पर ही स्थायी निवास स्थान बनाने के भाव से लोक भावना को भाता हूँ। क्योंकि लोक के प्रत्येक

स्थान पर जन्म मरण कर चुका मेरा जीव अब मात्र स्थायी आवास की साधना करना चाहता है। नमिराजर्षि स्थायी आवास बनाने की भावना से मोक्ष की तीव्र अभिलाषा बताते हुए लोक भावना से भावित हो लोकाग्र स्थित होना चाह रहे हैं।

#### (7) आस्रव भावना-

**देवराज**-आप लुटेरों, डाकुओं, तस्करों से नगर की सुरक्षा करके फिर प्रव्रजित होना।

**नमिराज**-जब तक मैं सकषाय अवस्था में हूँ और कषाय के उदय से प्रभावित हूँ, मुझे कर्मबन्ध होता रहेगा। यह कर्मबन्ध चार गतियों में पुनः पुनः परिभ्रमण का कारण बनेगा। इन कर्मों के बन्ध के द्वार जब तक मैं खुले रखूँगा, तब तक जन्म-मरण की परम्परा का अन्त नहीं कर सकता हूँ। कर्मबन्ध के द्वार ही मेरे आत्मगुणों के लुटेरे, डाकू और तस्कर हैं। इनसे रक्षा करने हेतु ही मैं इन कर्मबन्ध के द्वार अर्थात् आस्रव द्वारों को बन्द करने का प्रयास कर रहा हूँ। इस प्रकार आस्रव भावना से भावित होकर आस्रव निरोध के पथ पर अग्रगामी होने से मुझे बाह्य लुटेरों आदि से सुरक्षा करने का कोई प्रयोजन ही नहीं है। इस प्रकार नमिराजर्षि लुटेरे रूपी आस्रवों से अपनी रक्षा करके आस्रव भावना भाने का भाव प्रकट कर रहे हैं।

#### (8) एकत्व भावना-

**देवराज**-विरोधी राजाओं को पराजित करके, उन्हें अधीन कर फिर दीक्षा लेना।

**नमिराज**-बाह्य युद्ध में लाखों सुभटों को जीतने की अपेक्षा जो एक दुर्जय आत्मा है, उसे जीतना कठिन है, परन्तु उसे जीतना ही सच्ची विजय है। एक आत्मा पर विजय पाना, सर्व बाह्य विजयों से भी श्रेष्ठ है। अब तक विषय-कषायों में उलझी हुई आत्मा ही बाह्य विरोधियों का संहार करने की इच्छुक थी। अब आत्मा ने भावनिद्रा का त्याग किया है, इसलिए आन्तरिक शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने को तत्पर हुई है। व्यवहार में भी भीतरघात करने वाले आन्तरिक शत्रुओं को

जीतना दुष्कर ही होता है। इसलिए ही एक आत्मा को जीतना कठिन कहा है। एक आत्मा पर विजय प्राप्त कर एकत्व भावना के भावों से नमिराजर्षि अपने वैराग्य भाव को पुष्ट करते हैं।

#### (9) संवर भावना-

देवराज-यज्ञ कराकर, श्रमण-ब्राह्मणों को भोजन कराकर, विपुल दान देकर फिर मुनि बनना।

नमिराज-परोपकार के सामान्य पुण्य कार्य तो सामान्य जन भी कर सकते हैं, परन्तु जो स्व उपकार करने को तैयार होता है वह षट्काय जीवों का रक्षक बनकर श्रेष्ठ परोपकार भी करता है। पुण्य कार्य करना श्रेष्ठ है, परन्तु जो पाप त्याग रूपी संवर करणी कर रहा है वह कार्य सर्वश्रेष्ठ है। मैं श्रेष्ठ कार्य की अपेक्षा सर्वश्रेष्ठ कार्य के व्यवसाय में आतुर हूँ। पापों के त्याग रूप संवर धर्म को अपनाने के लक्ष्य से मैं छह जीवनिकाय का अभयदाता बन संवर भावना से भावित हो रहा हूँ। जो प्रतिमास लाखों गायों का दान देता है उससे भी संवर को ही उत्तम कहा गया है। दान, पुण्य, यज्ञ आदि कार्यों से भी संवर सामायिक की महत्ता निर्विवाद रूप से बतायी गयी है-

लाख खंड सोना तणी, क्रोड़ वर्ष दे दान।

सामायिक तुल्य नहीं, भाख्यो श्री भगवान्॥

संवर की महत्ता प्रतिपादित कर संवर भावना भाते नमिराजर्षि सभी कार्यों में सर्वश्रेष्ठ संवर रूपी संयम को बताते हैं।

#### (10) धर्म भावना-

देवराज-गृहस्थाश्रम में ही साधना करके कल्याण करो, संन्यास लेने की क्या आवश्यकता है?

नमिराज-गृहस्थ अवस्था में आंशिक आराधना होती है, जो देवलोक तो प्राप्त करा सकती है, पर शाश्वत सुख तो संयम धर्म (दीक्षा) को अपनाने से ही प्राप्त होता है। अनेक जन तो सम्यक्त्व के अभाव में मास-मास भर तप करके पारणे में सुई की नोक पर आये जितना आहार करते हैं तब भी वे संयम (पंच महाव्रत)

धर्म की सोलहवीं कला की भी बराबरी नहीं कर सकते। संयम धर्म की महत्ता है कि वह अज्ञानी साधकों की साधना से बहुत ऊँचा है। इस परिपूर्ण धर्म की आराधना का लक्ष्य रखकर धर्म भावना भाने का भाव नमिराजर्षि प्रकट कर रहे हैं।

#### (11) संसार भावना-

देवराज-आप क्षत्रिय हैं, आपका प्रथम धर्म है सोना-चाँदी आदि से कोष में वृद्धि करना, इसका पालन करके दीक्षा लेवें।

नमिराज-स्वर्ण-रजत, धन-सम्पदा का कोष जीवन में कोई आत्म-विकास का कारण नहीं बनता। मोहान्ध बना प्राणी रात-दिन इस अर्थ की खोज में अनर्थ का कार्य करने में भी शर्म नहीं करता। अर्थ लोभी इस अमूल्य जीवन का सम्यक् अर्थ नहीं समझने के कारण इसे व्यर्थ ही गँवा देते हैं। कहा भी है-सोने-चाँदी के असंख्य पर्वत हों तब भी लोभी मनुष्य की तृप्ति नहीं होती है।

सुवण्णरुवस्स उ पव्वया भवे,

सिया हु केलाससमा असंखया।

नरस्स लुद्धस्स न तेहि किंचि,

इच्छा हु आगाससमा अणंतिया॥

-उत्तराध्ययनसूत्र 9/48

सोना-चाँदी आदि धन सामग्री की प्राप्ति हेतु तत्पर रहना लोभी पुरुष की इच्छा का परिणाम है। स्वर्ण-रजत, रुपया आदि धन सामग्री में रचा-पचा रहना ही संसार है। लेकिन मैंने सत्य को पाया है। यह धन, धरती, वैभव सदाकाल किसी का रहा नहीं है। इनमें जीवन सर्वस्व लुटा देना संसार में संसरण करना है। इस संसरण को मिटाने के लिए संसार भावना भाते हुए नमिराजर्षि वैराग्य की श्रेष्ठता को प्राप्त कर रहे थे।

#### (12) अशुचि भावना-

देवराज-प्रत्यक्ष प्राप्त भोगों को त्यागकर अप्राप्त की इच्छा कर रहे हैं। व्यर्थ के संकल्पों से अपने आपको दुःखी कर रहे हैं।

नमिराज—इन्द्रियजन्य कामभोग इस संसार में भी जीव को तड़फाते हैं और परभव को भी बिगाड़ते हैं। क्षणिक तृप्ति हेतु अमिततृप्ति की उपेक्षा बालक्रिया ही कही जायेगी। भोगों में जीवन बुद्धि मिथ्यात्व है और भोगों में जीवन रस अनन्तानुबन्धी कषाय है। क्या मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धी के वशवर्ती जीव पतन नहीं करेगा? अवश्य करेगा, क्योंकि सांसारिक कामभोग शल्य हैं, विष हैं। ये कामभोग आत्मगुणों का नाश करके मनुष्य को दुर्गति में ले जाते हैं।

भोगों में रोग भय देखो नजारा,

भोगी संसार भमे, दूर किनारा।

भोगों में कर्मलेप, गाढ़ा व काला,

चित्त संभूति कहे, ममता सदा दुःखदायी।

दीक्षा सदा सुखदायी, संयम सदा सुखदायी॥

कामभोग का सम्बन्ध शरीर से है और शरीर अशुचिमय है। अविवेकी मनुष्य ही अशुचि रूपी कामभोगों में मदमस्त रहता है। विवेक जाग्रत होने पर भला कौन अशुचि का त्याग नहीं करना चाहेगा। इस प्रकार अशुचि भावना भाकर नमिराज वैराग्य रंग से रंजित बन रहे थे।

नमिराज संसार से पूर्णतया विरक्त थे। देवराज इन्द्र द्वारा पूछे गये प्रश्नों का समाधान उन्होंने वैराग्य बल से ही दिया। संसार की किञ्चित् भी रति शेष रह जाए तो संयम अवस्था में वह शल्य रूप में चुभने लगती है। व्यक्ति को तो रस की जरूरत रहती है—बाह्य पदार्थों से मिले अथवा भीतर से फूटे। वर्तमान की विडम्बना यही है कि संसार से आंशिक विरक्ति कर, जीव बाह्य पदार्थों, सुख-सुविधाओं का त्यागकर उससे मिलने वाले रस को तो छोड़ देता है, परन्तु पूर्ण विरक्ति नहीं होने के कारण भीतर का रस भी उसे प्राप्त नहीं हो पाता। जिसके कारण वह संयम जीवन में नीरसता, अरसता का अनुभव करता है और त्यागे हुए बाह्य पदार्थों से पुनः रस प्राप्ति की कामना करता है। पूर्ण विरक्तता के अभाव में उसके लिए आनन्द का अखूट स्रोत संयम भी नीरसता का कारण बन जाता है। इसलिए पूर्ण वैराग्य से संयम का पालन ही वीतरागता का मार्ग प्रशस्त करता है। नमिराजर्षि के वैराग्यपूरित समाधान प्रत्येक साधक के जीवन का अङ्ग बने और वे परिपूर्ण वैराग्य से भावित होकर वीतराग बने, ऐसी मंगलकामना करते हैं।

-37/67, रजतपथ, मानसरोवर, जयपुर-302020

(राज.)

### मोबाइल ने बड़ा नुकसान किया है

संकलनकर्ता श्री कविश जैन

आ गया मोबाइल, लो कर लो जी बात।

बातों ही बातों में, पूरी बिताते हैं रात॥

सबको ही बड़ा परेशान किया है।

मोबाइल ने बड़ा नुकसान किया है॥ टेरे॥

बच्चों को तो पूरा आजाद कर दिया,

संस्कारों को भी पूरा बर्बाद कर दिया।

अच्छे-अच्छे को बेजान किया है,

मोबाइल ने बड़ा नुकसान किया है॥1॥

परिवार से तो मानो खार हो गया,

मोबाइल से मानो पूरा प्यार हो गया।

बहुत कम जिसने कि जान लिया है,

मोबाइल ने बड़ा नुकसान किया है॥2॥

अग्नि की हिंसा को जानते हैं जो,

गुरुओं की बात को मानते हैं जो।

जिनवाणी ने ही हमें ज्ञान दिया है,

मोबाइल ने बड़ा नुकसान किया है॥3॥

-ए 9 आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान,

महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015

(राजस्थान)

## अठारह पापों का भारतीय कानून में दण्ड-विधान

श्री अरिहन्त चौपड़ा (एडवोकेट)

### पाप किसे कहते हैं ?

भगवान महावीर फरमाते हैं कि जो आत्मा को मलिन करे तथा जो बाँधते समय सुखकारी और भोगते समय दुःखकारी होता है, वह पाप है। पाप अशुभ योग एवं कषाय से बाँधा जाता है तथा अशुभ प्रकृति रूप है, जिसका फल कड़वा है और यह प्राणी को मलिन करता है।

जैनधर्मानुसार 18 प्रकार का पाप 55 कारणों से बाँधा जाता है और 82 प्रकार से भोगा जाता है। देश और दुनिया में जितने भी अपराध होते हैं, वे सभी आज से हजारों वर्ष पूर्व भगवान महावीर की देशना में बताए गए इन्हीं 18 पाप में समाहित हैं।

भगवतीसूत्र प्रथम शतक के नवमें उद्देशक में भगवान ने फरमाया है कि इन 18 पापस्थानों का सेवन करने से जीव भारी होता है और नीच गति में जाता है। इनका त्याग करने से जीव हल्का होता है और ऊर्ध्व गति प्राप्त करता है। इन पापों को जानकर, पाप के कारणों को छोड़ने से जीव इस भव और परभव में निराबाध परम सुख प्राप्त कर सकता है।

### अठारह पापों का भारतीय कानून में दण्ड

पापों को जानकर उनसे मुक्त होने का प्रयास किया जा सकता है, इसलिये आगमों में पापों का वर्णन किया गया है। जैनधर्म में वर्णित 18 पाप न सिर्फ धार्मिक दृष्टि से त्याज्य हैं, अपितु भारतीय कानून में अपराध की श्रेणी में आने से भी त्याज्य हैं; अन्यथा अपराधी को अपराध की गम्भीरता के हिसाब से कठोर से कठोरतम सज़ा भुगतनी पड़ सकती है।

जैनधर्म में 18 पाप के प्रकार और भारतीय कानून में उनका विवेचन निम्नलिखित हैं—

1. **प्राणातिपात**—किसी भी जीव की हिंसा करना। भारतीय दण्डसंहिता 1860 की धारा 302 में इसे हत्या का अपराध मानते हुए अपराधी के लिए मृत्युदण्ड अथवा आजीवन कारावास का प्रावधान है।
2. **मृषावाद**—असत्य वचन बोलना। व्यक्ति झूठ बोलकर पुलिसथाना और कोर्ट में मिथ्या साक्ष्य देते हैं और निर्दोष लोगों को झूठे आरोपों में फँसाकर उनकी जिन्दगी बर्बाद कर देते हैं। भारतीय दण्डसंहिता 1860 के अध्याय 11 की धारा 191 से धारा 229 क में मिथ्या साक्ष्य और लोक न्याय के विरुद्ध अपराधों के विषय में विभिन्न अपराधों को परिभाषित करते हुए अपराध की प्रकृति के आधार पर कठोर से कठोर दण्ड अथवा जमानत रहित अपराध की श्रेणी में माना है।
3. **अदत्तादान**—किसी से पूछे बिना उसकी वस्तु लेना, चोरी करना। भारतीय दण्डसंहिता 1860 के अध्याय 17 की धारा 378 से 382 एवं धारा 410 से 414 में चोरी के लिए 3 से 10 वर्ष तक के कठोर/साधारण कारावास का प्रावधान है। भगवान महावीर के उपदेश के कुछ शब्द सुनने से रोहिण्येय चोर की दशा पलट सकती है तो हमारे जीवन की क्यों नहीं ?
4. **मैथुन**—असंयमित होकर कुशील का सेवन करना। इसे वर्तमान में यौन अपराध/बलात्कार जैसे गम्भीर अपराध की श्रेणी में मानते हुए भारतीय दण्डसंहिता 1860 की धारा 375 से 376(डी) में तथा पोक्सो एक्ट कानून में आजीवन कारावास अथवा मृत्युदण्ड का प्रावधान है।

5. **परिग्रह**—किसी वस्तु को सञ्चित करना, द्रव्य आदि रखना, ममता रखना। जो वस्तु हमारी आत्मा में क्लेश उत्पन्न करे और उसके मूल स्वरूप में परिवर्तन लाए, जिससे आत्मा अपनी पहचान खो जाये, वह पाप है। अनावश्यक परिग्रह करने वाले व्यक्तियों के विरुद्ध कभी इन्कमटैक्स, कभी जीएसटी विभाग, कभी ईडी, कभी सीबीआई द्वारा आय से अधिक सम्पत्ति को लेकर, आयकर चोरी, जीएसटी चोरी एवं बेनामी सम्पत्ति आदि को लेकर कार्यवाही की जाती है, लाखों-करोड़ों का जुर्माना अधिरोपित किया जाता है और आरोपी को लम्बे समय तक जेल भी जाना पड़ता है।
6. **क्रोध**—खुद तपना, दूसरों को तपाना, अत्यधिक क्रोध करना। क्रोध सभी प्रकार की हानियों की जड़ है और यह पाप का मूल है।  
प्रायः व्यक्ति सभी अपराध क्षणिक आवेश में आकर करता है, फिर अपराध की प्रकृति और सज़ा के प्रावधान को जानकर प्रायश्चित्त करता है, तब तक विलम्ब हो जाता है।
7. **मान**—अहंकार (घमण्ड) करना।  
अहंकार में व्यक्ति एक-दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश करता है, उनमें रज्जिश्में बढ़ती हैं और एक-दूसरे के विरुद्ध आपराधिक कृत्य बढ़ते जाते हैं।
8. **माया**—ठगाई करना, कपट पूर्वक आचरण करना।  
भारतीय दण्डसंहिता 1860 की धारा 415 से 424 तक में छल, धोखाधड़ी, कपटतापूर्वक विलेखों और सम्पत्ति व्ययनों के अपराधों की व्याख्या कर 7 वर्ष तक के कारावास का प्रावधान है।
9. **लोभ**—तृष्णा बढ़ना, अत्यधिक पाने की लालसा करना।  
लोभ और लालच को बुरी बला कहा जाता है। लोभ में आकर व्यक्ति विभिन्न आपराधिक घटनाओं को अञ्जाम देता है। चोरी, लूट, डकैती, धोखाधड़ी जैसे अपराध व्यक्ति लोभवश ही करता है।
10. **राग**—मनोज्ञ वस्तु पर स्नेह रखना।
11. **द्वेष**—अमनोज्ञ वस्तु पर घृणा करना।  
रागद्वेष से वशीभूत होकर व्यक्ति पथ से भ्रमित होकर अनैतिक गतिविधियों में लिप्त हो जाता है और अपनी अनैतिक महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए कानून हाथ में ले लेता है।
12. **कलह**—क्लेश करना।  
कोई व्यक्ति घर में अपनी पत्नी से क्लेश करे तो घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण अधिनियम 2005 के तहत यह अपराध है। अन्य से क्लेश करे और शान्ति भङ्ग करे तो यह धारा 107, 151 दण्ड प्रक्रिया संहिता के तहत अपराध है। जिसके लिए क्लेश कर शान्ति भङ्ग करने वाले को गिरफ्तार कर कार्यपालक मजिस्ट्रेट द्वारा पाबन्द किया जा सकता है।
13. **अभ्याख्यान**—किसी पर झूठा कलंक लगाना।  
भारतीय दण्डसंहिता 1860 की धारा 182 और अध्याय 11 में धारा 191 से 211 में मिथ्या साक्ष्य और लोक न्याय के विरुद्ध अपराधों के विषय में वर्णन है तथा अलग-अलग समय के कारावास के प्रावधान हैं।
14. **पैशुन्य**—दूसरों की चुगली करना।
15. **परपरिवाद**—दूसरों का अवर्णवाद (निन्दा) करना।  
कई बार दूसरों की चुगली और परपरिवाद उनके लिए मानहानिकारक होते हैं, जिसे भारतीय दण्ड-संहिता 1860 की धारा 499 में परिभाषित किया गया है तथा धारा 500 के अनुसार जो कोई किसी अन्य व्यक्ति की मानहानि करेगा वह व्यक्ति 2 वर्ष तक के साधारण कारावास और जुर्माने से दण्डित होता है।
16. **रति**—अरति—पाँच इन्द्रियों के 23 विषयों में से मनोज्ञ वस्तु पर प्रसन्न होना और अमनोज्ञ वस्तु पर

नाराज होना।

रति-अरति की भावना रखने वाला सदैव अपनी रुचि के अनुसार कार्य होने पर प्रसन्न रहता है और अहिंसक रहता है, लेकिन अपने विपरीत कार्य होने पर नाराज होकर हिंसा एवं अपराध का सहारा लेता है।

17. मायामृषावाद-कपट सहित झूठ बोलना। कपटसहित झूठ यानी किसी के साथ धोखा करना, भारतीय दण्डसंहिता 1860 की धारा 420 और अध्याय 11 में कपट करने वालों के लिए सजा का प्रावधान है।

18. मिथ्यादर्शन-असाधु को साधु समझना। कुदेव,

कुगुरु, कुधर्म पर श्रद्धा रखना।

असाधु, कुगुरु और कुधर्म सदैव व्यक्ति को अन्याय, कुमार्ग एवं दुराचार का व्यवहार सिखाते हैं। जो ऐसी बातें सीखता है वह अपने जीवन में कभी न कभी अन्याय, कुमार्ग तथा दुराचरण के कारण आपराधिक कृत्यों को करता ही है और उसे जेल जाना पड़ता है।

इस प्रकार उपर्युक्त वर्णित 18 पापों को छोड़ देने से ही जीव की मुक्ति सम्भव होती है और कानूनन अपराधी होने से बचा जा सकता है।

-5 डी 11, न्यू हाउसिंग बोर्ड, पाली (राज.)

### एकाग्रता

डॉ. नरेन्द्रकुमार जैन (प्राचार्य)

मोक्ष-प्राप्ति के लिए तप साधना जरूरी साधन है। तपस्या कर्मों से छुटकारा पाने का साधन है। तपस्या से पूर्व अन्तरंग और बहिरंग परिग्रह का त्याग करना होता है, तभी मन को स्थिर और एकाग्र रखा जा सकता है। तप के लिए मन, वचन और काय की एकाग्रता आवश्यक है। आत्म-साधना के लिए हम मौन धारण करते हैं। मौन की साधना सभी नहीं कर पाते। हमारा मन तभी एकाग्र रह सकता है जब संसार न दिखाई दे। अतः कहा जाता है कि बन्द आँखों से ध्यान करने से मन की एकाग्रता बढ़ जाती है। अतः तपस्वी जन ध्यान करते समय पद्मासन मुद्रा में आँखें बन्द कर ध्यान लगाते हैं ताकि जगत् पर नजर न जाये। योगविदों विशेषकर जैन योगियों का कहना है कि जब हम नासाग्र दृष्टिक होते हैं अर्थात् हमारी दृष्टि नासिका के अग्रभाग पर होती है तब संसार का एक कण भी हमें दृष्टिगोचर नहीं होता। जैनधर्म में इसे आत्मध्यान कहते हैं जो आत्म-साधना के निमित्त किया जाता है।

मन की शान्ति के लिए मन को तनावमुक्त

रखना हर प्राणी का कर्तव्य है। कहा गया है-मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः। अर्थात् मनुष्यों का मन ही शान्ति के लिए कारण है। मन को साधना इसलिए आवश्यक है ताकि आप लक्ष्य प्राप्त कर सकें। मन भटकेगा तो जीव लक्ष्य से भटक जायेगा। मन शान्त नहीं है तो मिलने वाली सफलताओं में आपका मन नहीं लगेगा। अतः सफलता के लिए भी मन की एकाग्रता पर ध्यान केन्द्रित रखना चाहिए। मन लक्ष्य पर केन्द्रित है तो वचन मौन हो जाते हैं तथा शरीर भी क्रियारहित हो जाता है। इस तरह मन, वचन और काय की एकरूपता होने पर हम जिस मनोरथ की पूर्ति के लिए ध्यान लगाते हैं, तपस्या करते हैं तो उस लक्ष्य की पूर्ति हो जाती है। अतः मनोरथों की पूर्ति के लिए एकाग्रता की उपयोगिता स्वयंसिद्ध है। जैनाचार्य कहते हैं कि स्वार्थपूर्ति के लिए नहीं मोक्ष रूपी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए व्यक्ति को एकाग्रता पूर्वक मन को धर्म में लगाना चाहिए ताकि तन का सदुपयोग भी हो और शरीर से आत्मा की भिन्नता का बोध भी हो।

-ए 27, नर्मदा विहार, सजावद (मध्यप्रदेश)

## अंगूर खट्टे हैं

महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. की सुशिष्या महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. द्वारा सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा, जोधपुर में 24 अप्रैल, 2022 को अपने प्रवचन में फरमाए गए बिन्दुओं का संकलन श्री महेशजी रांका ने किया है।

-सम्यादक

1. बचपन में कहानी पढ़ी थी। एक लोमड़ी जो अंगूर की बेल पर लटकते अंगूरों को खाने के लिए बहुत देर तक प्रयास करती है। अधिक ऊँचाई पर लटके हुए अंगूर नहीं मिलने पर वह Declare करके निकल जाती है कि अंगूर खट्टे हैं।
2. अंगूर खट्टे हैं यह घोषणा तीन सन्देश देती है-(A) Give your 100% (B) Try your best, if not then rest. (C) Change your ground.
3. लोमड़ी भी अंगूर का लालच छोड़ आगे निकल गयी, इसी कारण वह Clever (होशियार) कहलाती है।
4. हर व्यक्ति हर क्षेत्र के लिए योग्य नहीं होता, पर हर व्यक्ति हर क्षेत्र के लिए अयोग्य भी नहीं होता।
5. अंगूरों के गुच्छे को पाने के लिए लोमड़ी ने 100% पुरुषार्थ किया, उसके बाद ही उसने यह declare किया कि अंगूर खट्टे हैं।
6. जब किसी क्षेत्र में पुरुषार्थ प्रारम्भ करें, तब ही यह निश्चित कर लेना चाहिए कि हम किस स्तर तक प्रयास करेंगे।
7. साल भर पढ़ने के बाद अंक अच्छे नहीं आये, महीने भर मेहनत करने पर भी सौदा नहीं पटा, पूरी ताकत लगाने पर भी प्रतियोगिता में नहीं जीते तो यही सोचें अंगूर खट्टे हैं।
8. हर योग्य को हर योग्य वस्तु मिलती है। अगर हमें कुछ प्राप्त नहीं हुआ तो हम यही समझें कि अभी इसको पाने की योग्यता नहीं है।
9. Taking U turn is not settingback, it is moving ahead.
10. एक चीज नहीं मिली तो Upset क्यों, वैसे भी हर चीज हर व्यक्ति के पास नहीं होती।
11. कभी-कभी ऐसा भी होता है कि आप जिसे चाहते रहते हैं वह चीज आप से दूर भागती रहती है। जब चाहना बन्द कर देते हैं तो वह आपको चाहती हुई आपके चरणों में आ गिरती है।
12. हलवा बनाने की सारी सामग्री लेकर हलवा बनाने बैठे और पाँच-सात बार पटोलिया ही बनता गया। ऐसी स्थिति में अच्छा है किसी से हलवा बनाना सीख लें।
13. जीवन में Perfect driver वही है जिसे straight चलाना भी आता है तो U-Turn लेना भी आता है। जो समय के साथ समझ जाए और Grapes के लिए Next park में चला जाए वही Winner होता है।
14. जब किसी की सेवा में पूरे सजग रहे, फिर भी कोई Satisfied नहीं हुआ, हमने उपकार किया और उन्हें Realize ही नहीं हुआ, किन्हीं के दिल में प्रवेश नहीं मिला तो Never say अंगूर खट्टे हैं।
15. कोई अंगूर खट्टा हो या मीठा, उस पर मैत्री रखें। स्वयं तो हर एक के लिए मीठा अंगूर ही बनकर रहें। कल्पना करें कि एक बार चिड़ियाघर के सारे जानवर होली डे के लिए सिंगापुर गये। सभी में अच्छी दोस्ती थी। एक-दूसरे को मारने-खाने की स्थिति नहीं थी। वहाँ एक होटल में रुके। चूहों ने योजना बनाई कि हम सभी वाटर पार्क चलते हैं, वहाँ मस्ती करेंगे।

सारे सफेद चूहे बहुत ही सुन्दर दिखते थे। सभी समूह बनाकर निकल पड़े। एक बिल्ली ने उनके पास आकर पूछा कि क्या मैं भी तुम्हारे साथ चलूँ? उन्होंने मना कर दिया। हम बिल्ली के साथ जाएँगे तो हमारी बेइज्जती हो जाएगी। लोग सोचेंगे कि तुम हमें लेकर आई हो। बिल्ली उन्हें कहती है कि तुम्हारे साथ जाने से तो मेरी बेइज्जती होगी कि डरपोक चूहों के साथ घूमने आई है।

फिर बिल्ली ने बन्दरों से पूछा-आप सब कहाँ जा रहे हों? बन्दरों ने उत्तर दिया कि हम साइकिलिंग करने मरीना बेसन्स जा रहे हैं। बिल्ली ने पूछा-“मैं तुम्हारे साथ चलूँ?”

बन्दरों ने कहा-“नहीं, हमारे तो दो हाथ और दो पैर है मस्त साइकिल चलाएँगे, तुम्हारे तो चार पैर हैं, तुम क्या साइकिल चलाओगी।” बिल्ली भी वहाँ से यह कहकर निकल जाती है कि तुम्हारे साथ चलकर मेरी इज्जत घट जाएगी कि इन बन्दरों के साथ घूमने एक सुन्दर बिल्ली आई है। तब वह सोचती है कि अब मैं क्या करूँ तो फिर वह शेर से पूछती है कि तुम अपने साथ ही केसिनो ले चलो। शेर ने कहा-“अरे! हम जंगल के राजा हैं, तेरे साथ कैसे जाएँगे।” बिल्ली ने उत्तर दिया-

“मैं भी बिल्ली रानी हूँ, कम नहीं।”

शेरों के साथ बिल्ली केसिनो में जाती है। वहाँ दरवाजे पर खड़ा व्यक्ति यह कहकर रोक देता है कि बिल्ली की उम्र कम है। बिल्ली वहाँ से लौट गयी। वह आनन्द से उछलती हुई पार्क में जाकर बैठ गयी।

वहाँ एक धनाढ्य परिवार घूमने आया। वह बिल्ली को देखकर बहुत ही ज्यादा आकर्षित हो गया। इतनी सुन्दर सफेद बिल्ली तो कभी देखी ही नहीं। वे उसे गोद में उठाकर अपने घर ले गये। सभी ने बहुत प्यार से उसे सजाया, गहने और बेशकीमती कपड़े पहनाये। वह एक गोद से दूसरी गोद में आनन्द ले रही थी। उसने इच्छा व्यक्त की कि मुझे जू (चिड़ियाघर) जाना है। वह राजकुमारी के जैसे वॉक करती हुई पूरे चिड़ियाघर में घूमी। सभी जानवर उसे देखते रह गये।

उस परिवार ने चिड़ियाघर वालों से उसे खरीद लिया। उसने अपना पूरा जीवन रानी के जैसे बिताया।

शिक्षा-बिल्ली अगर चूहे, बन्दर और शेर द्वारा अस्वीकृत करने पर अपना ग्राउण्ड परिवर्तन नहीं करती तो वह जीवन में सफल नहीं हो पाती। बिल्ली ने उस समय बोला अंगूर खट्टे हैं और बाद में उसकी पूरी जिन्दगी मीठी हो गयी।

## जिनवाणी पर अभिमत

(1) डॉ. हेमन्त कुमार शर्मा

मैं जिनवाणी का अनेक वर्षों से नियमित पाठक हूँ। पत्रिका के लगभग समस्त आलेख सारगर्भित और समसामयिक रहते हैं। अप्रैल 2022 के अंक का सम्पादकीय 'मानसिक स्वास्थ्य' पर आधारित था, जिसमें समस्त आयामों और पहलुओं पर विस्तारपूर्वक विवेचन किया गया। चिन्ता, चिन्तन, कर्मवाद पर आलेख विशिष्ट रहे। डॉ. धर्मचन्द्रजी जैन का अंग्रेजी में शोधालेख विस्तृत, व्यापक रूप से वैज्ञानिक था। संस्कृत-प्राकृत के उद्धरण समीचीन रहते हैं।

-प्रोफेसर, मनोविज्ञान, जोधपुर

(2) श्री डी. राणमल जैन

मुझे मेरे एक दोस्त के माध्यम से मार्च 2022 की जिनवाणी पत्रिका का अंक मिला, पढ़कर बहुत खुशी हुई। इसमें प्रकाशित लेख आत्मविकास के सूत्र, अनमोल समय को व्यर्थ न जाने दें, व्यावहारिक जीवन के नीति वाक्य, सुगुरु-अगुरु आदि एक से एक बढ़कर हैं, जिनसे ज्ञान की प्राप्ति होती है। ऐसे तो मैं रोज सुबह 5 से 7.30 बजे तक स्वाध्याय करता हूँ। लेकिन जिनवाणी के धार्मिक लेख पढ़ने से धार्मिक ऊर्जा पैदा होती है और एक अच्छे श्रावक बनने की प्रेरणा मन में उमंग लाती है।

-Chief Editor Dhakale Patrike, Harapanahalli-583131 (Karnataka)

## अनमोल मोती (3)

श्री पी. शिखरमल सुराणा एवं श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'

35. संयोगों को कर्म के खाते में और भविष्य को परमात्मा पर डाल दो।
36. अन्तर में स्वभाव दृष्टि और बाहर में सदाचार वृत्ति से ही आत्मिक विकास सम्भव है।
37. पुण्य के उदय में इच्छानुकूल परिणाम होता है।
38. वर्तमान की पाप प्रवृत्ति भविष्य के पुण्य को अपने में संक्रमित कर लेती है।
39. सत्कार्यों से उपार्जित पुण्य आगे बढ़ने के लिए मिला है, यदि इसका उपयोग विषयों में हुआ तो दुर्गति तैयार है।
40. प्राप्त अनुकूल-प्रतिकूल संयोगों में उदासीन भाव धर्म है।
41. प्रतिकूलता धर्म में बाधक नहीं है। भयंकर कष्टों के बीच में रहने वाले नारकी जीवों में से कोई नारकी भी सम्यक्त्व का उपार्जन कर सकता है तो मनुष्य क्यों नहीं कर सकते? मनुष्य को तो नारकी जितनी प्रतिकूलता मिलना सम्भव ही नहीं।
42. तुम शरीर में इसलिए नहीं हो कि शरीर ने तुम्हें चुना है, बल्कि तुम शरीर में इसलिए हो क्योंकि तुमने शरीर चुना है।
43. क्षमा क्रोध के विपरीत नहीं है, बल्कि क्षमा क्रोध का अभाव है।
44. मोक्षमार्ग का तीव्र अभिलाषी बना हुआ जीव जब परमात्मा के बताये हुए मार्ग की तलाश में निकलता है तो उसे अन्यत्र कहीं सन्तोष प्राप्त नहीं होता, कहीं अन्धपरम्परा चल रही है, कहीं कदाग्रह का जाल बिछा हुआ है, कहीं वाद-विवाद का संघर्ष है तो कहीं बाह्य-आडम्बर का बोलबाला है, कहीं शब्द-आडम्बर के लम्बे-लम्बे जाल हैं। तब वह जीव वीतरागी महापुरुष अथवा उनकी वाणी का आलम्बन लेकर अपने स्वरूप प्राप्ति के पुरुषार्थ में लग जाता है, किन्तु कुपथ को कभी स्वीकार नहीं करता।
45. प्रभु पथ के शोध में निकले हुए आनन्दघनजी कह रहे हैं कि संसार में कुतर्कों का ऐसा जाल बिछाया हुआ है, जिसमें मेरे सुतर्कों का प्रवेश होना शक्य नहीं है। सन्मार्ग की राह पर स्वयं चलने वाले और दूसरों को भी राह बताने वाले सद्गुरु जगत् में विरले हैं।
46. मुझे भेदविज्ञान द्वारा आत्मस्वरूप को प्राप्त करना है। किसी भी कार्य की सिद्धि समय आने पर ही होती है। आज का बोया हुआ बीज आज ही फल देने में समर्थ नहीं बनता है, उसके लिए समय की प्रतीक्षा करनी पड़ती है और सिञ्चन-संरक्षण आदि का प्रयत्न भी करना पड़ता है। समय की प्रतीक्षा के साथ-साथ सम्यक् पुरुषार्थ भी चाहिए।
47. अतीत का विचार और भविष्य की चिन्ता यही वर्तमान दुःख का कारण है।
48. मानव अपरिचित सुख से दूर रहता है, इसी कारण परिचित दुःख को छोड़ना नहीं चाहता।
49. भगवान फरमाते हैं कि मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धी कषाय का 700 वर्ष तक सेवन करने से ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती सातवीं नरक में 33 सागरोपम तक रहेगा। 700 वर्षों की जितनी श्वासें होती हैं उनमें से 1 श्वास के कल्पित सुख के बदले 11 लाख 65 हजार 765 पल्योपम का दुःख भोगेगा।
50. राग तो करे जीव और आरोप लगाये कर्मों के ऊपर, यह तो सरासर अन्याय है।



## Christian Vegetarianism

*Sh. Rayappa A. Kasi*

Christian vegetarianism is as old as the religion itself. Christianity, beginning with the early Christians have largely supported the idea that it was wrong to eat meat, and regarded ethical vegetarianism as a competing idea. During the time of Jesus Christ there were three prominent sects that were practicing vegetarianism that banned the animal sacrifice: Nazoreans, Ebionites and Essenes. They existed during the early centuries of the Common Era.

The first Christians were known as the Nazoreans (not to be confused with Nazarenes), and the Ebionites were a direct offshoot from them. Ebionites as a term refers to a sect who were vegetarians, viewed poverty as holy, believed in ritual ablutions, and rejected animal sacrifices. Knowledge about how the Nazoreans, Ebionites and Essenes lived suggests that Christ was probably a vegetarian. The Essenes were Jews who were remarkably similar to the early Christians as evinced in their de-emphasis upon property and wealth, their communalism and in their rejection of animal sacrifices. All three groups were vegetarian which is suggestive of the central role such a practice once played in Early Christianity.

Early Christian writers such as Jerome, Basil the Great, Origen, Tertullian, and Clement of Alexandria were all vegetarians; all the apostles abstained from meat and wine (Eusebius, *Proof of the Gospel* 3.5), and vegetarians were "without number" in the early church (St. Augustine, *Of the Morals of the Catholic Church* 33).

The early Christian fathers adhered to a

meatless regime...many early Christian groups supported the meatless way of life. In fact, the writings of the early Church indicate that meat eating was not officially allowed until the 4th century, when the Emperor Constantine decided that his version of Christianity would be the version for everyone. A meat eating interpretation of the Bible became the official creed of the Roman Empire, and vegetarian Christians had to practice in secret or risk being put to death for heresy. It is said that Constantine used to pour molten lead down their throats if they were captured.

Given the above points, it is reasonable to believe that vegetarianism would be consistent with, if not mandated by, the spirit of early Christianity, a spirit that advocated kindness, mercy, non-violence and showed disdain towards wealth and extravagance. Meat eating would hardly have been considered the way of the humility, non-extravagance and love for all of God's creation. Hence, the orthodox early church father, Christian Hieronymous, could not but be compelled to conclude :-

"The eating of animal meat was unknown up to the big flood, but since the flood they have pushed the strings and stinking juices of animal meat into our mouths, just as they threw quails in front of the grumbling sensual people in the desert. Jesus Christ, who appeared when the time had been fulfilled, has again joined the end with the beginning, so that it is no longer allowed for us to eat animal meat."

Then there came Gnostic religions that were openly promoting the practice of vegetarianism. **Gnosticism** is a collection of religious ideas and systems which coalesced in

the 2nd century AD among early Christian sects and left its influence all the way to the middle ages. To cite one example: in southern France a group of Albigensian vegetarians (a Catharist religious group) were put to death by hanging in 1052 because they refused to kill a chicken! Catharism was the first major religion started in Europe that preached vegetarianism and nonviolence.

Gnostic movement between the 12th and 14th centuries which thrived in Southern Europe, particularly in northern Italy and southern France faced persecution from the Catholic Church. From the mid-12th century onwards, Italian Catharism came under increasing pressure from the Pope and the Inquisition, "spelling the beginning of the end".

In 1809, William Cowherd, a Christian minister from Salford, England promulgated the doctrine that people should "eat no more meat till the world endeth" and abstain from alcoholic drinks. His early ideas and insight into the abstinence from eating meat, provided the basis for early ideas about vegetarianism.

In recent times, when we talk about the Christian vegetarianism, we tend to focus our attention on the Seventh-day Adventist Church, that was started in United States during the mid-19<sup>th</sup> century and it was formally established in 1863. The church places an emphasis on diet and health, including adhering to Kosher food laws (Jewish laws), advocating vegetarianism, and its holistic view of human nature—i.e. that the body, soul, and spirit form one inseparable entity.

Since its inception, wholeness and health have been an emphasis of the Adventist church. Adventists are known for presenting a "health message" that advocates vegetarianism. The Seventh-day Adventist Church is currently "one of the fastest-growing and most

widespread churches worldwide", with a worldwide baptized membership of over 21 million people, and 25 million adherents. As of May 2007, it was the twelfth-largest religious body in the world, and the sixth-largest highly international religious body. It is ethnically and culturally diverse, and maintains a missionary presence in over 215 countries and territories.

The Adventist Health Studies indicate that the average Adventist in California lives 4 to 10 years longer than the average Californian. The research concludes that Adventists live longer because they do not smoke or drink alcohol, have a day of rest every week, and maintain a healthy, low-fat vegetarian diet that is rich in nuts and beans. The cohesiveness of Adventists' social networks has also been put forward as an explanation for their extended lifespan.

We have a tendency to imagine that vegetarianism is deeply rooted in three of the prominent religions practiced in India – Hinduism, Jainism and Buddhism. However, looking the above arguments, it is safe to say, that Christianity also in lesser degree has practiced vegetarianism throughout its history.

Such practice was made possible for them not only through their own inception, but in my view, through the cultural exchanges of the time, such as trade, religion and philosophy. Historical evidence suggests that Christianity from the beginning was a beneficiary of such exchanges like art, music, philosophy, theology, lifestyle influenced by Jain and Buddhist ethics, which promoted the vegetarianism that banned the animal sacrifice, then it was promulgated by Ashoka the Great in the 3<sup>rd</sup> century BCE, throughout the Mauryan Empire.

I want to conclude this paper illustrating the impact of 2000 year old debate on vegetarianism. In 2020, Pope Francis, the

leader of the Catholic Church has recommended vegetarianism as a lifestyle to almost 2 billion Christian followers. The Dicastery for promoting integral human development from Rome has issued a statement from the Pope that needs to be quoted in full: “sobriety in the use of resources and energy, avoid single-use plastic, adopt a more plant-based diet and reduce meat consumption,

greater use of public transport and avoid polluting modes of transportation, etc.”

Email: [rayappa.kasi15@gmail.com](mailto:rayappa.kasi15@gmail.com) Website: [www.planetschaser.com](http://www.planetschaser.com)

Rayappa A. Kasi is a Catholic priest belonging to the diocese of Vellore. He has written 15 books on various subjects including, ecology, environment, biology, human evolution, ecotheology, deep ecology so on and so forth. His books can be downloaded from his website, free of cost: [www.planetschaser.com](http://www.planetschaser.com).

## ज़िन्दगी की पाठशाला

### भारती जैन

ज़िन्दगी की पाठशाला में क्रम-क्रम पर हम कुछ नया सीखते हैं। सीखने के माध्यम प्रत्येक व्यक्ति के लिए भिन्न-भिन्न हो सकते हैं। किसी असाध्य बीमारी से युवा बेटे का देहावसान हो जाने पर एक माँ या तो जीवन पर्यन्त इस बात की शिकायत करती रहे कि मेरे बेटे को भी क्यों दूसरों की तरह साधारण जीवन जीने का अवसर नहीं मिला? दूसरा पक्ष यह भी है कि वह इस बात पर सन्तोष व्यक्त करे कि मुझे सेवा-शुश्रूषा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और इन परिस्थितियों से गुजरते हुए करुणा, धैर्य, साहस, सेवा-भाव और त्याग जैसे भाव भीतर में विकसित हुए हैं। जीवन को सकारात्मक ढंग से देखने का यह भी एक नज़रिया है। कुछ इसी तरह के भाव व्यक्त करती हुई एक माँ की बेटे को श्रद्धाञ्जलि है।

जो तुम न आते जीवन में मेरे  
रूप सुदर्शन, बुद्धि अनुपम  
दुनिया से जुदा पहचान लिए  
निर्मल निश्छल मुस्कान लिए  
छोटी-सी उम्र में दर्द का दरिया समेटे  
जो तुम न आते जीवन में मेरे।  
कितने अहसास, कितने जज्बात  
दिल में गहरे उतर नहीं पाते

यूँ ही बीत जाता जीवन  
चलते-चलते सुख की ठण्डी छाँव तले  
जो तुम न आते जीवन में मेरे।  
कहाँ से आई शक्ति  
किसने दिया हौंसला मुझे?  
दुःख हो या सुख  
हँसते-हँसते रहने का  
हर मुश्किल का हल ढूँढने का  
किसने सुझाया रास्ता?  
कौन सिखाता मुझे?  
जिन्दगी जीने का यह फलसफा  
जो तुम न आते जीवन में मेरे।  
कैसे जान पाती मैं कि  
दर्द में भी मुस्कुराया जाता है  
जब परिस्थितियों पर अपना वश न चले  
किस्मत भी जैसे गम का लबादा उठाती चले  
तब धैर्य का दामन कैसे थामा जाता है?  
कौन पढ़ाता मुझे?  
करुणा, साहस और विश्वास का यह पाठ  
जो तुम न आते जीवन में मेरे।  
यूँ ही बिन पढ़े पलट जाते कितने पन्ने  
ज़िन्दगी की किताब से  
जो तुम न आते जीवन में मेरे।

-महारानी फार्म, जयपुर

## धर्मसङ्गत हो डॉक्टरी पेशा

श्री जयदीप ठड्डा

अपने पेशे में कदम रखते ही चिकित्सकों को एक शपथ लेनी होती है। वह यह कि वे मरीज के स्वास्थ्य को प्राथमिकता देंगे और उनकी निजता का सम्मान करेंगे। उनकी बात किसी को नहीं बतायेंगे। यह शपथ यूनानी चिकित्सक हिप्पोक्रेटस के नाम से विश्वभर में ली जाती है। अब कहा जा रहा है कि भारत में नए चिकित्सक यही शपथ महर्षि चरक के नाम से लेंगे। इस शपथ में भी मरीज के स्वास्थ्य को प्राथमिकता और उनकी निजता को सम्मान देने की बात है। सवाल यह नहीं है कि डॉक्टर किसके नाम से शपथ लें, बल्कि यह है कि क्या वे अपनी शपथ पर कायम हैं। डॉक्टर को हम भगवान मानते हैं। प्राण संकट में होने पर अगर कोई किसी को जिन्दगी देता है तो वह डॉक्टर है। मरीजों का सही इलाज करके उन्हें उपयुक्त दवाएँ देकर वे उनकी जान बचाते हैं। डॉक्टरी पेशे में कई बार ऐसे पल आते हैं जब लोग अपनी बीमारी के ठीक होने की उम्मीद छोड़ देते हैं, उन्हें जीने की आशा नहीं रहती है उस वक्त मौत को मात देकर डॉक्टर जिंदगी बचा लेते हैं। डॉक्टरी पेशा भी एक सेवा है। पर आजकल सेवा का भाव कम ही डॉक्टरों में दिखाई दे रहा है। यहीं से यह पेशा बदनाम होने लगता है।

मरीज को परेशानी तब होती है जब डॉक्टर खूब सारे टेस्ट लिख देते हैं। हो सकता है यह किसी रोग की गहराई से जाँच के लिए जरूरी हो, पर कभी-कभी अनावश्यक टेस्ट भी लिख देते हैं। कई ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ डॉक्टर इस बात को स्वीकार करते हैं कि वे डायग्नोस्टिक सेण्टर के व्यवसाय को प्रोत्साहन देने के लिए अनावश्यक टेस्ट भी लिख देते हैं। बदले में इन डॉक्टर को उनसे कमीशन की मोटी रकम मिलती है। यह बात छिपी नहीं है कि डायग्नोस्टिक सेण्टर डॉक्टरों के

लिखे टेस्टों पर ही चलते हैं। ये डॉक्टर मरीजों से फीस कम लेते हैं, पर अपना हिसाब बेहिसाब टेस्ट लिखकर पूरा कर लेते हैं। एमआरआई और सीटी स्कैन में 50 प्रतिशत तक और एक्सरे, ब्लड टेस्ट और बोन डेन्सिटी टेस्ट में 25 से 30 प्रतिशत कमीशन प्रति बिल ले लेते हैं। कुछ प्रतिष्ठित डायग्नोस्टिक सेण्टर हर बिल पर कमीशन नहीं देते हैं। उनकी ओर से डॉक्टर को अग्रिम मासिक राशि बैंधी हुई होती है। डायग्नोस्टिक सेण्टर के अलावा उनका कमीशन दवा की दुकानों और दवा निर्माता कम्पनियों के साथ भी बैंधा होता है। (स्रोत : द हिंदू-डॉक्टर्स एंड देयर मनी मेकिंग मन्त्र)

अक्सर हम देखते हैं कि जिस क्षेत्र में डॉक्टर बैठते हैं, वे अपने आसपास की दुकानों की दवाएँ लिखते हैं। उनकी लिखी दवाएँ हमें अन्य जगह उपलब्ध नहीं हो पाती। हद तो तब होती है जब टेस्ट किए बिना लेबोरेटरी द्वारा रिपोर्ट दे दी जाती है। डॉक्टर की रिश्तत खाने की यह बढ़ती भूख अन्ततः मरीजों पर भारी पड़ती है। उन्हें भुगतना पड़ता है, जेब से भी और शरीर से भी। ऐसा होने पर डॉक्टर से भरोसा उठ जाता है। डॉक्टरों का यह रवैया न तो धर्मसङ्गत है और न ही कानूनसङ्गत।

इण्डियाडाइज्स डॉट कॉम ने अपने एक आलेख में निजी अस्पतालों की कुछ ऐसी भयावह घटनाओं का जिक्र किया, जिसमें अस्पतालों ने पैसों के लिए मरीजों को बेवकूफ बनाया। जब तक मरीज अस्पताल की भारी भरकम फीस देता रहता है, वे इलाज करते हैं, पर जैसे ही उनकी भुगतान की सामर्थ्य नहीं रहती, अस्पताल से जबरन छुट्टी दे देते हैं, यह कहकर कि वह अब ठीक है। पर दरअसल फीस जमा नहीं कर सकने के कारण वे मरीज को घर भेज देते हैं, चाहे वह मर ही क्यों न जाए। कुछ घटनाएँ ऐसी भी हैं, जिनमें इस कारण मरीजों की

मौत हो गई।

जिसे हमने भगवान का रूप माना, क्या वह ऐसा ही होता है? क्या सिर्फ पैसा कमाने के लिए डॉक्टरी पढ़ाई की थी? ऐसा प्रायः देखा गया है कि डॉक्टरी की पढ़ाई के लिए भारी राशि जमा करवानी होती है तो वह डॉक्टर बनकर उस पैसे को जल्द से जल्द वसूल करना चाहता है। आलीशान बंगले और विदेशी गाड़ियाँ होने के बावजूद उनका लालच कम नहीं होता। दूसरी ओर

कई गरीब मरीजों के पास इलाज कराने के पैसे नहीं होते। ऐसे में डॉक्टर का कर्तव्य बनता है कि वह गरीबों के इलाज में उदार दिल रखें। नीति द्वारा कमाया हुआ धन डॉक्टर को भी फलेगा तथा ईश्वर की कृपा और गरीब मरीज की दुआएँ उनके साथ होंगी। उनके परिवार में खुशहाली रहेगी। उनके काम और स्वभाव का नाम होगा। दूर-दूर से लोग उन्हें दिखाने आएँगे।

-ढड्डर मरकेट, जौहरी बाजार, जयपुर-302003

## सज्जनता

### प्रोफेसर मंगलचन्द टाटिया

एक अमीर व्यक्ति राजा के पास आया और कहने लगा कि मुझे नगर सेठ बना दो फलस्वरूप उपहार में मैं आपको ढेर सारी दौलत दूँगा। राजा ने सुना, उपहार लिया और उसे नगर सेठ बनाकर नगर सेठ में घोषणा करवा दी। नगर सेठ बनने के लिए उसे बहुत कुछ नहीं करना पड़ा, दौलत दी और राजा से नगर की उपाधि प्राप्त कर ली। यहाँ दौलत ने अपना करिश्मा दिखाया। न ही कोई साधना और न ही कोई विशेष प्रयास दौलत के प्रभाव से नगर सेठ बन गया।

एक दिन राजा के पास एक विद्यार्थी आया और कहा कि मुझे विद्वान् बना दो मैं उपहार में ढेर सारा धन आपको दूँगा। राजा ने कहा विद्वान् तुम बन सकते हो, पर उसके लिये गुरुकुल में अध्यापक के पास जाना पड़ेगा। अध्ययन की कठोर साधना करनी पड़ेगी। अध्यापक के कहे अनुसार गुरुकुल में अपने जीवन को ढालना होगा। धीरे-धीरे तुम्हारी बुद्धि कुशाग्र होगी एवं सोच में वृद्धि होगी। राजा के कहे अनुसार विद्यार्थी गुरुकुल गया, अध्यापक को प्रणाम किया, चरण स्पर्श किया और उनका शिष्य बनकर उनके कहे अनुसार अध्ययन की साधना में जुट गया। कुछ समय में अध्यापक ने उसे सारी विद्याएँ सिखाई और एक दिन उस नगर का विद्वान् व्यक्ति बन गया। राजा ने नगर विद्वान् की उपाधि से उसे विभूषित किया। इस प्रकार नगर सेठ की उपाधि प्राप्त करने के

लिए धन का उपहार काम आ गया, लेकिन विद्वान् बनने के लिए तो स्वयं का पुरुषार्थ ही काम आया।'

इंग्लैण्ड का जेम्स नाम का एक राजा था, वह नगरवासियों को बहुत-सी उपाधियों से अलंकृत करता था। ब्रिटिश काल में अंग्रेजों ने भी भारत के अनेक प्रख्यात नागरिकों को रायबहादुर, दीवान बहादुर, सोने निवासी जैसी अनेक पदवियों से अलंकृत किया। एक बार एक प्रतिभाशाली पुरुष राजा जेम्स के पास आकर कहने लगा कि आप मुझे सज्जन बना दो और सज्जनता की उपाधि से अलंकृत करके नगर में घोषणा करवा दो। उस व्यक्ति की बात सुनकर राजा हक्का-बक्का रह गया और मन में चिन्तन करने लगा कि इसे कैसे 'सज्जन' बनाऊँ और किस रूप में 'सज्जनता' की उपाधि दूँ। थोड़ी देर बाद राजा ने कहा कि मैं तुम्हें सज्जन नहीं बना सकता, किन्तु मैं तुम्हें लार्ड बना सकता हूँ, चार्ल्स बना सकता हूँ, इयूक बना सकता हूँ ये सारी उपाधियाँ दे सकता हूँ, पर सज्जन बनाने में असमर्थ हूँ। धन-दौलत से व्यक्ति खरीदा जा सकता है, उपाधियाँ दी जा सकती हैं, पर सज्जनता व्यक्ति की व्यावहारिकता, विनय, समदृष्टि एवं धर्मगुरुओं का सान्निध्य, परिवार के शुद्ध वातावरण से ही प्राप्त हो सकती है। सज्जनता आरोपित नहीं होती। बल्कि सज्जनता अन्तर मन से होनी चाहिये और वही व्यक्ति सज्जन की संज्ञा से सम्बोधित किया जा सकता है।

-91, ए.पी.आर. कॉलोनी, कटंगा, जबलपुर

## दो भाई : दो दिशाएँ

श्री मोहन कोठारी 'विन्नर'

जीवन में प्रतिदिन धर्म-साधना बहुत जरूरी है। शुद्ध मन एवं शुभ भावों से की हुई साधना-आराधना फलदायी और शान्ति-समाधि देने वाली होती है। लेकिन जब हम अपने वास्तविक जीवन पर दृष्टिपात करते हैं तो देखते हैं कि हमारा जीवन दिन-रात विषय-भोगों में रचा-पचा रहता है। भोगों में लिप्त यह जीवन शनैः शनैः विषाक्त बन जाता है। जीवन अनेक दुःखों से भर जाता है। भोग तो किम्पाक फल की तरह होते हैं, जिनके परिणाम अत्यन्त दुःखदायी होते हैं। भोगों को भोगकर खुश नहीं होना चाहिए, नहीं तो एक दिन भोग तुम्हें भोगने लग जाएँगे। भोग एक तरह का नशा है। भोगों में खोकर व्यक्ति बेभान हो जाता है। भोगों में आसक्त मत बनो। भोगों से दूर रहना ही श्रेयस्कर है। भोग से योग की ओर मन को मोड़ने का पुरुषार्थ करो। पंछी स्वतन्त्र रूप से गगन में विहरण करता है। पंछी की तरह यदि मुक्त होना चाहते हो तो भोगों को त्याग दो। भोग एक पिञ्जरा है जो घातक है। भोगों के दरवाजे बन्द करने से ही मोक्ष मञ्जिल प्राप्त की जा सकती है।

जैसे लिफ्ट के दरवाजे को बन्द करके ही मनचाही मञ्जिल पर जाया जा सकता है, ठीक वैसे ही भोगों के आस्रव द्वारों को बन्द करने से ही सद्गति की मञ्जिल तक पहुँचा जा सकता है, मोक्ष-मञ्जिल को पाया जा सकता है।

उदाहरण-कण्डरीक और पुण्डरीक दो भाइयों का है। दोनों भाइयों ने अलग-अलग समय में संयम ग्रहण किया था। सर्वप्रथम कण्डरीक ने दीक्षा ग्रहण की। वर्षों तक कठोर संयम का पालन किया। एक बार अपने गृह नगर की जनता ने उनसे पधारने की विनति की। कण्डरीक मुनि वहाँ पधारे। कण्डरीक मुनि के सांसारिक छोटे भाई राजा पुण्डरीक ने आपके कृश शरीर को

देखकर कहा कि आपका शरीर कठोर साधना से बहुत कमजोर हो गया है, आप शरीर के प्रति थोड़ा ध्यान दें। आहार में कुछ अच्छे पुद्गल लें, जिससे आपकी कमजोरी दूर हो सके। कण्डरीक मुनि अपने सांसारिक भाई पुण्डरीक और जनता के आग्रह को ध्यान में रखते हुए आहार में अच्छी वस्तुएँ लेने लगे। धीरे-धीरे उनका रसनेन्द्रिय पर नियन्त्रण कम होता गया। साधु से स्वादु बन गये। पुद्गलों की आसक्ति से उनकी संयम साधना कमजोर पड़ गई और वे कालान्तर में शिथिलाचारी हो गये। संयम के प्रति उनकी श्रद्धा शनैः शनैः घटती चली गई और एक दिन वे गृहस्थ जीवन में आ गये। भाई मुनि की यह दशा देखकर पुण्डरीक को बहुत आघात लगा कि मेरा भाई संयम से च्युत हो गया है। इस घटना ने उनके चिन्तन को झकझोर कर रख दिया। भाई मुनि ने ऐसा करके जिनशासन की हीलना की है। ऐसा करने वालों से जिनशासन बदनाम होता है, साथ ही परिवार भी बदनाम होता है।

पुण्डरीक ने बिना किसी विलम्ब के बदनामी के इस धब्बे को धोने के लिए दीक्षा लेने का दृढ़ निश्चय किया। मन में ठान लिया कि दृढ़ता से संयम को पालकर जिनशासन को दिपाऊँगा। पुण्डरीक दीक्षा ग्रहण करने के कुछ दिनों में ही कालधर्म को प्राप्त हो गये और सर्वश्रेष्ठ देवलोक में उत्पन्न हुए। शुभ भावों से संयम पालने के कारण कुछ दिनों में ही पुण्डरीक मुनि श्रेष्ठ अनुत्तर विमानवासी देव बने। इधर दूसरी ओर कण्डरीक अपने मन की निर्बलता के कारण गृहस्थ पर्याय को स्वीकार कर पुद्गलों की आसक्ति के कारण कुछ दिनों के अन्दर काल करके सातवीं नारकी के मेहमान बने।

सीढ़ी पर खड़ा हुआ पुरुष थोड़ी-सी भूल करे तो वह नीचे जमीन पर आ गिरता है। मामूली-सी भूल

भयंकर दुःख पहुँचाने वाली होती है। अतः चारित्र्य में तो भूल अक्षम्य ही मानी गई है। एक हजार वर्ष तक संयम पालकर रसलोलुपता के कारण कण्डरीक ने कुछ दिनों में ही अपने संयम को लुटा दिया। संयम में शिथिलता आना ही पतन का मार्ग है।

इस संसार के दुःखों से मुक्त होने के लिए प्रभु ने उत्तम जिनवाणी का उपदेश दिया है। जैसे टू व्हीलर, फोर व्हीलर एवं प्लेन आदि गुम हो सकते हैं, लेकिन ट्रेन कभी-भी गुम नहीं हो सकती, क्योंकि ट्रेन पटरी पर चलती है। पटरी पर चलने वाली गाड़ी अपने गन्तव्य स्थान तक पहुँचती है। ठीक वैसे ही हम हमारे जीवन की गाड़ी को सही दिशा में चलाएँ तो वह मोक्ष मञ्जिल को प्राप्त कर सकती है।

आत्मदर्शन में जो आनन्द है वह निराला है। अपने

ज्ञान चक्षुओं से दर्शन करो, संसार की असारता समझ में आ जाएगी और आत्मदर्शन का महत्त्व भी समझ में आ जाएगा।

भोगों में क्रन्दन है,

योगों में आनन्द है,

राख में घी डालने से घी खराब हो जाता है। ठीक वैसे ही संसार के अन्दर भोगों में आसक्त रहने से जीव का अहित हो जाता है।

सुभूम चक्रवर्ती एवं ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती भी भोगों में रचे-पचे रहने के कारण नरकगति के मेहमान बने।

हम इस आलेख से शिक्षा ग्रहण करें कि भोगों को त्यागकर अपनी धर्म-साधना में दृढ़ बनें, जिससे हमारा यह दुर्लभ मानव जीवन सार्थक हो सके।

-जन्ता साड़ी सेण्टर, फरिश्ता कॉम्प्लेक्स, स्टेशन रोड़, दुर्ग-491001 (छत्तीसगढ़)

## लक्ष्य का सतत अनुसरण

*जितेन्द्र चोरड़िया 'प्रेक्षक'*

लक्ष्य है निर्वाण तो, यह प्रयत्न करना चाहिए, प्रयास इसकी प्राप्ति हेतु, नित्य करना चाहिए। खुद की प्रतिभा सारी इसमें, झौंक देना चाहिए, लक्ष्य स्मृति से कभी, ओझल न होना चाहिए।।टेर।।

श्रेष्ठ हो यदि लक्ष्य तो क्या, कष्ट और बाधा करे? राह इनको लें बना, हम नित्य ही आगे बढ़ें। हो परिस्थिति कैसी भी, उत्साह बढ़ना चाहिए, लक्ष्य स्मृति से कभी, ओझल न होना चाहिए।।1।।

रास्ते में लक्ष्य के गर, शूल हों तीखे पड़े, हो रहे हों लुहान लहू से, पैर फिर भी न रुकें। रक्त से इतिहास, राहों में रचाना चाहिए, लक्ष्य स्मृति से कभी, ओझल न होना चाहिए।।2।।

आँधी और तूफान में भी, हम गति में व्यस्त हों, मन-गगन में धैर्य का, सूरज कभी न अस्त हो।

लक्ष्य यात्रा शौर्य से, नित जगमगाना चाहिए, लक्ष्य स्मृति से कभी, ओझल न होना चाहिए।।3।।

अपनी अन्तर शक्तियों को, देखें अन्तर्चक्षु खोल, ध्येय का साहस तुला में, देखें करके नित्य तोल। गन्तव्य से पहले नहीं, विश्राम करना चाहिए, लक्ष्य स्मृति से कभी, ओझल न होना चाहिए।।4।।

ऐसा सत्पुरुषार्थ हो, उत्साह और उल्लास हो, हर कदम अब उस दिशा में, वेग से गतिमान हो। न थके तन-मन कभी, संकल्प यह रहना चाहिए, लक्ष्य स्मृति से कभी, ओझल न होना चाहिए।।5।।

है प्रतीक्षा में हमारी, लक्ष्य स्वागत में खड़ा, पहुँचने को लक्ष्य तक, करते रहें श्रम हम कड़ा। अपने प्रण से प्रेरणा, संसार पाना चाहिए, लक्ष्य स्मृति से कभी, ओझल न होना चाहिए।।6।।

-स्री-16-1, कृष्ण-कुंज, हलेड़ रोड़, भीलवाड़ा-311001 (राज.)

## जल संरक्षण और पर्यावरण चेतना

डॉ. एन. के. खींचा

जैन संस्कृति अहिंसा प्रधान है। इस संस्कृति में प्रत्येक जीव की संरक्षा को अहिंसा बताया गया है। यह चेतना केवल मनुष्यों, पशु, पक्षियों या कीट-पतंगों तक सीमित नहीं है, बल्कि वनस्पति, पृथ्वी, जल, अग्नि तथा वायु में भी स्वीकार करती है। जल भी एक स्पर्शनिन्द्रिय सहित एकेन्द्रिय जीव है। कहा भी गया है जल ही जीवन है। जैन संस्कृति के अनुसार समस्त जीवों को भरपूर सम्मान एवं उन पर समभाव इसलिये नहीं कहा कि उनका अधिकार है, बल्कि इसलिये कहा है कि जैन संस्कृति का आधार अहिंसा है। यही पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण है। सूत्रकृताङ्गसूत्र (1/1/4/10) में कहा गया है- “ज्ञानी होने का सार यह है कि किसी भी जीव की हिंसा नहीं करें।” प्रश्नव्याकरणसूत्र (2/1) में कहा गया है- “अहिंसा सब प्राणियों का कुशलक्षेम करती है।”

जैन विज्ञान के अनुसार पानी की बूँद (Drop) में असंख्यात अप्कायिक जीव होते हैं। डॉ. (सर) जगदीशचन्द्रजी बसु (30 नवम्बर, 1858-23 नवम्बर, 1937) भारत के प्रसिद्ध वैज्ञानिक रहे हैं। उन्होंने 10 मई, 1901 में यह सिद्ध किया कि पेड़-पौधों में भी जीवन होता है। अब विज्ञान भी यह मानता है कि पानी की एक बूँद में 36,450 जीव होते हैं। इसी तथ्य को ब्रिटानी कैप्टन स्कॉर्सबी ने गंगाजल के एक नमूने का सूक्ष्मदर्शी यन्त्र से निरीक्षण कर बताया कि जल बूँद में त्रसकाय के 36,450 और वनस्पतिकाय के जीव देखे गये। जल जीव की संरचना एक जालीनुमा सूक्ष्म बेलनाकार नेनो ट्यूब के सदृश होती है।

जैन संस्कृति में इन्द्रिय को 5 प्रकार का बताया गया है। पाँच इन्द्रियों में स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और श्रोत्र है। जीव के विकास क्रम में सबसे निचले सोपान पर

एक इन्द्रिय वाले जीव हैं, जिनमें स्पर्शनिन्द्रिय ही होती है। इनको एकेन्द्रिय जीव भी कहते हैं। एकेन्द्रिय जीवों को पाँच भागों में बाँटा जा सकता है। यथा-पृथ्वीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक एवं वनस्पतिकायिक। ये सभी स्थावरकायिक जीव हैं जिनमें सुख-दुःख की प्रवृत्ति भी होती है।

### अप्काय

जो जीव पानी रूप शरीर वाले हैं उन्हें अप्काय कहा जाता है। जैन संस्कृति में जल की उपयोगिता एवं महत्त्व पर गम्भीरता से प्रकाश डाला गया है। जल जीवन है, रोग नाशक एवं आयुवर्धक है। जल को दूषित करना गलत माना गया है। क्योंकि जैनदर्शन की दृष्टि से जल सजीव तत्त्व है, जिसमें अप्काय के स्थावर जीव हैं। जल के आश्रय में वनस्पतिकायिक के स्थावर तथा त्रसकाय के जीव पलते हैं। जल प्रदूषण से अप्काय की हिंसा होती है। जैन संस्कृति के नायक ने लाखों वर्षों पूर्व यह ज्ञान दिया कि पानी की एक बूँद में असंख्य जीव होते हैं। अतः बिना कारण पानी कभी नहीं गिराना एवं पानी को बर्बाद नहीं करना। पानी में खेलना नहीं चाहिए। पानी का उपयोग कम से कम करना चाहिए ताकि जल रूपी प्राकृतिक संसाधन की बचत हो सके। इससे अपने आप पानी का प्रदूषण भी कम होगा। एक बूँद जल भी व्यर्थ नीचे नहीं गिरे अथवा फालतू बहकर न चला जाय। ऐसी मानसिकता जल की बूँद के प्रति समाज में भी विकसित की जानी चाहिए। अतः हर समय जागरूक रहकर, मितव्ययी बनें, अल्पारम्भी बनें। विवेक रखें, ताकि जल का अपव्यय न हो। यही अहिंसक जैन जीवनशैली है। जल के प्रति उदासीनता और लापरवाही को सामाजिक-आपराधिक लापरवाही न बनने दें।

कच्चे पानी की एक बूँद में असंख्य अप्काय एकेन्द्रिय जीव होते हैं। इन जीवों का जघन्य आयुष्य भी 48 मिनट से कम होता है। वे जीव उतने समय में मर जाते हैं तथा दूसरे उत्पन्न हो जाते हैं। इनका उत्पत्ति-विनाश चलता ही रहता है। गरम पानी अर्थात् प्रासुक जल में यह उत्पाद-व्यय की प्रक्रिया अधिक समय के लिए रुक जाती है। यह पानी प्रासुक एवं शुद्ध हो जाता है। ऐसे प्रासुक जल के उपयोग से असंख्य जीवों का संरक्षण हो जाता है। जितने पानी की आवश्यकता हो, उतना ही पानी का उपयोग करना पर्यावरण संरक्षण के लिए आवश्यक है।

इसी प्रकार साबुन, डिटर्जेंट पाउडर आदि का उपयोग भी अत्यन्त सीमित मात्रा में विवेक सम्मत होकर करना चाहिए, क्योंकि इनसे असंख्यात जीवों की हिंसा होती है।

इसी तरह गर्म पानी में ठण्डा पानी नहीं मिलाना चाहिए। गीजर में अनछना पानी गरम होने से असंख्य त्रस जीव जलकर मर जाते हैं। वाटर कूलर में भी असंख्य त्रस जीवों की विराधना होती है।

पानी के बर्तन खुले छोड़ने से उनमें त्रस जीव गिरकर मर जाते हैं। पानी अधिक समय तक एक ही जगह पड़ा रहे तो उसमें पञ्चेन्द्रिय जीव तक भी उत्पन्न होने की सम्भावना रहती है। अतएव सावधानीपूर्वक, विवेक से पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण जैन संस्कृति के अनुसार कर सकते हैं।

आचार्य सोम के अनुसार प्राणी जगत् को स्वस्थ रखने वाली अनेक औषधियाँ तो जल में ही उपलब्ध हैं—अप्सु मे सोमो अब्रवीत् अन्तर्विश्वानि भेषजा। अर्थात् जल का अत्यधिक दुरुपयोग करने से अप्काय के सूक्ष्म जीवों को कष्ट होगा, जल के जीवों की हिंसा भी होगी। अतः जल के जीवों का सम्मान करें। मितव्ययता से जल का सदुपयोग करें।

जैन परम्परा में जल के परिमित (Limited) उपयोग पर ध्यान दिया गया है। नदियों में स्नान से पाप धुलते हैं, ऐसी मान्यताओं का जैन संस्कृति खण्डन

करती है।

जल स्नान के बारे में जैन ग्रन्थों में कहा गया है कि अज्ञात जल स्थान में, मलिन वस्तुओं से दूषित जल में, वृक्षों से ढके हुए जल में, शैवाल से युक्त जल में स्नान न करें। जल गालन के लिए उपभोग में लिया जाने वाला छन्ना (कपड़ा) 36 x 24 इंच लम्बा-चौड़ा तथा उसे भी दो पट करके उपयोग में लेना चाहिए। यदि पानी उबाल लें तो 24 घण्टे तक पानी में जीव उत्पन्न नहीं होंगे। प्रासुक जल ग्रहणीय है। सामूहिक पेय जल हेतु सर्वत्र छने हुए पानी का उपयोग करना चाहिए। जैनदर्शन में सम्यग्दर्शन को निर्मल, स्वच्छ जल के समान माना है। पेयजल शुद्ध, गालित या प्रासुक को अच्छा माना गया है। अल्प से अल्प मात्रा में जल का सदुपयोग करना ही पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण है।

पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण के लिए जैन शास्त्रों एवं जैनाचार्यों का कथन है कि बिना कारण पानी का कभी भी दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। पानी का अत्यन्त सीमित मात्रा में उपयोग करना चाहिए। इससे हमारे एक महत्त्वपूर्ण जीवन्त (Vital) प्राकृतिक संसाधन (Natural Resource) की बचत (Saving) होगी।

जैन संस्कृति ने सहस्र-सहस्र शताब्दियों पूर्व वनस्पति, पृथ्वी, जल, अग्नि एवं वायु में चेतना को स्वीकार कर सम्मान दिया है। जल भी एक स्पर्शनेन्द्रिय वाला स्थावर जीव है। जिसका मितव्ययतापूर्वक उपयोग किया जाना अपेक्षित है। किन्तु आधुनिक युग में जल का अन्धाधुन्ध उपयोग/प्रयोग/दुरुपयोग हो रहा है। जिससे जल की कमी हो रही है एवं प्रदूषण भी बढ़ रहा है, जो कि गहन चिन्ता का विषय है। जैन संस्कृति का प्रयोजन पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण के लिए जल के दुरुपयोग को रोकना है।

जैन संस्कृति में जल संरक्षण हेतु करुणा एवं अनुकम्पा को विशेष स्थान दिया गया है। ताकि मानव के मस्तिष्क में बदलाव आये और पानी के प्रति समाज सम्मानपूर्वक दृष्टिकोण अपनायें। पानी की एक-एक बूँद को बेकार समझने को सामाजिक अपराध समझें।

वस्तुतः जैन संस्कृति अत्यन्त प्रायोगिक है, जहाँ सभी जीवमात्र की रक्षा का प्रावधान है। गृहस्थ जीव में मैत्री (Friendliness) प्रमोद, कारुण्य एवं माध्यस्थ भावना का झरना बहता रहे तब स्वतः ही हिंसादि विभिन्न सावद्य प्रवृत्तियों से बचा जा सकेगा। इसीलिये जैन संस्कृति में यतना (Precautions) का विधान है। गृहस्थ में रहते हुए यतनापूर्वक प्रवृत्तियाँ करने से जीवों की विराधना भी नहीं होती और पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण भी बना रहता है। दशवैकालिकसूत्र 4.8 में कहा भी गया है—

जयं चरे जयं चिट्टे, जयमासे जयं सए।

जयं भुंजंतो भासंतो, पावकम्मं न बंधइ॥

इसीलिये जैन श्रावक-श्राविका सावद्य (दोषपूर्ण) प्रवृत्ति को त्यागते हैं तथा निरवद्य (हिंसादि के दोष से रहित) प्रवृत्ति को अपनाते हैं। इसी में पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण का सार निहित है। अर्थात् अपने विवेक से कर्म/कृत्य करें ताकि दोषपूर्ण प्रवृत्ति (प्रदूषण) से बच सकें। प्रदूषणकारी प्रवृत्ति से बचने के लिए प्रथमतः भाव हिंसा से बचना पहली प्राथमिकता है।

#### जल प्रदूषण एवं संरक्षण

जल को प्रदूषण से मुक्त रखने के लिए तथा जल का विवेक से सीमित उपयोग करने हेतु जैन संस्कृति के अमूल्य ग्रन्थों में आचार संहिता (Code of conduct) उपलब्ध है।

जैन परम्परा में प्राचीन काल से अवधारणा रही है कि नदी, तालाब, बावड़ी, कुएँ आदि में प्रवेश करके स्नान, दातोन, मल-मूत्र आदि का विसर्जन नहीं करना चाहिए। क्योंकि जल में शारीरिक मल आदि विजातीय तत्त्व जाकर मिलते हैं, उनसे भी बहुतायत से जलीय जीवों की हिंसा होती है तथा जल भी प्रदूषित होता है। जैनमुनि/श्रमण/साधु आज भी अक्सर यह व्रत दिलाते हैं कि नदी, कुएँ बावड़ी में प्रवेश कर स्नान आदि न करें। नहाने हेतु सीमित जल को बाल्टी आदि में लेकर जल का उपयोग करना चाहिए। किन्तु आज भी पाँच सितारा होटलों की संस्कृति में व्यक्ति पहले से पचास गुना

अधिक जल का असावधानी, लापरवाही तथा विवेकशून्य होकर उपयोग करते हैं, जो कि अपव्यय है तथा प्रदूषण फैलाते हैं।

शोधानुसार ज्यादा साफ सुथरी तकनीक (Green Technology) से भस्मी जल अर्थात् धोवन जल अधिक स्वास्थ्यकर है। गोबर भस्म (राख) के घुलने से बने धोवन जल को निथार कर तथा छानकर, अमृत तुल्य जल को उपयोग में लेने से पर्यावरण संरक्षण होता है। इस जल की पी.एच. गुणांक 8.2 से 8.4 होती है। यह क्षार गुण वाला और निर्जीव भी होता है। इस उपचारित जल को पीने से कैंसर रोग भी टलेगा तथा हड्डियों का क्षरण भी नहीं होगा। पानी के अल्प उपयोग एवं पुनरुपयोग (Re-use) से पानी का दुरुपयोग स्वतः रुकेगा।

शोधों से यह भी ज्ञात हुआ कि प्लास्टिक बोतल में बन्द पानी में जानलेवा टॉक्सिस हो सकते हैं। प्लास्टिक बोतल पॉली इथालिन टेरे फेथालेट से बनी होती है। जिसमें एंटमनी रसायन टॉक्सिक केमिकल होता है। बन्द बोतल के पानी में एंटमनी मानक दुगना हो जाता है। प्लास्टिक बोतल के पानी में 78 प्रतिशत घातक हार्मोन्स सक्रिय रूप से पाये जाते हैं, जो कि गम्भीर प्रदूषण कारक होते हैं। ये अन्तःसावी ग्रन्थियों के जरिये नपुंसकता पैदा करते हैं।

#### जल संरक्षण में सहयोगी-जल गालन

जैन संस्कृति में जल को छानकर प्रयोग में लेना श्रावक की क्रियाओं में शामिल है। निर्धारित विधियों से शुद्ध किया गया, जीवरहित जल प्रासुक कहलाता है। प्रासुक जल को अचित्त जल भी कह सकते हैं। इस जल में असंख्य अप्कायिक और असंख्य त्रसजीव नहीं रहते जो सामान्य जल या सचित्त जल में रहते हैं।

जल छानने की साधारण व्यवहृत विधि कूप, बावड़ी, नदी आदि के जल को कपड़े से छानने की है। यह विधि प्रत्येक जैन परिवार में अपनाई जाती है। जिससे 'छन्ना' जैणियों की पहचान बन गया है। लवंग, हरड़ आदि से प्रासुक किया हुआ जल 6 घण्टे से अधिक तक

भी प्रासुक रहता है। इस विधि से यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि पानी का स्वाद और रंग बदल जाय।

उबाला हुआ जल मौसमानुसार 3, 4, 5 प्रहर प्रासुक रहता है (जैन परम्परा के अनुसार गरम पानी की काल मर्यादा ग्रीष्मकाल में 5 प्रहर, शीतकाल में 4 प्रहर और वर्षाकाल में 3 प्रहर की है) इस हेतु दशवैकालिकसूत्र के आठवें अध्ययन की छठी गाथा में साधु को 'तत्तफासुर्यं' शब्द देकर उष्णोदक लेने की आज्ञा दी गई है। इससे स्पष्ट होता है कि केवल गरम होने मात्र से जल अचित्त नहीं होता, किन्तु वह पूर्ण मात्रा में गरम होने से अचित्त होता है। मात्रा की पूर्णता का आशय यह है कि तीन बार पानी उबलने पर ही अचित्त होता है।

आचाराङ्गसूत्र के दूसरे श्रुतस्कन्ध के उद्देशक सात और आठ में गरम पानी के सिवाय इक्कीस प्रकार के धोवन भी बताये गये हैं।

#### धोवन पानी के लाभ

धोवन (अचित्त) जल पीने से वायु रोग, कब्जियत, जोड़ों का दर्द, चर्मरोग, एसिडिटी इत्यादि से बच सकते हैं।

धोवन पानी में किसी भी प्रकार के हानिकारक बैक्टीरिया नहीं होते हैं, एकदम शुद्ध पानी होता है। जो शरीर को नीरोगी बनाता है एवं जीवन रक्षा में लाभदायक है। धोवन पानी पावरफुल एण्टी ऑक्सीडेण्ट के रूप में कार्य करता है, क्योंकि धोवन पानी अल्कलाइन बन जाता है और इसकी पी.एच. गुणवत्ता 7 से अधिक हो जाती है जबकि न्यूट्रल पानी (Neutral Water) की पी.एच. गुणवत्ता 7 होती है और अम्लीय जल (Acidic Water) की 7 से कम।

धोवन पानी का विधान क्यों किया गया? वस्तुतः जैनधर्म एक विवेक प्रधान धर्म है, जो हमें सिखाता है कि कैसे कम से कम हिंसा से जीवन-यापन कर सकें। धोवन बनने से पानी अचित्त हो जाता है, यानी सतत अप्काय के असंख्य जीवों की जन्म-मरण की विराधना से बच जाते हैं। जीवों के प्रति अनुकम्पा उत्पन्न होती है और

श्रावक-श्राविका कहलाते हैं। जीवन में यतना और जीवदया के संस्कारों को जागृत करने और स्थिर रखने हेतु कच्चे पानी (सचित्त) के स्थान पर अचित्त पानी-धोवन (राख मिश्रित पानी) ही पीना चाहिए। जिससे पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण हो सके।

#### जल के त्रस जीवों के रक्षा सूत्र

जल का उपयोग करते समय निम्निलिखित विशेष सावधानियाँ बरतनी चाहिए-

1. हर कार्य में जल-छानकर ही उपयोग करें।
2. जल छानने के बाद गलने को वैसे ही न सुखाएँ, लेकिन छाने हुए जल को खूब धीरे से गलने पर डालें तथा उस पानी को उसके मूल स्थान पर बहा दें। फिर गलने को सुखा दें।
3. घर से निकलते समय छाने हुए पानी की वॉटरबेग साथ लें, जिससे कहीं भी अनछना पानी पीना न पड़े।
4. गीजर का उपयोग बन्द करें अथवा कम से कम उपयोग में लें।
5. स्वीमिंग पूल में तैरना एवं वॉटर पार्क में मौज-मस्ती का शौक न रखें।
6. कपड़े धोने के लिए धोबी को या लॉण्ड्री में न दें।
7. शाँवर बाथ का उपयोग नहीं करें।
8. शौचालयों के फ्लश में भी बहुत अनछना पानी बह जाता है। जरूरी पानी (छना हुआ) बाल्टी से भरकर डालें।
9. बारिश में सम्भव हो तो बाहर जाना टाल दें, जाना पड़े तो सावधानीपूर्वक चलें।
10. जल के सभी बर्तन ढँककर रखें।
11. होटल में, बाजारू खाद्य पदार्थों में, ठण्डे पेयों आदि में अनछना पानी होने से इन पदार्थों के उपयोग से बचें।
12. बोतल बन्द मिनरल वाटर का त्याग करें। मिनरल वाटर का पानी अनछना रहता है।

## बेंगलूरु में मुमुक्षु सुश्री रेणुजी गुन्देचा का दीक्षा-महोत्सव सम्पन्न

### भव्य शोभायात्रा एवं अभिनन्दन समारोह में उमड़े श्रद्धालुगण

6 मई, 2022 को प्रातः 8.30 बजे महासतीवृन्द के मांगलिक और नवकार जाप के पश्चात् मुमुक्षु सुश्री रेणुजी अश्व बग्गी में विराजित हुई तथा विशाल जनमेदिनी के साथ शोभायात्रा मुख्य आकर्षण का केन्द्र बनी। शहर के पूर्व मेयर श्री गौतमजी मकाना तथा रत्नसंघ, बेंगलूरु के पदाधिकारियों ने हरी झण्डी दिखाकर वरघोड़े को रवाना किया। वरघोड़े में जैनधर्म की झाँकियों, जैन ध्वजों से सजा आँटो, बेलगाँव बैण्ड बाजे, युवक मण्डल, युवती मण्डल आदि के सदस्य उपस्थित थे। बड़ी संख्या में श्रद्धालुगण जैनधर्म के जयकारे एवं मुमुक्षु की जयजयकार करते हुए शोभायात्रा में शामिल हुए। मुमुक्षु की शोभायात्रा डॉ. राजकुमार रोड़, राजाजीनगर पुलिस स्टेशन, राममन्दिर, वाटाल नागराज रोड़ होते हुए वीनस इण्टरनेशनल स्कूल पहुँची, जहाँ मुमुक्षु बहिन का भव्य अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया।

सर्वप्रथम मन्त्री श्री गौतमचन्दजी ओस्तवाल ने सञ्चालन करते हुए सभी अतिथियों और विशिष्ट जनों को मञ्च पर आमन्त्रित किया। वीनस स्कूल में आयोजित भव्य अभिनन्दन समारोह में समारोह अध्यक्ष के रूप में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री प्रकाशचन्दजी टाटिया, मुख्य अतिथि के रूप में बेंगलूरु मध्य के सांसद श्री पी. सी. मोहन, विशेष अतिथि के रूप में राजस्थान के नेता प्रतिपक्ष श्री गुलाबचन्दजी कटारिया, राजाजीनगर के विधायक एवं पूर्व मन्त्री श्री सुरेश कुमारजी, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी

श्रावक संघ के कार्याध्यक्ष श्री मनीषजी मेहता, शासन सेवा समिति के संयोजक श्री गौतमचन्दजी हुण्डीवाल, दीक्षा समिति के उपाध्यक्ष श्री कान्तिलालजी चौधरी, श्राविका मण्डल की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती अलकाजी दुधेड़िया, युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विवेकजी लोढ़ा, स्थानीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री पदमराजजी मेहता, मन्त्री श्री गौतमचन्दजी ओस्तवाल, मुमुक्षु सुश्री रेणुजी गुन्देचा एवं उनके वीरपिता श्री गौतमचन्दजी, वीरमाता श्रीमती निर्मलादेवीजी गुन्देचा मञ्चासीन थे।

श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की सदस्याओं द्वारा मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री प्रकाशचन्दजी टाटिया ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि दीक्षा कोई वॉक इन इण्टरव्यू कार्य नहीं है। अपितु दीक्षा लेने की इच्छा होने पर मुमुक्षु को आगम, धर्म, ज्ञान, संयम आदि की गहन ट्रेनिंग के बाद गुरुओं द्वारा आज्ञा लेना होता है और संयम के प्रति अपना समर्पण दर्शाना होता है। श्री टाटियाजी ने रेणुजी के त्याग और विसर्जन की सराहना करते हुए कहा कि गुन्देचा परिवार ने अपनी अमूल्य सम्पत्ति समाज को समर्पित की है। उनकी अनुमोदना होनी चाहिए। बेंगलूरु संघ के अध्यक्ष श्री पदमराजजी मेहता ने स्वागत करते हुए मुमुक्षु सुश्री रेणुजी के उज्ज्वल संयमी जीवन की मंगलकामना की। वीर गुन्देचा परिवार के श्री कुशलराजजी गुन्देचा ने मुमुक्षु सुश्री रेणुजी गुन्देचा के साहसी कदम को सराहते हुए पारिवारिक सहयोग के बारे में बताया। इस मौके पर अतिथि के रूप में उपस्थित पूर्व

मन्त्री श्री सुरेशकुमारजी ने कहा कि यह एक अनुपम अवसर है कि जिस युवती ने जिस स्कूल में शिक्षा ग्रहण की, आज वहीं उसी स्कूल के प्राङ्गण में दीक्षा लेने जा रही है। उन्होंने वीनस स्कूल के चेयरमेन टी. बालकृष्ण की उदारता की सराहना की और कहा कि आज मुमुक्षु हम को प्रणाम कर रही है, कल से जब मुमुक्षु संयम पक्ष पर अग्रसर हो जाएगी, वह हमें आशीर्वाद प्रदान करेंगी। सांसद श्री पी. सी. मोहन ने कहा कि फैशन डिजाइनर के काम को त्यागकर दीक्षा लेने वाली मुमुक्षु सुश्री रेणुजी का यह साहसी कदम हम लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। आज अभिनन्दन कार्यक्रम में शामिल होकर बहुत ही सन्तोष का अनुभव हो रहा है। कार्यक्रम में श्री सुरेशकुमारजी, पी. सी. मोहनजी, श्री गुलाबचन्दजी कटारिया के साथ स्थान उपलब्ध कराने वाले वीनस स्कूल के चेयरमेन टी. बालकृष्णाजी आदि का सम्मान भी किया गया।

राजस्थान के नेता प्रतिपक्ष श्री गुलाबचन्दजी कटारिया ने कहा कि हर व्यक्ति के लिए जीवन में गुरु की अहम् भूमिका है। आज का अभिनन्दन समारोह संस्कारों की पराकाष्ठा का परिणाम है। मुमुक्षु सुश्री रेणुजी ने संसार के सारे वैभव को त्यागकर संयम मार्ग पर कदम बढ़ाया है जो कि उनकी उत्कृष्ट समर्पण भावना को दर्शाता है। आज के परिवेश में बड़े-बड़े पैकेज और नौकरियाँ छोड़कर युवावर्ग धर्म, संयम मार्ग की ओर अग्रसर हो रहा है जो कि त्याग की भावना को तथा युवाओं के धर्म के प्रति लगाव को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि मुमुक्षु ने संयम पथ पर अपना कदम बढ़ा दिया है पर अब समाज की जिम्मेदारी बढ़ जाती है कि वह सुश्री रेणुजी गुन्देचा की सार-सम्भाल करते हुए समाज हित में उसे ऊँचाइयों पर पहुँचाए। इस मौके पर श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के कार्याध्यक्ष श्री धनरूपचन्दजी मेहता, उपाध्यक्ष श्री पारसमलजी बोथरा, श्री सुभाषजी धोका, मन्त्री श्री गौतमचन्दजी ओस्तवाल, सहमन्त्री श्री भरतजी सांखला, श्री किशनलालजी नाहटा, श्री राजेन्द्रजी चोरड़िया, कोषाध्यक्ष श्री जसवन्तराजजी

छाजेड़, श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती गुणवन्तीजी सांखला, मन्त्री श्रीमती वनिताजी मरलेचा, श्री जैन रत्न युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री मनीषजी सांखला और मन्त्री श्री निखिलजी गुन्देचा आदि ने मुमुक्षु और अतिथियों का सम्मान किया।

इस अवसर पर मुमुक्षु सुश्री रेणुजी गुन्देचा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आज उनका अभिनन्दन नहीं, अपितु संयम का अभिनन्दन हुआ है। प्रभु का हमारे जीवन पर बहुत उपकार है। गुरु हीरा सूर्य के समान अन्धकार को दूर करते हैं तो गुरुणी महासती श्री रुचिताजी चन्द्रमा के समान जीवन में शीतलता प्रदान करती हैं। गुरु मोक्षरूपी मार्ग पर अग्रसर होने की आज्ञा देने के हेतु हैं, वहीं गुरुणीश्री संयम को प्रदान करने की हेतु हैं। संयम का उपहार देने वाले होते हैं गुरु। मुमुक्षु ने कहा कि कल मैं संयम के पथ पर अग्रसर होने जा रही हूँ जिसमें गुरु की प्रेरणा, माता-पिता का आशीर्वाद और गुरुणीजी का सान्निध्य प्राप्त है। इस मौके पर मुमुक्षु के माता-पिता परिवारजनों का अभिनन्दन रजत स्मृति चिह्न आदि से किया गया। प्रचार-प्रसार संयोजक श्री सज्जनराजजी मेहता ने दीक्षार्थी के अभिनन्दन-पत्र का वाचन किया।

### व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. के मुखारविन्द से मिला दीक्षा पाठ

7 मई, 2022 को श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के तत्त्वावधान में रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. एवं महान् अध्यक्षसायी, भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा मुमुक्षु सुश्री रेणुजी गुन्देचा की दीक्षा निमित्त से राजाजीनगर स्थित एच. उत्तमचन्द प्रमिला भण्डारी सामायिक-स्वाध्याय भवन से दीक्षा-स्थल वीनस इण्टरनेशनल स्कूल पधारे। वृहद् थाल की क्रिया के पश्चात् नाकोड़ा अपार्टमेंट से मुमुक्षु बहिन श्रावक-श्राविकाओं के साथ अभिनिष्क्रमण यात्रा के रूप में

दीक्षा-स्थल पहुँची। दीक्षा स्थल पर केशमुण्डन और वेश परिवर्तन की क्रिया सम्पन्न हुई। इस अवसर पर अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री प्रकाशचन्दजी टाटिया, संरक्षक श्री मोफतराजजी मुणोत, कर्नाटक अध्यक्ष श्री पदमराजजी मेहता, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री प्रमोदजी लोढ़ा, राष्ट्रीय दीक्षा संयोजक श्री कान्तिलालजी चौधरी आदि ने अभिनिष्क्रमण यात्रा की अगवानी की। संघ मन्त्री श्री गौतमचन्दजी ओस्तवाल ने सञ्चालन करते हुए दीक्षा की प्रक्रिया समझायी। इस मौके पर महासतीवृन्द ने बताया कि दीक्षा की अनुमति आवश्यक है, अतः उन्होंने वीर पिता श्री गौतमचन्दजी, माता श्रीमती निर्मलादेवीजी गुन्देचा, भ्राता श्री दीपकजी, ननिहाल पक्ष से नाना श्री ताराचन्दजी गुगलिया परिवार की, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ और बेंगलूरु कर्नाटक शाखा के सभी पदाधिकारियों की अनुमति प्राप्त की। दीक्षा के अवसर पर मुमुक्षु सुश्री रेणुजी गुन्देचा ने कहा कि राणाओं में महाराणा प्रताप को कोई भुला नहीं सकता और उपकारों में गुरु हस्ती को कोई भुला नहीं सकता। मेरे चेहरे की खुशी यह दर्शाती है कि यह मेरे जीवन का अनमोल क्षण है। गुरुणी मैया की कृपा से चारित्र की चाह को मोक्ष की राह में कुछ ही क्षण में बदल दिया, जिसके लिए मैं गुरुओं के प्रति कृतज्ञ हूँ। महासती श्री रुचिताजी म.सा. ने संयम की व्याख्या, संघ, गुन्देचा परिवार और गुगलिया परिवार के सहकार की अनुमोदना करते हुए मुमुक्षु रेणु के चेहरे पर उल्लास की तारीफ की। उन्होंने कहा कि पाप से पुण्य, आत्मा से परमात्मा, राग से वीतराग की यात्रा है संयम की यात्रा।

महासती श्री रुचिताजी की निश्रा में महासतीवृन्द ने लोगस्स, करेमि भंते, नमोत्थु णं आदि की विधिवत् प्रक्रिया करायी, जिसकी अनुमोदना उपस्थित श्रावक-श्राविका वर्ग ने हर्ष-हर्ष की ध्वनि से की। श्री रुचिताजी म.सा. ने नवदीक्षित साध्वी के रूप में मुमुक्षु सुश्री रेणुजी का महासती श्री रचनाश्रीजी म.सा. नया नाम घोषित किया। श्री रामपुरम् में 13 मई को बड़ी दीक्षा की घोषणा की गई। श्री मोफतराजजी मुणोत ने बेंगलूरु संघ की एकता, गुरुभक्ति की अनुमोदना की और सभी के सहयोग के लिए अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की ओर से आभार व्यक्त किया। इस कार्यक्रम में वीनस इण्टरनेशनल स्कूल के टी. बालकृष्ण और शेखर तथा प्रशासन का बहुत ही अच्छा सहयोग रहा। दीक्षा समिति, यातायात समिति, भोजन समिति, आवास-निवास समिति, प्रचार-प्रसार समिति, महिला मण्डल, युवक परिषद् आदि अनेक सहयोगी संघ संस्थाओं के सभी पदाधिकारियों, कार्यकारिणी सदस्यों आदि की अहम् भूमिका रही। दीक्षा के सम्पूर्ण कार्यक्रम के पश्चात् गगनभेदी जयघोष लगाए और सभी महासतीवृन्द से क्रमशः मंगलपाठ श्रवण किया। लॉ एण्ड ऑर्डर और ट्रैफिक पुलिस प्रशासन तथा मीडिया ने भरपूर सहकार प्रदान किया।

इस भागवती दीक्षा महोत्सव में शोभायात्रा और भोजन-व्यवस्था में अनेक नवयुवक मण्डलों एवं महिला मण्डलों की भरपूर सेवाएँ सराहनीय रहीं। इस शुभ प्रसङ्ग पर बाहर गाँव से संघ, प्रतिनिधि मण्डल और अनेक श्रद्धालुगण अच्छी संख्या में उपस्थित हुए।

-मोक्षद्वार से साभार

### सद्गुरोः प्रसादात्

श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.

सच्चा सुख बाहर नहीं, भीतर ही मिलेगा।

फूल तो पौधे पर ही खिलेगा।।

अब संसार में मत अटक।

अब संसार में मत भटक।।

कर अपनी आत्मा का त्राटक।

तेरे लिए खुलेगा मुक्ति का फाटक।।

विवेकी ही भव-बन्धन से छूटते हैं।

अविवेकी को राग-द्वेष लूटते हैं।।

जो अपने स्वरूप में नहीं ठहरते हैं।

वे भवाटवी में भटकते हैं।।

-(संकलित)

## ध्यान की उपयोगिता

श्रीमती अरुणा कर्णावट

ध्यान किया नहीं जाता वरन् सहज में हो जाता है। बचपन से ही हम सुनते आ रहे हैं कि ध्यान से चलना, ध्यान से उठना, ध्यान से बैठना इत्यादि। यानी प्रत्येक कार्य को जागरूकता के साथ करना ही ध्यान है। हम चाहे भोजन बनायें, किसी से बात करें अथवा कोई भी धार्मिक कार्य करें यदि वह ध्यानपूर्वक करें तो वह अच्छे से पूर्ण होता है। किसी भी कार्य में पूर्ण तन्मयता से केन्द्रित हो जाएँ तो वह ध्यान है।

मैं कौन हूँ? मैं कहाँ से आयी हूँ? मुझे कहाँ जाना है? मुझे अपने आत्मकल्याण के लिए कैसा जीवन जीना है? इन सब प्रश्नों का उत्तर हम ध्यान के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं।

हमारे सामने कैसी भी परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाएँ, हम उनमें अटके नहीं, भटके नहीं, हमारा जीवन सहज-सात्त्विक हो जाए, हमारा जीवन-व्यवहार एक दर्पण की तरह हो जाए, जिसमें सभी कुछ बिल्कुल स्पष्ट दिखाई दे।

हम ध्यान करने बैठते हैं तो सबसे पहले हमारे दिमाग में क्या आता है? हमारे दुःख, नकारात्मकता इत्यादि। ऐसे-ऐसे विचार आते हैं जो ध्यान से पूर्व तो कभी नहीं आए, लेकिन ध्यान में बैठते ही वे सारे विचार हमारे दिमाग और मन पर अतिक्रमण कर लेते हैं। हम विचलित हो जाते हैं कि ये विचार हमारे दिमाग में क्यों आए?

अब हमें यह कार्य प्रारम्भ करना है कि हम इन विचारों के साथ नहीं जुड़ें। हम इन विचारों के साथ नहीं जुड़ेंगे तो ये विचार स्वतः ही आकर चले जाएँगे। जिस प्रकार हमारे घर में कोई मेहमान आता है और यदि हम उसका स्वागत-आवभगत नहीं करते हैं तो वह चला जाता है ठीक इसी प्रकार ध्यान में विचारों एवं घटनाओं

के साथ होता है। अशुभ विचार एक प्रकार का कचरा या गन्दगी हैं, इन्हें आने दें, जुड़ें नहीं, ये स्वतः ही चले जाएँगे। ध्यान करने के लिए किसी भी प्रकार के सुविधाजनक आसन में ध्यान लगाकर बैठा जा सकता है।

ध्यान अर्थात् स्वयं को देखना, स्वयं का अध्ययन करना। मगर हम स्व के अध्ययन के स्थान पर दूसरे का अध्ययन करते हैं। दूसरे ने हमारे साथ क्या किया, दूसरे ने हमें क्या कहा, दूसरे ने हमारे साथ कैसा व्यवहार किया। जबकि दूसरे की कही हुई प्रत्येक नकारात्मक बात को एक कान से सुनकर दूसरे कान से बाहर निकालना है अथवा जिस कान से सुना उसी कान से बाहर निकाल दें, दूसरे कान तक भी वह बात नहीं पहुँचनी चाहिए। हम इन सब नकारात्मकताओं को अपने भीतर ले जाते हैं तथा दिन-रात इन्हीं का चिन्तन-मनन करते हैं और परिणामतः कई बीमारियों के शिकार हो जाते हैं, निराश हो जाते हैं। इसलिये तत्त्वचिन्तक ध्यान साधक, श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. हमेशा फरमाते हैं-“निराशा रूपी पिशाचिनी को अपने जीवन में प्रवेश देना ही नहीं है।” इसलिये हमें सिर्फ स्वयं का अध्ययन स्वयं के द्वारा ही करना है, दूसरों को देखना ही नहीं है।

जब व्यक्ति स्व के अर्थात् आत्मा के अध्ययन में लगा होता है तब कषायों का दमन प्रारम्भ हो जाता है। वस्तुतः यदि ध्यान में स्वयं को देखना घटित हो जाए तो जैसे क्रोध कषाय को देखा और क्रोध का दोष रूप में ज्ञान हो जाए, मान कषाय को देखा और मान का दोष रूप में ज्ञान हो जाए, माया कषाय को देखा और माया का दोष रूप में ज्ञान हो जाए, लोभ कषाय को देखा और लोभ का दोष रूप में ज्ञान हो जाए तो उस समय हमें कोई

भी कहे कि आप अमुक कषाय करो तो भी हम उक्त कषायों का आचरण नहीं कर पायेंगे।

हम जब ध्यान-कक्ष में बैठें तो वहाँ और भी कई व्यक्ति उपस्थित होते हैं। हम दूसरे व्यक्ति की उपस्थिति को दर्ज किए बगैर यही सोचें कि कक्ष में सिर्फ मैं ही हूँ। अपना पूरा ध्यान, ध्येय पर ही केन्द्रित करें, अपनी श्वास को अपने शरीर के दर्द वाले हिस्से पर लेकर उस दर्द को देखते रहें, वहाँ प्राण ऊर्जा दें, अपनी श्वास को भी उस दर्द वाले हिस्से पर महसूस करें, दर्द चला जाएगा। हम ध्यान से, योग से, अध्यात्म से अद्भुत शक्ति प्राप्त कर रोगों का निदान कर सकते हैं।

ध्यान को अपने जीवन का अङ्ग बनाने से अर्थात् नियमित ध्यान करने से अन्तर्द्वन्द्व की स्थिति समाप्त हो जाती है।

- ❖ ध्यान करने से अनन्त आत्मिक शान्ति की प्राप्ति होती है।
- ❖ ध्यान करने से हमें प्रत्येक व्यक्ति और परिस्थिति स्वीकार्य हो जाती है।

- ❖ ध्यान करने से हमारे चञ्चल मन का निग्रह आसानी से हो जाता है।
- ❖ ध्यान करने से हमारे भीतर में अनन्त शक्ति का साम्राज्य स्थापित हो जाता है।
- ❖ ध्यान करने से प्रतिक्षण सतत जागृति की प्रेरणा मिलती है।
- ❖ ध्यान करने से हमारे कषाय कृश हो जाते हैं।
- ❖ ध्यान करने से ही प्रत्येक व्यक्ति में आत्मा से महात्मा, महात्मा से परमात्मा बनने की शक्ति जागृत होती है।
- ❖ ध्यान करने से अर्थात् प्रत्येक कार्य आत्मा की उपस्थिति में करने से कभी कोई गलत कार्य नहीं हो सकता।
- ❖ ध्यान करने से हमें हमारी भीतरी और वास्तविक पहचान होती है।

-एफ 30-बी, लाल बहादुर नगर (वेस्ट),  
जवाहरलाल नेहरू मार्ग, जयपुर-302018 (राज.)

### किसी जीव को न सताओ

श्रीमती सुलषा मुथा (टीना)

किसी जीव को न सताओ,  
इन सबका है हम पर उपकार।  
जियो और जीने दो,  
सब जीवों से कर लो प्यार।।1।।  
साता दोगे साता मिलेगी,  
जो बीज वही फल।  
दुःखियों की करुण पुकार सुन लो,  
यही सुख देंगे कल।।2।।  
भगवान महावीर का सीधा सरल उपदेश,  
कर लो हिंसा का त्याग।  
क्षमा सरलता अपना लो,  
छोड़ो सब मन के द्वेष और राग।।3।।

वचन से निकले मीठी वाणी,  
मन से निकले शुभ भावना।  
काया से वन्दन कीर्तन,  
पूजन की हो हर क्षण चाहना।।4।।  
प्रभु का कल्याणक,  
सिद्धान्तों को अपनाकर मनाएँ।  
क्षमा के सागर, ज्ञान हर पल उजागर,  
गुणगान प्रभु का गाएँ।।5।।  
चण्डकौशिक, संगम देव,  
अर्जुन माली, उपकार किया चन्दना।  
भवसागर से हमें भी तारो,  
हम करते झुक-झुक वन्दना।।6।।

-धर्मपत्नी श्री गौतमजी मुथा (सी.ए.), 8वीं  
श्यामवाड़ी, जोधपुर-342003 (राजस्थान)

## वाणी

डॉ. रमेश 'मयंक'

मानव की वाणी कल्याणी,  
उसने अद्भुत क्षमता पाई  
संयम साधना विवेक जगा,  
श्रेष्ठ जीवन कला सिखाई।

एक सामाजिक प्राणी मानव,  
भाषा से पहचाना जाता  
जिह्वा से मीठा वचनमृत,  
कड़वा शब्द विष कहलाता।

कटु वचनों से दुःख बढ़ जाता,  
सोच समझकर बोलो भाई  
सत्य वाणी की आत्मा है,  
प्रभु ने भी इसे अपनाई।

मीठी वाणी तो शीतल जल,  
मीठी वाणी रस वाला फल  
बीत गई रात उदासी की,  
सजाओ बन्दनवार शुभ पल।

रसना वाणी को नपे तुले,  
शब्दों में ही खोलो भाई  
आसुरी वृत्तियाँ कर नियन्त्रित,  
ऊर्जा बचत करो सुखदाई।

कठोर कटु बोल दुःख देते,  
आपसी वैर भाव बढ़ाते  
हिय तराजू में तोल कहते,  
वे सज्जन ज्ञानी कहलाते।

अनमोल निधि बनकर वाणी,  
सञ्जीवनी बूँटी कहलाई  
आत्मा की भाषा मौन रही,

कठिन समस्या हल हो पाई।

ताकतवर बनकर के वाणी,  
नव जीवन का करे सञ्चार  
तम निराशा को हटाकर के,  
आशा लहरें करती उद्धार।

कौवे कोयल की वाणी का,  
अन्तर सभी मानते भाई

कम बोलकर स्वास्थ्य हित किया,  
बुद्धि कौशल की छवि बनाई।

मीठी वाणी शान्ति दिलाती,  
सद्भावों से खुशियाँ आती  
परिवर्तित होता सोच और,  
नाराजगी लुप्त हो जाती।

समझदार की वाणी ने ही,  
सदैव प्रेम मित्रता बढ़ाई  
कम शब्दों में बात कहना,  
विद्वज्जनों का लक्षण भाई।

स्वर से सरस्वती का अनुष्ठान,  
सौम्य सरल को मिलता मान  
आक्रोश ज्वालामुखी जैसे,  
कर्कश वचन से घटता मान।

तोला फिर अपनाया,  
पर निंदा से दूरी बनाई  
जीवन विकास में वाणी की,  
मधुर महत्ता ही रंग लाई।

10 जून 2022

जिनवाणी 70

ISSN 2249-2011

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं



## नूतन साहित्य



श्री गौतमचन्द्र जैन

**अमर होगी गौरव-गाथा महावीर भगवान की-** लेखक-डॉ. रमेश जैन। प्रकाशक-जनता हस्पताल, बुढ़लाडा। प्रथम संस्करण-2021, पृष्ठ-88, मूल्य-50/- रुपये।

प्रस्तुत पुस्तक लोकप्रिय सेवाभावी सफल चिकित्सक डॉ. रमेशजी जैन की एक सफल एवं उत्कृष्ट कोटि की काव्य-रचना है। आपका प्रयास श्लाघनीय है। 'अमर रहेगी गौरव-गाथा महावीर भगवान की' एक पद्यमय गेय रचना है, जो भगवान महावीर के सम्पूर्ण जीवन की झाँकी पाठक के समक्ष प्रस्तुत कर देती है। काव्य-मय रचना के नीचे लेखक ने हिन्दी अनुवाद भी प्रस्तुत किया है, जो सरल भाषा में सुबोध एवं रोचक है। सम्पूर्ण रचना धाराप्रवाह रूप से प्रस्तुत की गई है, जो पाठक को पूरी पुस्तक को लगातार पढ़ने के लिए प्रेरित करती है। भगवान महावीर के जीवन चरित के साथ ही पुस्तक में दस धर्मों को भी काव्यात्मक सरस एवं सरल शैली में प्रस्तुत किया है। पुस्तक लय के साथ गाकर पढ़ने पर आनन्ददायक सिद्ध होगी।

**हँसो हँसाओ और मन्नन करो-** रचयिता-डॉ. रमेश जैन। प्रकाशक-जनता हस्पताल, बुढ़लाडा, जिला-मानसा (पंजाब), प्रथम संस्करण-2021, पृष्ठ-128 + 16 = कुल 144, मूल्य-120/- रुपये।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने 61 हास्य कविताओं के संग्रह को प्रस्तुत किया है। लेखक ने विभिन्न समसामयिक विषयों को आधार बनाकर हास्य कविताएँ प्रस्तुत की हैं, जिनमें वर्तमान स्थिति का चित्रण करते हुए एक व्यंग्य भी अन्तर्निहित है। कविताओं के माध्यम से कवि ने अपने हृदय की पीड़ा को समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है और सही दिशा में सोचने के लिए सम्यग्दृष्टि भी प्रदान की है। पारिवारिक जीवन, नारी का

चित्रण, राजनेताओं की स्थिति, समय, वाणी, लोभवृत्ति, व्यभिचार, धूम्रपान आदि अनेक विषयों पर व्यंग्यात्मक शैली में हास्य रस से परिपूर्ण कविताएँ प्रस्तुत की हैं, जिनको लय के साथ में गाकर भी पढ़ा जा सकता है और कविता के रस का पूर्ण आनन्द प्राप्त किया जा सकता है। सभी कविता-प्रेमी पाठकों के लिए प्रस्तुत पुस्तक पठनीय है और मनन करने योग्य है।

**खनक संस्कृति की-** लेखक-दिलीप गाँधी। प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थल-जैना पब्लिकेशन, पोस्ट-नाथद्वारा-313301, जिला-राजसमन्द (राज.), मोबाइल 9757414737, 9587702924, Email : jainpublications07@gmail.com, Website : www.jainapublication.com, पृष्ठ-64 + 8 = 72, मूल्य-250/- रुपये।

प्रस्तुत लघु पुस्तिका में लेखक ने 58 कविताओं का संग्रह प्रस्तुत किया है। लेखक ने अनेक सम-सामयिक विषयों पर छोटी-छोटी सारगर्भित, सरस तथा गेय कविताएँ प्रस्तुत की हैं। नवकार मन्त्र, महावीर, माँ, बेटी, पिता, दादी, प्रकृति, वृक्ष, पर्यावरण, राष्ट्रप्रेम, सुरक्षा, शाकाहार, पॉलिथीन, रक्षाबन्धन और चातुर्मास आदि अनेक विषयों पर सुन्दर कविताएँ प्रस्तुत की गई हैं, जो आबालवृद्ध सभी के लिए पठनीय एवं प्रेरणादायी हैं। कविताओं के साथ-साथ उसके विषय से सम्बन्धित लघु चित्र भी दिये गये हैं, जो आकर्षक हैं और बच्चों के लिए विशेष उपयोगी हैं। पुस्तक के पृष्ठ एवं मुद्रण भी उच्चकोटि का एवं आकर्षक है। प्रस्तुत पुस्तक की कविताएँ सभी पाठकों के लिए बोधप्रद हैं।

**वीतराग खट्टे-मीठे प्रवचन (भाग-19, खण्ड-1, खण्ड-2, खण्ड-3)-** प्रवचनकार-आचार्यप्रवर बहुश्रुत श्री सुमतिमुनिजी महाराज, संकलन-सम्पादन-डॉ. रमेश जैन। प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थल-जनता हस्पताल, बुढ़लाडा, जिला-मानसा (पंजाब), प्रथम संस्करण-दिसम्बर 2021, पृष्ठ-256, मूल्य-150/- रुपये प्रत्येक खण्ड का। (साधु-साध्वियों के लिए निःशुक्ल)।

**खण्ड-1**—आचार्यप्रवर बहुश्रुत श्री सुमतिमुनिजी म.सा. के द्वारा समय-समय पर दिये गये प्रवचनांशों का इस शृङ्खला में संकलन-सम्पादन किया गया है। प्रस्तुत पुस्तक भाग-19, खण्ड-1 में कुल 177 प्रवचनांशों का संकलन है। इनमें संस्मरण, लघुकथाएँ और प्रसङ्ग तथा जीवनोपयोगीसूत्र और कविताएँ हर स्तर के पाठकों के लिए रुचिकर, शिक्षाप्रद और जीवन में उपादेय हैं। प्रवचनों की भाषा सरल, सुबोध एवं हृदयस्पर्शी है। प्रवचन स्वयं के लिए तो उपयोगी हैं ही और साधु-सन्त या वक्ता चाहे तो अपने प्रवचन एवं भाषणों में भी इनका सहज रूप से उपयोग कर सकता है। इस दृष्टि से यह पुस्तक श्रावक-श्राविकाओं के साथ-साथ साधु-सन्तों के लिए भी पठनीय है।

**खण्ड-2**—आचार्यश्री के 178 प्रवचनांशों का संकलन किया गया है, जिनमें लघु कथाओं, संस्मरणों और विविध आध्यात्मिक एवं जीवनोन्नतिकारक विषयों का संक्षिप्त एवं सरस तथा रोचक शैली में वर्णन किया गया है, जो सभी के लिए उपयोगी हैं। गागर में सागर के समान जीवन निर्माणकारी सूत्र सरल, सुबोध एवं हृदयस्पर्शी शैली में प्रस्तुत किये गये हैं। अनेक प्रवचन ऐसे हैं जो जीवन की कठिन समस्याओं का सहज एवं सरल समाधान प्रस्तुत कर देते हैं। सम्पूर्ण पुस्तक को पढ़ने की पाठक की जिज्ञासा और उत्सुकता बनी रहती

है। यह पुस्तक शिक्षाप्रद, अध्यात्म एवं श्रेयस् के मार्ग को प्रशस्त करने वाली एवं सम्यक् दिशा प्रदान करने वाली है। सभी पाठकों के लिए पठनीय एवं उपयोगी है।

**खण्ड-3**—आचार्यश्री के 162 प्रवचनांशों का संकलन किया गया है। इसमें प्रेरक लघु कथाएँ और संस्मरणों का भी समावेश हुआ है। प्रवचन संक्षिप्त होने से पाठक सहज में ही इन्हें कभी-भी पढ़ सकता है और एक बार पुस्तक हाथ में लेने पर उसकी पूरी पुस्तक को पढ़ने की रुचि एवं जिज्ञासा उत्पन्न हो जाती है।

प्रवचनांशों में जीवनोपयोगी, लोक-व्यवहार, शिष्टाचार, नीतिपरक, धार्मिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक विभिन्न विषयों का समावेश किया गया है, जो व्यक्ति को सम्यक् दिशा एवं मार्गदर्शन एवं समाधान प्रस्तुत करते हैं। कर्मसिद्धान्त, आत्मा-परमात्मा, पुण्य-पाप, लोकोपचार एवं सृष्टि-रचना आदि गूढ़-रहस्यों को सरलता और सुगमता के साथ समझाया गया है।

पुस्तक के अन्त में प्रेरणादायी और जीवन की वास्तविकता से सम्बन्धित कतिपय गेय एवं स्मरणीय भजनों का भी समावेश किया गया है।

—पूर्व डी.एस.ओ., 70, 'जयणा', विश्वकर्मा नगर-द्वितीय, महाराष्ट्री फॉर्म, जयपुर (राजस्थान)

## जिनवाणी लेखक सम्मान 17 जुलाई, 2022 को जयपुर में

जिनवाणी हिन्दी मासिक पत्रिका के मान्य लेखकों के सम्मान का कार्यक्रम रविवार 17 जुलाई, 2022 को जयपुर में सम्पन्न होगा। इस अवसर पर 'जिनवाणी पत्रिका : भावी सम्भावनाएँ' विषय पर चिन्तन किया जाएगा। लेखकों, पाठकों एवं हितैषी महानुभावों के सुझाव अग्रिम रूप से आमन्त्रित हैं। इस कार्यक्रम में सम्माननीय लेखकों सहित सभी लेखकों की उपस्थिति सादर प्रार्थित है।

सम्मानित होने वाले विद्वान् लेखक अपने आने की अग्रिम सूचना सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, सुबोध बाँयज सीनियर सैकेण्डरी स्कूल के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) 0141-2575997 के पते या ई-मेल editorjinvani@gmail.com पर प्रेषित कर सकते हैं।

—अशोक कुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

10 जून 2022

जिनवाणी 72

ISSN 2249-2011

## समाचार विविधा

### जिनशासन गौरव, आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा का सूर्यनगरी जोधपुर में मंगलमय पदार्पण

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, प्रवचन प्रभाकर, आगमज्ञ, जिनशासन गौरव, आचार्य भगवन्त श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-7 सुखे-समाधौ साधना-आराधनारत सामायिक-स्वाध्याय भवन, शक्ति नगर, छठी गली, जोधपुर में विराजित हैं।

विगत दिसम्बर 2021 से पूज्य आचार्य भगवन्त स्वास्थ्य के कारण से पीपाड़ शहर में विराजित थे। जिसमें पीपाड़ श्रीसंघ की सेवा-शुश्रूषा, भक्ति-भावना, अनुमोदनीय रही। जोधपुर श्रीसंघ भी पिछले दीर्घकाल से आचार्य भगवन्त की सेवा सन्निधि को प्राप्त करने के लिए निरन्तर विनति श्रीचरणों में अर्ज करता रहा।

पीपाड़ श्रीसंघ ने आचार्य भगवन्त के प्रवास में अनेकानेक कार्यक्रमों के समायोजन को सुन्दर रीति से सम्पादित किया। इसी क्रम में अक्षय तृतीया पारणक का सुअवसर पीपाड़ श्रीसंघ को प्राप्त हुआ। 3 मई को अक्षय तृतीया पारणक हेतु वर्षीतप साधक-साधिकाओं का सपरिवार 1 मई, 2022 से ही आगमन प्रारम्भ हो गया। पीपाड़ श्रीसंघ ने भीषण गर्मी में सभी तपस्वियों को साता रहे, इस दृष्टि से ओसवाल भवन के विशाल प्राङ्गण में पारणक की व्यवस्था की। 37 तपस्वियों ने वर्षीतप पारणा करने के साथ पीपाड़ शहर में गुरुचरण सन्निधि में नये वर्षीतप और अन्य प्रत्याख्यानो को ग्रहण करने का संकल्प किया। युवारत्न श्री मणीजी चौधरी सुपुत्र श्री धनेन्द्रजी चौधरी ने 11 की तपस्या की।

आचार्य भगवन्त का जोधपुर की ओर विहार करने का निर्णय सुनकर पीपाड़ श्रीसंघ का प्रत्येक सदस्य भाव-विह्वल हो उठा। अश्रुपूरित नेत्रों से चारों श्रीसंघों ने बारम्बार पीपाड़ विराजने की विनति की। पूज्य आचार्य भगवन्त की भावनानुसार भावी आचार्य श्री ने अपने उद्बोधन में पीपाड़ श्रीसंघ को स्वास्थ्य कारणों से अवगत कराते हुए पीपाड़ श्रीसंघ की अनूठी सेवा-भावना एवं भक्ति की अनुमोदना एवं भूरि-भूरि प्रशंसा की।

5 मई, 2022 को तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-4 विहार सेवा हेतु पूज्य आचार्य भगवन्त की सेवा में पधारे। 7 मई को पूज्य आचार्य भगवन्त का विहार पीपाड़-स्थानक से जोधपुर की ओर मुनिमण्डल के साथ हुआ। विहार में भावी आचार्य भगवन्त सहित सभी मुनिजनों के पुरुषार्थ एवं सेवाभावना को देखकर जन-जन का हृदय श्रद्धा से भर उठा। पीपाड़, जोधपुर, पाली आदि चहुँओर से श्रद्धालुओं का जनसैलाब विहार सेवा और पूज्य आचार्य भगवन्त की सन्निधि के लाभ हेतु उमड़ पड़ा।

8 मई, 2022 को ग्राम रियाँ सेठों की में महासती श्री विमलावती जी म.सा. आदि ठाणा-3 एवं जयमल सम्प्रदाय के उपाध्यायप्रवर श्री गुणवन्तचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा-2 एवं महासती श्री पूर्णिमाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-6 और ज्ञानगच्छीय श्री छोटे मनीषमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-2 पूज्य आचार्यप्रवर के दर्शन-वन्दन एवं सान्निध्य का लाभ लेने हेतु पधारे।

9 मई को दूरद्रष्टा पूज्य आचार्य भगवन्त ने तपस्वी श्रद्धेय श्री मोहनमुनिजी म.सा. की स्वास्थ्य स्थिति को ध्यान में लेकर तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-2 का प्रातःकाल विहार भोपालगढ़ की ओर

करा दिया, उग्र विहार कर दोनों मुनिराज 10 मई को सायंकाल लगभग 6 बजे वयोवृद्ध तपस्वी श्रद्धेय श्री मोहनमुनिजी म.सा. के पास पहुँच गये एवं तपस्वी मुनिश्री के अन्तिम भावों एवं तृतीय मनोरथ की सम्पूर्ति में सहकारी हुए।

विहार मार्ग के सभी ग्रामों में जैन-जैनेतर भक्तों की सेवाभक्ति सराहनीय रही। 15 मई को ग्राम देवलिया में भावी आचार्यप्रवर का 48वाँ दीक्षा दिवस होने से उपस्थित जनसमुदाय के समक्ष श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा., तदन्तर श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा. एवं सुश्रावक विद्वान् श्री धर्मचन्दजी जैन, रजिस्ट्रार आदि ने भावी आचार्य प्रवर के प्रति अपनी भावाभिव्यक्ति उनके ज्ञान, दर्शन, चारित्र रूपी गुणों, संस्मरणों एवं स्तुति रूप में की।

16 मई को बनाड़ ग्राम में व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकँवरजी म.सा. आदि ठाणा ने पूज्य आचार्य भगवन्त के दर्शन-वन्दन, सन्निधि का लाभ लिया। 17 मई को लोढ़ा प्याऊ, 18 को सारणनगर, 19 को हनुवन्तनगर सामुदायिक भवन को फरसते हुए 20 मई को शक्तिनगर, जोधपुर सामायिक-स्वाध्याय भवन में प्रातः 6.25 बजे पावन पर्दापण हुआ। पूज्य भगवन्त का 32वाँ आचार्य पदारोहण दिवस का पावन प्रसङ्ग भी होने से तीन-तीन सामायिक के साथ विविध व्रत, नियम, प्रत्याख्यान ग्रहण कर संवर आदि अनेक धर्मचर्याओं का यथाश्रद्धा-श्रद्धालुओं ने धर्मलाभ लिया। प्रातःकाल प्रार्थना, 8.30 से 9.30 बजे तक प्रवचन एवं दोपहर 2.00 बजे से 3.00 बजे तक उत्तराध्ययनसूत्र की वाचनी निरन्तर चल रही है।

पीपाड़ से जोधपुर तक विहार सेवा में पीपाड़ श्रीसंघ, जोधपुर श्रीसंघ की सेवा सम्भाल निरन्तर बनी रही। विहार में हिण्डौन, जयपुर, गोटन, पाली, ब्यावर, सैलाना, चेन्नई, बंगारपेट, कुम्भकोणम्, शिरपुर, हैदराबाद, जलगाँव, हरियादाणा, बरगमा, सर्वाईमाधोपुर (बजरिया), माण्डल, पुन्नामल्ली, भोपालगढ़ इत्यादि चहुँओर से ओसवाल, पोरवाल, पल्लीवाल क्षेत्रों के श्रद्धालुओं के साथ अनेकानेक वीर परिवारजनों ने विहार सेवा एवं गुरुचरण सन्निधि में सामायिक साधना आदि का लाभ लिया। विहार सेवा एवं आगन्तुक श्रद्धालुओं की सेवा सम्भाल तथा साधर्मिवात्सल्य में पीपाड़, रियाँ सेठों की, बुचकला, चौड़ा, बीनावास, डाँगियावास, बनाड़, चन्दन वाटिका वालों की एवं शक्तिनगर जोधपुर वालों की सुन्दर एवं सराहनीय सेवाएँ रहीं। पूर्व राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री बुधमलजी बोहरा ने 14 से 16 मई तक प्रातःकाल विहार सेवा एवं रात्रि में संवर साधना गुरुचरणों में रहकर की। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रकाशजी टाटिया संघहित चिन्तन हेतु आचार्य भगवन्त की सेवा में 19 मई को पधारे।

शासनसेवा समिति के संयोजक सुश्रावक श्री गौतमचन्दजी हुणडीवाल, सह-संयोजक श्री कैलाशजी हीरावत, सदस्य श्री नौरतमलजी मेहता, सुश्राविका डॉ. मंजुलाजी बम्ब, श्री गौतमजी सुराणा ने गुरुचरणों में परमाराध्य आचार्य भगवन्त के दर्शन-वन्दन कर, गुरुचरणों को श्रवण कर मार्गदर्शन प्राप्त किया एवं सुश्रावक श्री सुमेरसिंहजी बोथरा भी साथ में रहे।

भीषण गर्मी में आचार्य भगवन्त के स्वास्थ्य समाधि हेतु चतुर्विध संघ की विशेष सोच एवं भावना को लेकर राष्ट्रीय महामन्त्री श्री धनपतजी सेठिया, स्वास्थ्य प्रभारी उपाध्यक्ष श्री मनमोहनजी कर्णावट, जोधपुर स्थानीय संघाध्यक्ष श्री सुभाषजी गुन्देचा एवं ख्यातिनाम आस्टोपैथिक चिकित्सक सरलमना हँसमुख श्री गोवर्धनजी पाराशर ने विहार सेवा, दर्शन-वन्दन-मांगलिक श्रवण की भावना के साथ स्वास्थ्य की देखरेख नियमित रूप से जोधपुर में हो, ऐसा नियम बना लिया तथा अन्य चिकित्सकों ने भी विहार में सेवा सम्भाल दर्शन-वन्दन का लाभ लिया।

विहार सेवा में जोधपुर के सैकड़ों भाई-बहिनों ने लाभ लिया। युवक परिषद् जोधपुर तथा पीपाड़ के युवा साथियों ने काव्यमय भक्ति गीत प्रस्तुत किये। जोधपुर युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री गजेन्द्र जी चौपड़ा एवं उनके साथियों ने नये-नये भक्ति गीतों, कविताओं, जयकारों की प्रस्तुति के साथ विहार सेवा के वातावरण को भक्तिमय बना दिया।

आचार्य भगवन्त का 32 वाँ आचार्य पदारोहण दिवस भी ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी 20 मई को शक्ति नगर में धर्मध्यान एवं तप-त्याग के साथ सैकड़ों श्रद्धालु भाई-बहिनों की उपस्थिति में मनाया गया। समवसरण जैसा सुन्दर नज़ारा चतुर्विध संघ की उपस्थिति में सभी को आकर्षित कर रहा था। जोधपुर में ही 21 जून 1991 को आपके आचार्य पद की चादर ओढ़ायी गई थी।

जोधपुर संघ के अध्यक्ष श्री सुभाषजी गुन्देचा ने आचार्य भगवन्त के जोधपुर पधारने पर प्रवचनसभा में शब्दों से भावभीना स्वागत किया। समूचे जोधपुर संघ की ओर से हार्दिक कृतज्ञता, आभार, वन्दन-नमन करते हुए अविनय-आशातना की क्षमायाचना प्रकट की। श्राविका मण्डल जोधपुर की अध्यक्ष श्रीमती सुमनजी सिंघवी, मन्त्री श्रीमती पूजाजी गिड़िया आदि ने भी स्वागत गीत प्रस्तुत कर आचार्य भगवन्त का हार्दिक अभिनन्दन किया। आचार्य भगवन्त के सूर्यनगरी जोधपुर में विराजने से निरन्तर धर्म-जागृति बढ़ती जा रही है। प्रवचन सभा में पर्युषण जैसा नज़ारा देखने को मिल रहा है। युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री गजेन्द्रजी चौपड़ा अपनी काव्य रचना, भक्ति गीतिकाओं के साथ प्रवचन सभा का कुशलता पूर्वक सञ्चालन कर रहे हैं। आचार्य भगवन्त के दर्शन-वन्दन कर जोधाणावासी अपने आपको परम सौभाग्यशाली अनुभव कर रहे हैं। बाहर से पधारने वाले दर्शनार्थी बन्धुओं के अतिथि सत्कार में जोधपुर संघ तत्परता से लाभ ले रहा है।

श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-4 शास्त्रीनगर, श्यामनगर आदि क्षेत्रों में विचरण करते हुए महती प्रभावना कर रहे हैं। आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमलजी म.सा. का 31वाँ पुण्य-स्मृति दिवस 9 मई को आपके सान्निध्य में शास्त्रीनगर में तथा व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में हाउसिंग बोर्ड स्थानक में और व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में पावटा स्थानक में सामायिक-स्वाध्याय एवं त्याग-तप के साथ मनाया गया।

व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकँवरजी म.सा. आदि ठाणा ने जोधपुर शहर के पावटा, शक्तिनगर, पद्मावती नगर आदि अनेक उपनगरों को पावन करते हुए विचरण किया। व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. चौपासनी हाउसिंग बोर्ड आदि क्षेत्र में श्रावक-श्राविकाओं को जिनवाणी का अमृतपान कराते हुए उन्हें सक्रिय बनाने हेतु प्रभावी प्रेरणा करते हुए पावटा पधारे हैं।

व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा पावटा क्षेत्र में धर्मध्यान की पावन गंगा प्रवाहित कर रहे हैं। 28 से 30 अप्रैल तक रत्नसंघ समाचारी विषयक जानकारी महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. द्वारा श्रावक-श्राविकाओं को प्रदान की गई। संघ सामाचारी के विस्तृत एवं सारपूर्ण विवेचन को सुनकर श्रावक-श्राविकाओं ने कृतज्ञतापूर्ण आभार व्यक्त किया। आगम स्वाध्याय के अन्तर्गत अनुत्तरौपपातिक, उपासकदशा, अन्तगडसूत्र तथा विपाकसूत्र आगमों की महत्त्वपूर्ण धारणाओं, गूढ़ रहस्यों से अवगत कराते हुए श्रावक-श्राविकाओं की जिज्ञासाओं का समाधान करने का महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. महनीय पुरुषार्थ कर रहे हैं। आगम स्वाध्याय के इस कार्य में लगभग 70-80 श्रावक-श्राविकाएँ रुचिपूर्वक भाग ले रहे हैं। युवक-युवतियों को 'फ्रेण्ड्स टू जिनशासन' कक्षा के माध्यम से देव-गुरु-धर्म से सम्बद्ध करने का महासतीजी का प्रयास अनुमोदनीय एवं अनुकरणीय है।

-गिराज जैन एवं नवरत्न गिड़िया, मन्त्री

## पूज्य आचार्यश्री हस्ती का 31वाँ स्मृति-दिवस तप-त्याग एवं गुणानुवाद के साथ मनाया गया

अध्यात्मयोगी, युगमनीषी पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. का 31वाँ स्मृति-दिवस वैशाख शुक्ला 8 दिनांक 9 मई, 2022 को सम्पूर्ण देश में तप-त्याग, सामूहिक-साधना एवं गुणानुवादपूर्वक मनाया गया। कहीं सन्तों का, महासतियों का सान्निध्य मिला तो कहीं श्रावक समाज ने भी श्रद्धाभक्ति पूर्वक इस दिवस पर गुरुदेव के पावन गुणों का स्मरण किया।

**जयपुर**-आचार्य भगवन्त 1008 पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. का 31वाँ पुण्यस्मृति दिवस लालभवन, चौड़ारास्ता, जयपुर में परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती मधुर व्याख्यात्री श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 की सन्निधि में, महारानी फॉर्म स्थित उत्तम स्वाध्याय भवन में सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीबेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 की सन्निधि में एवं शिवशक्ति नगर में साध्वीप्रमुखा महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. आदि ठाणा-8 के सान्निध्य में 09 मई, 2022 को तप-त्याग, एकाशन, दया, संवर, पौषध एवं सामायिक की नवरंगी के रूप में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर प्रवचन में श्रावक-श्राविकाओं की अच्छी संख्या में उपस्थिति रही। आचार्यश्री के पुण्यस्मृति दिवस को सामायिक दिवस के रूप में मनाया गया। इस दिन लगभग 100 से अधिक एकाशन हुए।

-संजीव कोठारी, मन्त्री

**हिंणगघाट**-आचार्यप्रवर 1008 पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा-4 के पावन सान्निध्य में इतिहास मार्तण्ड आचार्यप्रवर 1008 पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. की पुण्यतिथि तप, जप, सामायिक-साधना एवं सामूहिक एकाशन करके मनाई गयी। पूज्य महासतीजी ने गुरुगुणानुवाद में बताया कि आचार्य हस्ती सरल स्वभावी, अध्यात्म योगी थे, उनकी वाणी में मधुरता थी, उन्होंने श्रमण संघ का उपाध्याय पद को भी सुशोभित किया। आपश्री का और आचार्यप्रवर पूज्य श्री आनन्दऋषिजी म.सा. का आपसी समन्वय बहुत ही अच्छा था। आप सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक रहे, आपश्री ने पहले ही भविष्यवाणी की थी कि मेरा संधारा-संलेखना वहीं होगा जहाँ सामने बगीचा हो, बाजू में स्कूल हो और पीछे कुआँ हो और आपकी यह भविष्यवाणी निमाज के गंगवाल भवन में पूर्ण हुई। तेले तप के साथ 13 दिन के संधारा-संलेखना के साथ देवलोकगमन हुआ।

-श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, हिंणगघाट

**बेंगलूरु**-श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ हनुमन्तनगर के तत्त्वावधान में सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक परम पूज्य आचार्य भगवन्त श्री 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. का 31वाँ पुण्यस्मृति दिवस पन्नालाल चोरड़िया जैन भवन हनुमन्तनगर के प्राङ्गण में पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा-7 के पावन सान्निध्य में व्रत-प्रत्याख्यान, तप-त्याग एवं सामायिक साधना से अपूर्व श्रद्धाभक्ति से मनाया गया। इस प्रसङ्ग पर महासती श्री कृपाश्रीजी म.सा. ने आचार्यश्री हस्ती की महिमा का चार प्रकार के मनो का विवेचन कर गुणगान किया। व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. ने उनके तेरह दिनों के संधारे एवं सामायिक-स्वाध्याय सन्देश का बखान कर गद्य-पद्य में गीतिका के माध्यम से गुरु गुण महिमा प्रकट की। इस अवसर पर रत्नसंघ बेंगलूरु के मन्त्री श्री गौतमचन्द्रजी ओस्तवाल ने गुरु हस्ती के बहुआयामी व्यक्तित्व का बखान कर अनेक प्रभावी संस्मरण एवं प्रेरक ऐतिहासिक घटनाक्रम गुणगान के साथ प्रस्तुत किये।

-गौतमचन्द्र ओस्तवाल ( मोक्षद्वार )

**चेन्नई**-श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-तमिलनाडु के तत्त्वावधान में आचार्य भगवन्त पूज्यश्री हस्तीमलजी म.सा की 31वीं पुण्य-तिथि सामायिक-स्वाध्याय दिवस के रूप में स्वाध्याय भवन, साहूकारपेट में गुरु गुणगान के साथ दो-दो सामूहिक सामायिक साधना और जप-तप-त्यागपूर्वक मनाई गई। प्रारम्भ में हस्ती चालीसा की सामूहिक स्तुति की गई। श्री विनोदजी जैन ने गुरुदेव के गुणगान के रूप में आचार्य हस्ती की अनमोल कृति जैनधर्म का मौलिक इतिहास का वाचन किया। श्रावक संघ के प्रचार-प्रसार सचिव आर. नरेन्द्र कांकरिया ने आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा के निस्पृहता, लघुता, नम्रता, श्रमणसंघ एकता, मोहविजय, गुणग्राहकता आदि अनेक विशिष्ट गुणों के संस्मरणों का उल्लेख किया।

-आर. नरेन्द्र कांकरिया, प्रचार प्रसार सचिव

## परमाराध्य आचार्य भगवन्त पूज्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा का 32वाँ आचार्य पदारोहण दिवस

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, जिनशासन गौरव, आगमज्ञ, रात्रिभोजन-त्याग, शीलव्रत और व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक आचार्य भगवन्त पूज्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा का 32वाँ आचार्य पदारोहण दिवस ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी शुक्रवार 20 मई, 2022 खन्द पालन दिवस के रूप में सम्पूर्ण देश में मनाया गया। इस अवसर पर तीन-तीन सामायिक साधना एवं अनेक तप-त्याग हुए। जोधपुर में यह पावन दिवस आचार्यप्रवर के सान्निध्य में तथा विभिन्न ग्राम नगरों में सन्त-सतियों के सान्निध्य में तथा श्रावक समाज के द्वारा तप-त्याग एवं गुणानुवाद पूर्वक मनाया गया। यहाँ कतिपय समाचार प्रकाशित हैं।

**बेंगलूरु**-स्वाध्याय भवन, राजाजी नगर में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ (कर्नाटक) के तत्त्वावधान में श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल एवं श्री जैन रत्न युवक परिषद् के सहकार से श्रमण संघीय ध्यानयोगी पूज्य आचार्यश्री 1008 श्री डॉ. शिवमुनिजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी उपप्रवर्तिनी परम विदुषी महासती श्री मणिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-3 के सान्निध्य में रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर आगमज्ञ पूज्य आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 32वाँ आचार्य पद चादर प्रदान दिवस दो-दो सामायिक की सामूहिक साधना और गुरु गुणगान से तप-त्याग पूर्वक व्रत-प्रत्याख्यान से सादगी पूर्वक मनाया गया।

सर्वप्रथम कोकिल कण्ठी महासती श्री ऋजुताश्रीजी म.सा. ने उत्तराध्ययनसूत्र के आधार पर महापुरुषों की महिमा का बखान कर सनत्चक्रवर्ती का प्रसङ्ग भी बताया। उपप्रवर्तिनी महासती श्री मणिप्रभाजी म.सा. ने पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का जीवन परिचय बताकर आचार्य पद की चादर की महिमा आदरास्पद प्रस्तुत की। महापुरुषों का जीवन समग्र मानवता के लिए समर्पित होता है। युग पुरुष संघ और समाज के आधार स्तम्भ होते हैं। आचार्य एवं सन्तगण समाज को पतन से बचाकर उत्थान मार्ग पर ले जाते हैं। महापुरुषों का जीवन सुख तथा अमृत प्रदान करने वाला होता है। वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री शान्तिलालजी डूंगरवाल ने आचार्यश्री हीरा की महिमा गीत गरिमा से व्यक्त की। संघ मन्त्री श्री गौतमचन्द्रजी ओस्तवाल ने धर्मसभा का सञ्चालन करते हुए आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. के अनेक प्रेरक प्रभावी संस्मरण एवं आचार्य श्री शिवमुनि से सन् 1985 में गोटेन में मिलन की घटना भी बतायी।

-गौतमचन्द्र ओस्तवाल

**चेन्नई**-उपस्थित श्रद्धालुओं ने आचार्य भगवन्त के गुणगान रूप में आचार्य हीरा चालीसा की सामूहिक-स्तुति की। संघ मन्त्री श्री ज्ञानचन्द्रजी बागमार ने आचार्यश्री की विशेष प्रेरणा चार खन्द के पालन पर पूर्ण विवचन किया। स्वाध्यायी बन्धु श्री महावीरजी तातेड़, श्री इन्द्रचन्द्रजी कर्णावट, श्री प्रकाशचंद्रजी ओस्तवाल, आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के संयोजक अशोकजी बाफना, स्वाध्यायी श्री महावीरजी बागमार, स्वाध्यायी श्री गौतमचंद्रजी मुणोत ने पूज्य आचार्यप्रवर के व्यक्तित्व एवं योगदान को रेखाङ्कित किया। श्रावक संघ-तमिलनाडु के प्रचार-प्रसार सचिव आर. नरेन्द्र कांकरिया ने 32 वर्षों पूर्व आज ही की तिथि पर सूर्यनगरी जोधपुर के सरदार स्कूल में सम्पन्न

आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा के चादर महोत्सव पर स्वयं प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित रहने को अपने जीवन की पुण्यवानी बताते हुए चादर महोत्सव का चित्रण शब्दों के माध्यम से रखा और कहा कि उस प्रसङ्ग पर आचार्यकल्प श्री शुभचन्द्रजी म.सा, वीरपुत्र श्री घेवरचंदजी म.सा, उपाध्याय भगवन्त पण्डित रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा, प्रवर्तिनी, उप-प्रवर्तिनी महासती मण्डल आदि अनेक चारित्र आत्माओं की उपस्थिति थी। चादर महोत्सव के प्रसङ्ग पर आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा ने रत्नसंघ के सभी सन्त-सती मण्डल के नामों का उल्लेख करते हुए सभी से प्राप्त सहयोग एवं श्रावक-श्राविकाओं सहित नन्दीसूत्र में वर्णित संघ रूपी तीर्थ को वन्दन करते हुए आचार्य पद के चादर की जिम्मेदारी को स्वीकार किया और स्थानकवासी परम्परा के विभिन्न संघों के आचार्यों, उपाध्यायों एवं महापुरुषों के रत्नसंघ के साथ वर्षों से चले आ रहे प्रेम, स्नेह और मधुर सम्बन्धों का महापुरुषों के नाम सहित स्मरण किया।

-आर नरेन्द्र कांकरिया, प्रचार प्रसार सचिव

**बालोत्सव**-श्री जैन रत्न युवक परिषद् एवं श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल के संयुक्त तत्त्वावधान में पुरानी पाठशाला में आयोजित कार्यक्रम में श्री गुरु हस्ती कल्याण संस्थान के मन्त्री श्री ओमप्रकाशजी बाँठिया ने रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के गुणगान करते हुए कहा कि आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. को 31 वर्ष पूर्व जोधपुर में आचार्य पद की चादर ओढ़ाई गई थी। आचार्यश्री ने आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. से दीक्षा अङ्गीकार करने के साथ ही उनके सान्निध्य में रहकर गुणवर्धन किया तथा आचार्य पद पर सुशोभित होने के पश्चात् आपने व्यसनमुक्ति, सामायिक-स्वाध्याय, शीलव्रत आदि के माध्यम से जन-जन में प्रेरणा का शंखनाद किया।

इस अवसर पर सामूहिक सामायिक साधना के साथ ही चार खन्द किए गए एवं हीरा चालीसा तथा गुरु गुण महिमा गीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

-ओमप्रकाश बाँठिया

### भावी आचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. का 48वाँ दीक्षा दिवस

महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी, भावी आचार्य श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. का 48वाँ दीक्षा-दिवस सम्पूर्ण देश में विगय-त्याग दिवस के रूप में मनाया गया। सामूहिक एकाशन आदि तप-साधना, सामायिक-साधना तथा गुणानुवाद कर श्रावक-श्राविकाओं ने श्रद्धा समर्पित की। यहाँ पर कतिपय समाचार प्रकाशित हैं।

**जयपुर**-15 मई, 2022 को महान् अध्यवसायी, भावी आचार्य श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. का 48वाँ दीक्षा दिवस कोठारी फार्म हाउस, अजमेर रोड़-जयपुर में मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 के सान्निध्य में तथा महावीर भवन किरण पथ मानसरोवर में सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 एवं व्याख्यात्री महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-8 के सान्निध्य में मनाया गया। इस अवसर पर प्रवचन सभा में प्रायः सभी सदस्यों की बहुत सही उपस्थिति रही। भावी आचार्यश्री के दीक्षा दिवस को एकाशन दिवस के रूप में मनाया गया। सन्त प्रवर्तों ने 480 एकाशन करने का लक्ष्य दिया था, जो कि विशेष उत्साह पूर्वक सम्पन्न हुआ। साथ ही अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने दो विगय के त्याग के नियम लिए। इस अवसर पर सभी श्रावक-श्राविकाओं ने प्रवचन श्रवण तथा सामायिक का लाभ लिया। साध्वीप्रमुखा महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. आदि ठाणा-8 के सान्निध्य में शिवशक्ति नगर में प्रतिक्रमण के बाद श्राविकाओं के लिए गुरु भक्ति का कार्यक्रम रखा गया।

-संजीव कोठारी, मन्त्री

**बेंगलूरु**-पूज्य आचार्य भगवन्त श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा 7 के सान्निध्य में एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, बेंगलूरु द्वारा रत्नसंघ स्वाध्याय भवन स्थानक में भावी आचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. का 48वाँ दीक्षा दिवस व्रत-प्रत्याख्यान से मनाया गया। प्रचार-प्रसार संयोजक श्री सज्जनराजजी मेहता ने बताया कि सभी साध्वीजी म.सा ने श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी

म.सा. की सेवा परायणता, समर्पण भावना, गुरुभक्ति, संयम की पराकाष्ठा, मर्यादित जीवन और वर्तमान में भी सन्त की ही भाँति स्वाध्याय, गोचरी व्यवस्था और आचार्यश्री हीराचन्द्रजी की सार-सम्भाल से जुड़े संस्मरणों और गीतिकाओं को प्रस्तुत कर भाव-विभोर कर दिया।

-सज्जनराज मेहता, प्रचार-प्रसार संयोजक

**बालोतरा**-श्री जैन रत्न युवक परिषद् एवं जैन रत्न श्राविका मण्डल के संयुक्त तत्त्वावधान में पुरानी पाठशाला में आयोजित सामूहिक सामायिक कार्यक्रम में भावी आचार्य श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के 48वें दीक्षा दिवस पर उनके संयम-जीवन के प्रति शतायु एवं दीर्घायु होने की मंगल कामना की गई। सामूहिक सामायिक-साधना के साथ ही तप, त्याग एवं विगय त्याग श्रावक-श्राविकाओं द्वारा किये गये।

**चेन्नई**-श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, तमिलनाडु के तत्त्वावधान में रत्नसंघ के भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा का 48 वाँ दीक्षा दिवस विगय त्याग दिवस के रूप में सामायिक-स्वाध्याय के साथ जप-तप त्यागपूर्वक स्वाध्याय भवन, साहूकारपेट में मनाया गया। सर्वप्रथम श्रद्धालु श्रावकों ने जिनवाणी-स्तुति, सिद्ध-स्तुति और जैनधर्म का मौलिक इतिहास का वाचन किया। भावी आचार्यश्री की गुरु महेन्द्र चालीसा से स्तुति की गयी। संघ मन्त्री श्री ज्ञानचन्द्रजी बागमार ने भावी आचार्यश्री के तप, संयम आदि गुणों पर विशेष रूप से प्रकाश डाला। स्वाध्यायी श्री गौतमचन्द्रजी मुणोत ने जीवन-परिचय और उनकी भागवती दीक्षा पर श्रद्धाभाव रखें।

-आर. नरेन्द्र कांकरिया, प्रचार-प्रसार सचिव

## जयपुर के उपनगरों में सन्त-सतियों का विचरण

जिनशासन गौरव, व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक आचार्य भगवन्त 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी भावी आचार्य परम श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. की असीम अनुकम्पा से मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 का जयपुर प्रवास अनेक उल्लेखनीय धार्मिक आयोजनों से याद किया जाएगा। जवाहर नगर में विराजते समय सहज में अक्षय तृतीया का पावन प्रसङ्ग होने से उस दिन प्रवचन में पूरा भवन श्रद्धालुओं से भरा हुआ था। पाँच बहिर्ने (1) श्रीमती सुलेखाजी जैन-जवाहर नगर, (2) श्रीमती शकुन्तलाजी कर्णावट-दुर्गापुरा, (3) श्रीमती चन्द्राजी बोथरा-आदर्शनगर, (4) श्रीमती लाडबाईजी लोढ़ा-निर्माण नगर, (5) श्रीमती शान्ताजी कोठारी-आदर्शनगर वर्षीतप पारणक एवं (6) श्रीमती नीलिमाजी गोखरू-न्यू लाइट कॉलोनी के एकाशन के एकान्तर वर्षीतप पारणक के साथ नवीन संकल्प की भावना लेकर उपस्थित थीं। मुनिश्री यहाँ से विहार करके लालभवन पधारे। 5 मई को केन्द्रीय कारागृह में प्रवचन फरमाया। जेल अधीक्षक पुलिस प्रमुख ने मुनिराज के पधारने पर हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त की। मुनिराज ने उपस्थित कैदियों के समूह में प्रवचन करते हुए फरमाया कि मेरी सबसे पहले आप सबके प्रति मंगल भावना है कि आप सबका भविष्य उज्ज्वल एवं सुखद बनें, मंगलमय बने, अच्छा और सच्चा बने। हम नहीं चाहते आप कारागार में कैद रहें। कोई कारण रहा होगा, कुछ घटना-दुर्घटना हुई होगी यह भूतकाल की बात है, हमको हमारा भविष्य सँवारने के लिए आज कृत संकल्प होना होगा। हमको सहनशीलता, नम्रता एवं सेवा जैसे सद्गुणों को स्थान देना है। व्यक्ति यदि इन तीन गुणों से अपने आपको जोड़ ले तो देश की हर जेल खाली ही मिलेगी। याद करें कई सारे स्वतन्त्रता सेनानियों ने जेल में रहकर समय का सदुपयोग करते हुए गीता पर भाष्य लिखा तो किसी ने भारत का इतिहास लिखा। मैं समझता हूँ यह वक्त आपके आत्मविश्लेषण का है, भविष्य को सँवारने का है और भविष्य में अच्छा जीवन जीने के संकल्प का है। यहीं पर श्री कमलचन्द्रजी संचेती ने श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के माध्यम से रोटी बनाने की एक मशीन जो लगभग दो-ढाई लाख रुपये की है,

भेंट करने की घोषणा की। सभी कैदियों ने निर्व्यसनी जीवन जीने का एवं भविष्य को सँवारने का संकल्प लिया।

मुनिश्री के लालभवन में विराजने पर 09 मई, 2022 को गुरु हस्ती का पुण्यस्मृति दिवस होने से सामायिक की नवरंगी हुई। गुरु भक्ति और गुरु श्रद्धा के कारण आज के दिन सामायिक, संवर, व्रत पच्चकखान से हर व्यक्ति जुड़ता चला गया। प्रवचन में श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा. ने गुरु हस्ती प्रेरक एवं संथारापूर्वक जीवन पर कई सारी घटनाओं का उल्लेख किया। इस पावन प्रसङ्ग पर आचार्यश्री विजयराजजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री पुष्पावतीजी म.सा. आदि ठाणा भी प्रवचन सभा में उपस्थित थे। उनमें से तीन महासतियों ने भी श्रद्धासिक्त भावों के साथ गुरु हस्ती की अनेक विशेषताओं की चर्चा करते हुए प्रभावी वक्तव्य से सबको प्रभावित किया। श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने गुरुवर्य की महिमा का संगान करते हुए गुरु हस्ती को ज्ञान-दर्शन-चारित्र का प्रतीक बताया। केवल हमें फूलों की तारीफ ही नहीं करना है, फूल बनकर महकना भी है। गुरु हस्ती हमारे लिए आइडियल हैं, वैसा ही जीवन जीने का हम सबको संकल्प करना है। मुनिश्री अगले दिन लालभवन से विहार कर दो दिन श्यामनगर विराजे यहाँ से भाँकरोटा स्थित डागा फार्म हाउस में 12 मई को दिवंगत श्रद्धेय श्री मोहनमुनिजी म.सा. के गुणानुवाद करते हुए उनके तपस्वी जीवन की प्रेरक बातें बताईं। 13 मई को कोठारी गढ़ में युवति-मण्डल ने एक धार्मिक संगोष्ठी रखी, जिसमें तत्त्वबोधक प्रश्नोत्तरी की गई। यहाँ से बड़ के बालाजी होते हुए 15 मई को कोठारी फार्म हाउस पधारे जहाँ भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. का 48वाँ दीक्षा दिवस मनाया गया। यहाँ से दूध पधारने पर श्री विनोदजी मेहता एवं श्री मानसिंहजी चौपड़ा ने सपत्नीक आजीवन शीलव्रत अङ्गीकार किया। यहाँ से माधव गौशाला, किशनगढ़ शहर, मदनगंज किशनगढ़ होते हुए अजमेर पधारे हैं।

**राधानिकुञ्ज-राधानिकुञ्ज क्षेत्र में सुदीर्घ अवधि के प्रवास के पश्चात् सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा.** आदि ठाणा-3 का 4 मई, 2022 को लक्ष्मीनगर, 5 मई को शिवशक्तिनगर में पदार्पण हुआ। प्रवचन में जिज्ञासाओं का समाधान किया गया। 6 मई को बाहुबली नगर तथा 7 मई को पटेल मार्ग स्थित ब्राह्मण समाज भवन में विराज कर 8 मई को उत्तम स्वाध्याय भवन, महारानी फार्म पधारे। यहाँ 9 मई को गुरु हस्ती के पुण्यस्मृति दिवस पर सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. ने पूज्य गुरुदेव आचार्य हस्ती के साधनाकाल के रोचक प्रसङ्ग सुनाये। 'समय को बढ़ाया नहीं जा सकता, समय को बचाया जा सकता है।' गुरु हस्ती ने छह स्थान पर समय को कैसे बचाया, उस विषय पर श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी ने प्रवचन फरमाया, श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजीजी म.सा. ने भी गुरुदेव हस्ती पर प्रेरणाप्रद प्रवचन फरमाया। 10 मई को उपाध्यायप्रवर के उपाध्याय पद दिवस पर गुण वर्णन किये गए। 11 मई को महावीर नगर पधारे। 12 मई को श्री मोहनमुनिजी म.सा. के देवलोकगमन पर गुणानुवाद सभा की गई, जिसमें तीनों सन्तों ने अपनी-अपनी भावाञ्जलि अर्पित की। 13 मई को शीतल स्वाध्याय भवन केशव विहार पधारे। 14 मई को मानसरोवर पधारे जहाँ उपाध्यायश्री का दीक्षा दिवस मनाया गया। 15 मई को भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. का 48वाँ दीक्षा दिवस हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। आयोजित प्रसङ्ग के उपलक्ष्य में 480 एकाशन का आह्वान किया गया तथा साथ ही दो विगय त्याग का कार्यक्रम भी रखा गया। प्रवचन श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी, श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी, श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. एवं व्याख्यात्री महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा. ने फरमाया। यहाँ से 10 बी स्कीम, जगदीश कॉलोनी, शक्ति नगर तथा 19 मई को श्री जिनेशजी जैन के, 20 मई से को ज्योति नगर पधारे जहाँ पर आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 32वाँ आचार्यपद आरोहण दिवस भक्तिभाव पूर्वक मनाया गया। कुछ दिन विराजकर सी-स्कीम होते हुए 26 मई को लालभवन, चौड़ा रास्ता पधारे।

-संजीव कोठारी, मन्त्री

**साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकँवरजी म.सा.,** व्याख्यात्री महासती श्री सुमनलताजी म.सा. आदि ठाणा-8 कृष्णा सागर, राधानिकुञ्ज क्षेत्र से विहार कर शिवशक्तिनगर में लगभग 22 दिन सुखसातापूर्वक

विराजे। नित्य प्रार्थना, प्रवचन, ज्ञानचर्चा आदि का क्रम बना रहा। 14 मई को साध्वीप्रमुखा महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. के दर्शनार्थ व्याख्यात्री महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-8 शिवशक्तिनगर पधारे। यहाँ से विहार कर 15 मई को श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा की सन्निधि में मानसरोवर स्थित महावीर भवन में भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के 48वें दीक्षा दिवस हेतु उपस्थित हुए। यहाँ से 16 मई को विहार कर पुनः साध्वीप्रमुखाजी म.सा. की सन्निधि में पधारे। यहाँ 20 मई को आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 32वाँ आचार्यपद आरोहण दिवस तप-त्याग एवं सामायिक-साधना के रूप मनाया गया। 17 से 23 मई तक प्रतिदिन प्रेरणादायी प्रवचन हुए। जिसमें स्थानीय एवं आस-पास के उपनगरों के श्रावक-श्राविकाओं ने बढ़-चढ़कर उत्साह दिखाया। यहाँ से व्याख्यात्री महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 24 मई को विहार कर उत्तम स्वाध्याय भवन, महारानी फॉर्म पधारे जहाँ एक प्रवचन हुआ। 25 मई को यहाँ से विहार कर बारहगणगौर, चौड़ा रास्ता स्थित महावीर भवन में सुख-सातापूर्वक विराज रहे हैं।

-धर्मन्द्र कुमार जैन, जयपुर

### सवाईमाधोपुर में धर्मजागरणा के विविध कार्यक्रम सम्पन्न

आचार्यप्रवर पूज्य श्री कजोड़ीमलजी म.सा. के 143वें स्मृति-दिवस एवं पूज्य आचार्य श्री हस्ती के 93वें आचार्य पदारोहण दिवस, अक्षय तृतीया पर बजरिया टोंक रोड़ स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में नगर परिषद् क्षेत्रीय सामूहिक सामायिक संगोष्ठी हुई। इसमें वक्ताओं में श्री त्रिलोकचन्दजी जैन, श्री सुरेशचन्दजी जैन-कुशतला, श्री जम्बूकुमारजी जैन, श्री महेशजी जैन, श्रीमती रेखाजी, श्री रविकान्तजी, श्रीमती अमिताजी, श्री ऋषभ कुमारजी जैन द्वारा गुरु गुणगान के साथ अक्षय तृतीया की ज्ञानवर्धक जानकारी प्रदान की गई। वर्षीतप की अनुमोदना सामूहिक गायन रूप में की गई। मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. द्वारा रचित उत्तराध्ययनसूत्र काव्य गीतिका 'वीर प्रभु की अन्तिम वाणी' आधारित कण्ठस्थीकरण प्रतियोगिता की रूपरेखा श्री कुशलचन्दजी जैन गोटेवाला ने प्रस्तुत करते हुए बताया कि इसमें प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को क्रमशः 21,000, 11,000 एवं 5,000 रुपये तथा 11 सान्त्वना पुरस्कार (प्रत्येक को) 500 रुपये प्रदान किए जाएँगे। प्रमुख वक्ता एवं मुख्य अतिथि डॉ. धर्मचन्दजी जैन, जयपुर ने प्रथम प्रतियोगी श्रीमती रेखाजी जैन अध्यक्ष, श्राविका मण्डल शाखा बजरिया को वीर प्रभु की अन्तिम वाणी पुस्तक की प्रति प्रदान कर प्रतियोगिता का शुभारम्भ किया एवं उत्तराध्ययनसूत्र की महत्ता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में शहर सवाईमाधोपुर, बजरिया, आलनपुर, आवासनमण्डल, महावीर नगर और आदर्शनगर के श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया।

09 मई को सामायिक-स्वाध्याय के प्रेरक इतिहास मार्तण्ड आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. के 31वें स्मृति दिवस को 'सामूहिक प्रार्थना दिवस' के रूप में प्रार्थना, सामायिक, स्वाध्याय तप-त्याग पूर्वक मनाया गया। गुरु भक्तों द्वारा क्षेत्र में अपने घरों/निज निवास पर भी पारिवारिक प्रार्थना का लक्ष्य रहा।

महान् अध्यवसायी, भावी आचार्य श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. का 48वाँ दीक्षा दिवस 15 मई को इन्दिरा कॉलोनी, बजरिया स्थित सामायिक भवन में श्रद्धा-भक्ति की भावना के साथ सामूहिक सामायिक तथा विगय-त्याग दिवस के रूप में मनाया गया। श्रावक-श्राविकाओं ने नवकारसी, पोरसी, उपवास, एकाशन, नीवी तप की आराधना की।

-धनसुरेश जैन

### जयपुर में रत्नम् प्रोफेशनल फोरम का आयोजन

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जयपुर द्वारा जवाहर नगर स्थानक में 1 मई, 2022 को आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 की सन्निधि में

रत्नम् प्रोफेशनल फोरम की धार्मिक संगोष्ठी रखी गई जिसमें आई.ए.एस., डॉक्टर्स, इञ्जीनियर्स, वकील, एम.बी.ए आदि अनेक पढ़े-लिखे प्रोफेशनल लोगों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। आई.ए.एस. श्री महेन्द्रजी पारख ने ईमानदारी और सत्य से कैसे सुकून मिलता है और उसका क्या प्रभाव रहता है इसके अनेक प्रभावी संस्मरण सुनाकर ईमानदारी पर अडिग रहने का सुझाव दिया। डॉ. राकेशजी हीरावत ने अपने विचार प्रकट कर सबको प्रभावित किया। विशेषकर श्री निपुणजी डागा ने अपने प्रभावी वक्तव्य के माध्यम से अपने युवा साथियों से आह्वान करते हुए कहा कि हम इतने धनवान कैसे हुए? प्राचीन समय में भी हमारे पूर्वज अमीर रहे हैं और वर्तमान में भी अमीर ही हैं। यह सब हमें पुण्यवानी से प्राप्त हुआ है। अतः हमें विचार करना है कि हम अपनी पुण्यवानी को कैसे बढ़ाएँ यह सब संघसेवा, सन्तदर्शन आदि के माध्यम से सम्भव हो सकता है। इस धार्मिक संगोष्ठी का सफल सञ्चालन श्री नमनजी डागा ने बहुत ही सुन्दर और सामयिक विचारों के साथ किया। अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री प्रमोदजी महनोत ने भी बिगड़ती पीढ़ी को आगाह करते हुए सुसंस्कारवान् बनने की मूल्यवान् प्रेरणा दी।

अन्त में श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने फरमाया कि अक्सर देखा जाता है पढ़ा-लिखा व्यक्ति श्रद्धा से कम तर्क से ज्यादा चलता है। यही कारण है कि पढ़े-लिखे लोगों का धार्मिक क्षेत्र में क्रियात्मक पक्ष के नाम पर यह तर्क रहता है कि मुँहपत्ती बाँधकर सामायिक करना ही धर्म नहीं है, दिल साफ होना चाहिए। जो लोग ऐसा तर्क करते हैं उन लोगों से मेरा यह आग्रह है कि सबसे पहली बात धर्म तर्क का विषय नहीं है, श्रद्धा का विषय है। दूसरी बात हमको यह समझना होगा कि धर्म के दो पक्ष होते हैं-व्यवहारपक्ष और निश्चय पक्ष। आपका तर्क निश्चय पक्ष से ज्यादा जुड़ा हुआ है, व्यवहार पक्ष का भी सन्तुलन करके चलना होगा। यह संगोष्ठी जयपुर में पहली बार आयोजित की गई, जो एक प्रेरक प्रसङ्ग बन गया।

-संजीव कोटारी, मन्त्री

## अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा धार्मिक शिक्षण एवं नैतिक संस्कार शिविरों का आयोजन

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी ग्रीष्मकालीन अवकाश में धार्मिक शिक्षण एवं नैतिक संस्कार शिविरों का आयोजन 22 मई, 2022 से 05 जून, 2022 के मध्य किया जा रहा है। इस शिविर में लगभग 70 स्थानों पर 400 कुशल अध्यापकों द्वारा 5,000 बच्चों को धार्मिक अध्यापन के साथ नैतिक शिक्षा प्रदान की जा रही है।

-विकासराज जैन, महासचिव

## जयपुर में उच्च अध्ययन हेतु छात्र-छात्राओं को सुनहरा अवसर

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (सिद्धान्त-शाला) में

वर्ष 2022-23 के प्रवेश हेतु रजिस्ट्रेशन प्रारम्भ

नैतिक-आध्यात्मिक संस्कारों के साथ जयपुर में रहकर उच्च शैक्षणिक अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों हेतु संस्थान में प्रवेश के लिए रजिस्ट्रेशन प्रारम्भ है। कक्षा 8वीं से ऊपर के छात्र संस्थान में प्रवेश हेतु आवेदन कर सकते हैं। संस्थान में विद्यार्थियों के लिए उचित आवास-भोजन व्यवस्था के साथ, कम्प्यूटर शिक्षण, इंग्लिश स्पीकिंग क्लासेज, सेमिनार एवं मोटिवेशनल कक्षाएँ आयोजित होती रहती हैं। शैक्षणिक अध्ययन के साथ संस्थान द्वारा निर्धारित धार्मिक पाठ्यक्रम का अध्ययन भी संस्थान में करवाया जाता है। जो छात्र संस्कारित एवं अनुशासित रहकर अध्ययन करना चाहते हैं, वे रजिस्ट्रेशन के लिए सम्पर्क करें।

नोट-रजिस्ट्रेशन फार्म रत्नसंघ की वेबसाइट [ratansangh.com](http://ratansangh.com) पर जाकर About us option पर click कर

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान के पेज से डाउनलोड किया जा सकता है अथवा हमारे फेसबुक पेज <https://www.facebook.com/profile.php?id=100011420126008> से भी जुड़कर अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। अधिक जानकारी एवं रजिस्ट्रेशन हेतु सम्पर्क करें-दिलीप जैन 'प्राचार्य', ए-9, महावीर उद्यानपथ, बजाजनगर, जयपुर-302015 (राज.) फोन न. 0141-2710946, 94614-56489, 79762-46596 Email: ahassansthan@gmail.com

**श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (बालिका छात्रावास) में**

**वर्ष 2022-23 के प्रवेश हेतु रजिस्ट्रेशन प्रारम्भ**

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा सञ्चालित श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (बालिका छात्रावास) में प्रवेश हेतु सत्र 2022-23 के लिए आवेदन-पत्र आमन्त्रित हैं। कक्षा 7वीं से 12वीं एवं स्नातक प्रथम वर्ष में अध्ययन की इच्छुक छात्राएँ आवेदन कर सकती हैं। छात्रावास में बालिकाओं के लिए निःशुल्क आवास, भोजन एवं सुरक्षा की उत्तम व्यवस्था है। शैक्षणिक अध्ययन हेतु प्रवेश लेने वाली छात्राओं को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षा देना अनिवार्य है। छात्रावास में बालिकाओं के सर्वांगीण विकास का ध्यान रखते हुए समय-समय पर मोटिवेशनल क्लासेज, सेमिनार, वेबिनार, गृह कौशल, पर्सनलिटी डवलपमेंट जैसी विशेष कक्षाएँ लगाई जाती हैं। प्राप्त आवेदनों में वरीयता क्रम के अनुसार चयनित छात्राओं का साक्षात्कार लिया जायेगा। प्रवेश पाने वाली छात्राओं को संस्थान द्वारा निर्धारित नियमों का पूर्ण पालन करना अनिवार्य है। इच्छुक छात्राएँ अपना आवेदन पत्र भर कर संस्थान में जमा करा सकती हैं।

आवेदन-पत्र प्राप्त करने एवं जमा कराने हेतु सम्पर्क सूत्र-श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, 12/251 के सामने, कावेरी पथ, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राज.), मो. 9314506509 E-mail-sjratangirlssansthan@gmail.com

**विद्यार्थियों के जीवन-निर्माण में बनें सहयोगी**

**छात्र-छात्रा संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण योजना**

**(प्रतिवर्ष एक छात्र के लिए रुपये 24,000 सहयोग की अपील)**

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, (सिद्धान्त शाला) जयपुर, संघ एवं समाज के प्रतिभाशाली छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए वर्ष 1973 से सञ्चालित संस्था है। इस संस्था से अब तक सैकड़ों विद्यार्थी अध्ययन कर प्रशासकीय, राजकीय एवं प्रोफेशनल क्षेत्र में कार्यरत हैं। अनेक छात्र व्यावसायिक क्षेत्रों में सेवारत हैं। समय-समय पर ये संघ-समाजसेवी कार्यों में निरन्तर अपनी सेवाएँ भी प्रदान कर रहे हैं। वर्तमान में भी यहाँ अध्ययनरत विद्यार्थियों को धार्मिक-नैतिक संस्कारों सहित उच्च अध्ययन के लिए उचित आवास-भोजन की निःशुल्क व्यवस्थाएँ प्रदान की जाती हैं। व्यावहारिक अध्ययन के साथ ही छात्रों को धार्मिक अध्ययन की व्यवस्था भी संस्था द्वारा की जाती है। वर्तमान में संस्थान में 71 विद्यार्थियों के लिए अध्ययनानुकूल व्यवस्थाएँ हैं। संस्था को सुचारू रूप से चलाने एवं इन बालकों के लिए समुचित अध्ययनानुकूल व्यवस्था में आप-सबका सहयोग अपेक्षित है। आपसे निवेदन है कि छात्रों के जीवन-निर्माण के इस पुनीत कार्य में बालकों के संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण में सहयोगी बनें।

इसमें सहयोगी बनने वाले महानुभावों के नाम जिनवाणी में क्रमिक रूप से प्रकाशित किये जा रहे हैं। संस्थान के लिए पूर्व छात्रों का एवं निम्नलिखित महानुभावों का सहयोग प्राप्त हुआ है-

33. श्री प्रकाशचन्दजी हीरावत, जयपुर	2,00,000/-
34. श्री कैलाशचन्दजी हीरावत (डी. के. एण्टरप्राइजेज), जयपुर	1,00,000/-
35. श्री माँगीलालजी सिंघवी, कमला नेहरु नगर, जोधपुर	24,001/-
36. श्रीमती अंजलिजी जैन-श्री आशीषजी गुप्ता, बेंगलूरु (स्व. श्री राजेन्द्र प्रसादजी जैन, जयपुर की प्रथम पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में पुत्री-दामाद द्वारा भेंट।)	24,000/-
37. श्रीमती कान्ताजी मेहता, मोटेरा, अहमदाबाद (हस्ते सुपौत्र श्री सौरभजी मेहता)	24,000/-
38. श्री मयूरजी जैन, मालवीय नगर, जयपुर	24,000/-

आप द्वारा दिया गया आर्थिक सहयोग 80जी धारा के तहत कर मुक्त होगा। आप यदि सीधे बैंक खाते में सहयोग कर रहे हैं तो चेक की कॉपी, ट्रांजेक्शनस्लिप अथवा जानकारी हमें अवश्य भेजे।

खाते का विवरण:-Name : **GAJENDRA CHARITABLE TRUST**, Account Type : *Saving*, Account Number : **10332191006750**, Bank Name : *Punjab National Bank*, Branch : *Khadi Board, Bajaj Nagar, Jaipur*, Ifsc Code : **PUNB0103310**, Micr Code : **302022011**, Customer ID : **35288297** निवेदक : डॉ. प्रेमसिंह लोढ़ा (व्यवस्थापक), सुमन कोठारी (संयोजक), अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें-दिलीप जैन 'प्राचार्य' 9461456489, 7976246596

### (प्रतिवर्ष एक छात्रा के लिए रुपये 24,000 सहयोग की अपील)

श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (बालिका), मानसरोवर-जयपुर, संघ और समाज की प्रतिभाशाली छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिए वर्ष 2017 से सञ्चालित संस्था है। यहाँ इस संस्था में वर्तमान में 40 अध्ययनरत छात्राओं को धार्मिक-नैतिक संस्कारों सहित उच्च अध्ययन के लिए उचित आवास-भोजन की निःशुल्क व्यवस्थाएँ प्रदान की जा रही हैं। व्यावहारिक अध्ययन के साथ छात्राओं को धार्मिक अध्ययन की व्यवस्था भी संस्था द्वारा की जाती है। संस्था को सुचारू रूप से चलाने एवं इन बालिकाओं के लिए समुचित अध्ययनानुकूल व्यवस्था में आप-सबका सहयोग अपेक्षित है। आपसे निवेदन है कि छात्राओं के जीवन-निर्माण के इस पुनीत कार्य में तथा उनके संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण में सहयोगी बनें।

5. श्रीमती मधुरिका जी जैन, हैदराबाद एक छात्रा हेतु सहकार राशि। 24,000/-

6. श्रीमती मंजुलाजी, सुपत्र-अभिषेकजी, प्रज्वलजी जैन पूज्य स्व. श्री राजेन्द्रप्रसादजी जैन,

श्रीजी नगर, जयपुर की प्रथम पुण्यतिथि 06 जून, 2022 पर एक छात्रा हेतु सहकार राशि। 24,000/-

आप द्वारा दिया गया आर्थिक सहयोग 80जी धारा के तहत कर मुक्त होगा। आप यदि सीधे बैंक खाते में सहयोग कर रहे हैं तो चेक की कॉपी, ट्रांजेक्शनस्लिप अथवा जानकारी हमें अवश्य भेजे।

खाते का विवरण:-Name : **SAMYAGGYAN PRACHARAK MANDAL**, Account Type : *Saving*, Account Number : **51026632997**, Bank Name : *SBI*, Branch : *Bapu Bazar, Jaipur*, Ifsc Code : **SBIN0031843** निवेदक : अशोक कुमार सेठ, मन्त्री। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क फोन नं. अनिल जैन 9314635755

### श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (बालिका) में अधिष्ठाता की आवश्यकता

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा कावेरी पथ, मानसरोवर, जयपुर में बालिकाओं के अध्ययन हेतु सञ्चालित

श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (छात्रावास) के लिए एक अनुभवी एवं जैनधर्म की तत्त्वज्ञा श्राविका की अधिष्ठाता हेतु आवश्यकता है। अधिष्ठाता पद हेतु इच्छुक अनुभवी महिला अभ्यर्थी अपने बाँयोडाटा के साथ आवेदन-पत्र मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, सुबोध बाँयज सीनियर सैकेण्डरी विद्यालय के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) के पते पर प्रेषित करें। सम्पर्क सूत्र-विनयचन्द डागा-कार्याध्यक्ष 9314506509, अशोक कुमार सेठ-मन्त्री 9314625596

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री

### शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा 17 जुलाई, 2022 को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की कक्षा 1 से 12 तक की आगामी परीक्षा दिनांक 17 जुलाई 2022, रविवार को दोपहर 12:30 से 3:30 बजे तक आयोजित की जाएगी।

1. परीक्षा, ज्ञान वृद्धि का प्रमुख साधन है। क्रमबद्ध एवं सही ज्ञान ही व्यक्ति को हित-अहित की जानकारी कराता है। अतः ज्ञान बढ़ाने एवं सुसंस्कार पाने हेतु आप स्वयं भी परीक्षा दें तथा अन्य भाई-बहनों को भी परीक्षा में भाग लेने की प्रभावी प्रेरणा कर धर्म दलाली का लाभ प्राप्त करें।
2. कम से कम 10 परीक्षार्थी होने पर परीक्षा केन्द्र नया प्रारम्भ किया जा सकता है।
3. परीक्षा से सम्बन्धित आवेदन-पत्र, पुस्तकें शिक्षण बोर्ड कार्यालय से प्राप्त की जा सकती हैं।
4. सभी उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को प्रोत्साहन पुरस्कार व मेरिट में आने वालों को विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।
5. परीक्षा में भाग लेने हेतु आवेदन-पत्र भरकर जमा कराने की अंतिम दिनांक 17 जून-2022 है। नियत समय में आवेदन-पत्र जमा कराना अनिवार्य है।

परीक्षा सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें-शिक्षण बोर्ड कार्यालय-सामायिक-स्वाध्याय भवन, नेहरूपार्क, जोधपुर-342003 (राज.) 291-2630490, व्हाट्सएप्प नं. 7610953735 Website : jainratnaboard.com, E-mail: shikshanboardjodhpur@gmail.com

### 19 जून 2022 को जोधपुर में कार्यशाला आयोजित

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा परीक्षा सम्बन्धी गतिविधियों की समीक्षा करने तथा उनमें अधिक गुणवत्ता लाने हेतु जोधपुर में रविवार 19 जून, 2022 को एकदिवसीय कार्यशाला आयोजित की जा रही है। पल्लीवाल, पोरवाल, मेवाड़, मारवाड़, पंजाब, हरियाणा, मध्यप्रदेश, गुजरात आदि क्षेत्रों के अधीक्षक-निरीक्षकों से निवेदन है कि कार्यशाला में पधारने की अपनी स्वीकृति व्हाट्सएप्प नम्बर 7610953735 पर प्रेषित करने की कृपा करावें। सम्पर्क सूत्र-कार्यालय : 0291-2630490 पंकज गांग-9352673939, सुरेश हींगड़-9444852330

### जुलाई में स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर का आयोजन जोधपुर में

स्वाध्यायियों के सर्वांगीण विकास को लक्ष्य में रखकर श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा 20 से 24 जुलाई तक स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर का आयोजन व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक आचार्य भगवन्त 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा एवं महासती मण्डल आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में सूर्यनगरी जोधपुर में आयोजित किया जा रहा है। जिसमें नये स्वाध्यायी एवं कनिष्ठ स्वाध्यायी जिन्होंने एक वर्ष से लेकर चार वर्ष तक पर्युषण पर्व में सेवाएँ दी हैं उनको आमन्त्रित किया गया है। सम्बन्धित स्वाध्यायियों से निवेदन है कि शिविर में पधारने का लक्ष्य रखें। शिविर में पधारने की स्वीकृति 10

जुलाई, 2022 तक निम्नलिखित में से किसी भी सम्पर्क सूत्र पर भेजने का कष्ट करावें। शिविर में पधारने पर गुरु भगवन्तो एवं महासती मण्डल के दर्शन-प्रवचन का लाभ भी प्राप्त होगा।

शिविर हेतु सम्पर्क सूत्र-कार्यालय : 0291-2624891, 9414126279, धर्मचन्द जैन-9351589694, सुरेश हींगड़-9444852330, धीरज डोसी-9462543360 नोट-शिविर में पधारने वाले स्वाध्यायी सामायिक के उपकरण, अन्तगडसूत्र तथा प्रतिक्रमणसूत्र आदि की पुस्तकें अवश्य साथ में लेकर पधारें।

-सुनील संकलेचा, सचिव

## जलगाँव में प्राकृत भाषा आवासीय प्रशिक्षण-शिविर का आयोजन

श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ, जलगाँव द्वारा 30 जून से 3 जुलाई, 2022 तक चार दिवसीय प्राकृत भाषा आवासीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें श्री प्रकाशचन्द्रजी जैन (गुरुजी) द्वारा प्राकृत भाषा का अध्यापन कराया जाएगा। इच्छुक श्रावक-श्राविकाएँ शीघ्रातिशीघ्र शिविर हेतु अपना रजिस्ट्रेशन करवाएँ।

शिविर स्थल-आर. सी. बाफना जैन स्वाध्याय भवन, आकाशवाणी चौक, गणपति नगर, जलगाँव (महाराष्ट्र)। शिविरार्थियों हेतु निर्देश-1. 30 जून, 2022 गुरुवार को प्रातः 9 बजे तक शिविर स्थल पर पहुँचना अनिवार्य है। 2. सामायिक के उपकरण और आवश्यक पुस्तकें साथ लावें (शास्त्र स्वाध्याय माला)। 3. रजिस्ट्रेशन की अन्तिम तिथि 20 जून रहेगी। सम्पर्क सूत्र-मनोज संचेती-9156898108, शुभम बोहरा-8085893817

## समग्र जैन चातुर्मास सूची 2022 का प्रकाशन

मुम्बई-समग्र जैन समाज की एकता, समन्वय और संगठन में एकरूपता की भावना उत्पन्न करने हेतु समग्र जैन सम्प्रदायों (श्वेताम्बर मूर्तिपूजक, स्थानकवासी, तेरापंथी एवं दिगम्बर सम्प्रदायों) के जैन साधु-साध्वियों के प्रतिवर्ष होने वाले चातुर्मास एवं समाज की सभी गतिविधियों की सम्पूर्ण जानकारियाँ प्राप्त करने हेतु समग्र जैन चातुर्मास सूची का विगत 43 वर्षों से प्रतिवर्ष नियमित प्रकाशन किया जा रहा है। इस वर्ष भी सम्पूर्ण जैन समाज के चारों समुदायों के 17,000 से अधिक जैन साधु-साध्वियों के 2022 में स्वीकृत होने वाले चातुर्मासों एवं समाज की सभी गतिविधियों की जानकारियों से युक्त 'समग्र जैन चातुर्मास सूची 2022 के 44वें अंक का प्रकाशन करने का निश्चय किया गया है। अतः आपसे नम्र निवेदन है कि आपके गाँव/शहर/कस्बे/उपनगरों में जिन-जिन पूज्य जैन गच्छनायक, आचार्यों, साधु-साध्वियों के 2022 वर्ष के चातुर्मास स्वीकृत हुए हैं, उन सभी साधु-साध्वियों के चातुर्मास की जानकारियाँ शीघ्र भिजवाने की कृपा करावें, ताकि हम चातुर्मास प्रारम्भ होने तक इसका प्रकाशन कर सकें। चातुर्मास की जानकारियाँ ई-मेल से भी प्रेषित कर सकते हैं। सम्पर्क सूत्र-बाबूलाल जैन उज्ज्वल सम्पादक (गजेन्द्र सन्देश), 105, तिरुपति अपार्टमेंट, आकुर्ली रोड़ नं. 1, रेलवे स्टेशन के सामने, कांदिवली (पूर्व), मुम्बई-400101, मोबाइल 9324521278, 9152523434 ई-मेल [ujjwalprakashan@gmail.com](mailto:ujjwalprakashan@gmail.com)

## संक्षिप्त समाचार

जयपुर-श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जयपुर के तत्त्वावधान में गत 27 वर्षों से ग्रीष्मावकाश के दौरान बालक-बालिकाओं का धार्मिक एवं नैतिक संस्कार शिविर लगाया जाता रहा है। इस वर्ष भी जयपुर के 12 विभिन्न क्षेत्रों पर 15 मई से 05 जून, 2022 तक शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। शिविर में लगभग 800 बालक-बालिकाएँ प्रति दिन धार्मिक एवं नैतिक संस्कार की शिक्षा समाज के अनुभवी एवं विद्वान् श्रावक-श्राविकाओं से प्राप्त कर रहे हैं। शिविर में सामायिकसूत्र, प्रतिक्रमणसूत्र, पच्चीस बोल, भक्तामर स्तोत्र इत्यादि के साथ सप्तकुव्यसन के दुष्प्रभाव

एवं इनसे दूर रहने की प्रेरणा बच्चों को दी जा रही है। शिविर के दौरान रविवार 22 मई, 2022 को सुबोध लॉ कॉलेज के सभागार में भगवान महावीर स्वामी के उपदेशों पर आधारित फिल्म भी दिखायी गई।

-रितेश बोधरा, शास्त्रा प्रमुख

**जलगाँव**-श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ, जलगाँव द्वारा 27 अप्रैल से 1 मई, 2022 तक पंचदिवसीय ग्रीष्मकालीन जैन धार्मिक संस्कार एवं स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर 15 वर्ष से अधिक आयु वाले बालक-बालिकाओं एवं स्वाध्यायियों के लिए नवजीवन मंगल कार्यालय में आयोजित हुआ। शिविर में जलगाँव, बड़वाह, सिल्लोड़, शिरूड़, तोंड़ापुर, जामनेर, वहजी, मुकुटी, भुसावल, नासिक, धामणगाँव रेलवे आदि स्थानों से 160 के लगभग शिविरार्थियों ने भाग लिया। वरिष्ठ अध्यापक श्री प्रकाशचन्द्रजी जैन, श्री धर्मेन्द्रजी जैन-जयपुर, सौ. मंगलाजी चोरड़िया, श्रीमती लीलाजी सालेचा, सौ. किरणजी बोरा, सौ. अनिताजी लुंकड, श्री मनोजजी संचेती, श्री शुभमजी बोहरा, जलगाँव एवं श्री सुरेशजी हिंगड, जोधपुर द्वारा 4 कक्षाओं के माध्यम से 25 बोल, 67 बोल, सामायिकसूत्र अर्थ एवं प्रश्नोत्तर, थोकड़े, उत्तराध्ययनसूत्र, बोर्ड परीक्षा का पाठ्यक्रम, संस्कार एवं सामान्य जानकारी का अध्यापन कराया गया।

श्री आनन्दजी बम्ब-सटाणा ने जैनधर्म और विज्ञान तथा जैनधर्म की खूबियाँ इन 2 सत्रों के माध्यम से कक्षा ली। आध्यामिक शिक्षण बोर्ड परीक्षा के 80 फार्म भरे गए एवं 21 नये स्वाध्यायियों ने पर्युषण सेवा हेतु स्वीकृति प्रदान की। शिविर सम्बन्धी भोजन, यात्रा खर्च, पुरस्कार आदि का संविभाग लाभ श्रीमती नयनतारा रतनलालजी सी. बाफना परिवार द्वारा किया गया।

-मन्रोज संचेती, जलगाँव

**बेंगलूरु**-श्री कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ द्वारा आयोजित स्वाध्यायी अभिनन्दन एवं सम्मेलन 22 मई, 2022 को सम्पन्न हुआ। राजाजीनगर स्थित एच. उत्तमचन्द्र प्रमिला भण्डारी भवन में आयोजित समारोह में स्वाध्यायी सदस्यों एवं दानदाता आधार स्तम्भ सदस्यों का सम्मान किया गया। इसी अवसर पर वार्षिक परीक्षा तथा पत्राचार योजना के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री विमलचन्द्रजी धारीवाल को 'स्वाध्यायी रत्न' की पदवी से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ महिला अध्यक्ष श्रीमती सरोजबाई पुनमिया ने किया। युवा अध्यक्ष श्री जेवरीमलजी पालगोता ने सभी का स्वागत किया। संघ मन्त्री श्री सुरेशचन्द्रजी गुलेछा ने संघ की विस्तृत रिपोर्ट रखते हुए संघ की गतिविधियों की जानकारी प्रदान की एवं संघ की असाम्प्रदायिक नीति का विशेष महत्त्व बताया। कार्यक्रम का सञ्चालन श्री शान्तिलालजी बोहरा ने किया।

-शान्तिलाल बोहरा, संयोजक

**नागपुर**-श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, वर्धमान नगर, नागपुर द्वारा रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, जिनशासन गौरव, आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. एवं महान् अध्यवसायी भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. की सुशिष्या एवं साध्वीप्रमुखा महासती तेजकंवरजी म.सा. कि नेश्रायवर्तिनी व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में 13 जुलाई से 5 अगस्त 2022 तक नागपुर की पावन धरा पर होने जा रहे चातुर्मास के पहले ही दिन से 24 दिवसीय 24 तीर्थङ्कर भगवन्तों की आराधना एवं 20 बोलों की साधना होने जा रही है। इच्छुक भाई-बहन 9423063477 मोबाइल पर व्हाट्सएप्प द्वारा अपनी स्वीकृति प्रदान कर सकते हैं। अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क सूत्र-सौ. ललिता बाफना-9923054230, डॉ. अरुणा सिंगी-9403119182, सौ. रुचि कटारिया-942269418, सौ. प्रीति पीचा-9518308833।

## बधाई

**चेन्नई**-मद्रास विश्वविद्यालय के 164वें दीक्षान्त समारोह में डॉ. शर्मिलाजी सोलंकी को डॉ. प्रियदर्शना जैन के कुशल दिशा-निर्देशन में 'कम्परेटिव स्टडी ऑफ जैन वे ऑफ लिविंग एण्ड नैचुरोपैथी' विषय पर शोध कार्य सम्पन्न करने पर इन्हें पीएच.डी. की उपाधि प्रदान की गयी।



**जोधपुर**-श्री भानुज सुपुत्र श्री प्रवीणजी सुपौत्र श्री बी. एल. टाटिया ने डब्ल्यू.पी.आई., बोस्टन, अमेरिका से डबल मेजर (गणित एवं भौतिक शास्त्र) पाठ्यक्रम पूर्ण किया तथा अब एस्ट्रोफिजिक्स में आगे अध्ययन करना चाहते हैं।



**अजमेर**-सुश्री सेजलजी सुपौत्री स्व. श्री अमरचन्दजी काँसवा, सुपुत्री श्री सन्तोषजी-कल्पनाजी काँसवा ने अखिल भारतीय नीट की परीक्षा उत्तीर्ण कर राजकीय मेडिकल कॉलेज, भीलवाड़ा में एम.बी.बी.एस. के लिए प्रवेश प्राप्त किया है।

## श्रद्धाञ्जलि

**भोपालगढ़**-रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, जिनशासन गौरव आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य महान् तपस्वी श्रद्धेय श्री मोहनमुनिजी म.सा. का 10 मई, 2022 को 87 वर्ष की वय में क्रियोद्धारक भूमि भोपालगढ़ में संधारे सहित महाप्रयाण हो गया। तपस्वी मुनिराज दीक्षा 71 वर्ष की आयु में आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के मुखारविन्द से मुम्बई महानगर में मई, 2008 को अन्य तीन मुमुक्षुओं के साथ सम्पन्न हुई। गृहस्थावस्था से ही आप तिथियों पर उपवास और पौषध आदि किया करते थे। दीक्षा के बाद आप एकान्तर की तपस्या नियमित रूप से कर रहे हैं। कभी-कभी बेले-बेले और कभी तेले-तेले पारणा तथा अनेक पाँच, आठ आदि की तपस्या भी आप करते रहे। आप सरल और सहज स्वभावी थे। धर्म आपके रोम-रोम में रमा हुआ था। निरन्तर अप्रमत्त रहकर शास्त्र स्वाध्याय में रमण करते थे। प्रत्येक आगन्तुक को आप धर्माराधन की प्रेरणा करते थे। अन्तिम समय में आपने तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. के मुखारविन्द से संधारा ग्रहण कर अपना तीसरा मनोरथ पूर्ण कर लिया। आपकी सांसारिक धर्मसहायिका चन्दाबाईजी धोका, दोनों सुपुत्र संजयजी, सुशीलजी और दोनों सुपुत्रियाँ तथा समूचा परिवार जलगाँव में धर्माराधना में सदैव तत्पर रहता है।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

**अजमेर**-शान्तक्रान्ति संघ के आचार्य श्री विजयराजजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती महास्थविर गणाधिपति श्रमण श्रेष्ठ श्री शान्तिमुनिजी म.सा. का अजमेर में 13 मई, 2022 को 77 वर्ष की वय में देवलोकगमन हो गया। वे सहृदय, मृदु व्यवहारी, स्पष्टवक्ता एवं विपुल ज्ञान के धनी थे। उन्होंने 24 फरवरी, 1963 को 16 वर्ष की वय में आचार्य श्री नानालालजी म.सा. के सान्निध्य में श्रमण दीक्षा अङ्गीकार की। उन्होंने जैनागम, पिटकों, टीका, चूर्णि, भाष्य, न्यायदर्शन आदि ग्रन्थों का गहन अध्ययन चिन्तन, मनन एवं अनुशीलन किया तथा साहित्य के क्षेत्र में एक अनूठा कीर्तिमान स्थापित किया।

**जोधपुर**-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती चाँदकँवरजी धर्मसहायिका श्री कनकराजजी कुम्भट का 08 मई, 2022 को देहावसान हो गया। आपकी सन्त-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. आदि तथा महासती मण्डल के जोधपुर चातुर्मास में आप सहित परिवारजनों ने दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण के साथ धर्म-ध्यान का लाभ प्राप्त किया। कुम्भट परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा, स्वधर्मों



वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में सदैव समर्पित रहा है। संघ के प्रति निष्ठा, सेवाभावना के कारण आपके धर्मसहायक आदरणीय श्री कनकराजजी श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर के अध्यक्षीय पद की महनीय सेवाओं का निर्वहन कर चुके हैं और वर्तमान में परामर्शदाता पद का दायित्व बखूबी निर्वहन कर रहे हैं। आपके सुपुत्र श्री महेन्द्रजी कुम्भट रत्नसंघ के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष पद का दायित्व तथा गजेन्द्रनिधि ट्रस्टी के रूप में अपनी महत्वपूर्ण सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं, श्री अशोकजी कुम्भट अहमदाबाद में सन्त-सतीवृन्द की विहार सेवा में अपनी अमूल्य सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

**बीकानेर**-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती राजकुमारीजी धर्मसहायिका स्व. श्री प्रसन्नमलजी डागा का 08 मई, 2022



को देहावसान हो गया। आपकी सन्त-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पण्डित रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा तथा महासती मण्डल के जोधपुर चातुर्मास में आप सहित परिवारजनों ने दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण के साथ धर्म-ध्यान का लाभ प्राप्त किया। डागा परिवार संघसेवा, समाज-सेवा, स्वधर्मी वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में सदैव समर्पित रहा है। संघ के प्रति निष्ठा, सेवा भावना के कारण आपके भतीजे श्री नवीनजी डागा बीकानेर में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के मन्त्री पद का दायित्व बखूबी निर्वहन कर रहे हैं। श्री राजेन्द्रमलजी डागा दिल्ली में अपनी अमूल्य सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

**कोटा**-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती विमलादेवीजी धर्मसहायिका श्री रामविलासजी जैन (बाबई वाले) महावीर नगर



द्वितीय, कोटा का देवलोक गमन 25 मार्च, 2022 को 70 वर्ष की वय में हो गया। आप बहुत ही सरल स्वभावी और उदारमना थी। आपकी सन्त-सतीवृन्द के प्रति अटूट श्रद्धाभक्ति थी। सभी धार्मिक क्रियाओं में आपकी अभिरुचि रहती थी। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गयी हैं।



**जयपुर**-धर्मनिष्ठ, श्रद्धानिष्ठ सुश्रावक श्री भागचन्दजी सुपुत्र स्व. श्री फूलचन्दजी नवलखा का 23 अप्रैल, 2022 को देवलोकगमन हो गया। आप एवं आपकी धर्मसहायिका स्व. श्रीमती पारसदेवीजी नवलखा गुरु भगवन्तों के दर्शन-वन्दन में तत्पर रहते थे। नवलखा परिवार रत्नसंघ की सभी गतिविधियों में सक्रिय रूप से जुड़ा हुआ है। आप सन्त-सतीवृन्द की सेवा एवं स्वधर्मी भाई-बहिनों के आतिथ्य सत्कार में अग्रणी रहते थे।

**पहुँना**-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री रोशनलालजी बोहरा का 13 मई, 2022 को निधन हो गया। आप प्रतिदिन नियमित



सामायिक-स्वाध्याय, रात्रिभोजन-त्याग करते थे एवं सन्त-सतियों की आहार-विहार सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे। आप रास्ते में विहार धाम बनाने की प्रेरणा करते थे, जिसमें सारा खर्च आप उठाते थे। आप कुशल व्यवसायी प्रतिष्ठित व्यक्तित्व के धनी, सरल, उदारमना एवं मृदुभाषी थे। संघ समाज में एवं गाँव वाले सभी आपसे सलाह लेकर कार्य को गति देते थे। आप विचक्षण सूझबूझ के धनी थे एवं संघ के प्रत्येक कार्य में अग्रणी रहते थे।

-सुरेश हीरंगड

उपर्युक्त दिवगंत आत्माओं को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं सभी सम्बद्ध संस्थाओं के सदस्यों की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।

## रचनाएँ आमन्त्रित

जिनवाणी के लेखकों एवं रचनाकारों से प्रामाणिक, प्रेरक, प्रासङ्गिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों से सम्पन्न लेख, कविता आदि आमन्त्रित हैं।

-सम्पादक

## ❀ साभार-प्राप्ति-स्वीकार ❀

- 1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन  
(अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक**
- 16312 श्री राजेन्द्रजी जैन, कोटा (राजस्थान)  
 16313 श्री घीसूलालजी सुराणा, पाली (राज.)  
 16314 श्री हेमन्त कुमारजी जैन, सूरत (गुजरात)  
 16315 श्री अंकितजी जैन, जयपुर (राजस्थान)  
 16316 श्रीमती आशाजी गुप्ता, जयपुर (राजस्थान)  
 16317 श्री महावीर प्रसादजी जैन, दिल्ली  
 16318 सौ. पायलजी लोढ़ा, गुरुग्राम (हरियाणा)  
 16319 श्रीमती रितुजी धारीवाल, मुम्बई (महाराष्ट्र)  
 16320 श्री ओमप्रकाशचन्दजी सिंघवी, जोधपुर (राजस्थान)
- जिनवाणी मासिक पत्रिका हेतु साभार**
- 11000/-श्री अनिलजी-श्रीमती सुधाजी, आशीषजी, अदितिजी बोहरा, जोधपुर, पूज्या मातुश्री श्रीमती सुशीलाजी बोहरा के 82वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम।
- 2500/- श्रीमती सुशीलाजी धर्मसहायिका स्व. श्री विजयराजजी कोठारी, श्री कमलेशजी, सुनीलजी, सौरभजी कोठारी परिवार (जोधपुर वाले), जयपुर, सुश्रावक स्व. श्री अखेराजजी कोठारी की 27 मई, 2022 को 25वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में।
- 2100/- श्री नरेन्द्रजी (पुत्र), सचिनजी, नितिनजी जैन (पौत्र) (प्रभु-तारा परिवार फाजिलाबाद वाले) हिण्डौनसिटी, वीरपिता स्व. श्री प्रभुदयालजी जैन की 11वीं पुण्यतिथि की स्मृति में सप्रेम।
- 2100/- श्री रमेशचन्दजी जैन, खिदावत (बोल्या वाले) कोटा, सुश्राविका श्रीमती श्यामाजी जैन की प्रथम पुण्य तिथि 2 मई, 2022 पर सप्रेम।
- 2100/- श्रीमती दीपकजी कोठारी, अजमेर, सुश्रावक स्व. श्री कँवरलालजी कोठारी की पुण्य-स्मृति में।
- 2100/- श्री प्रसन्नराजजी, दिनेशचन्दजी, राजकुमारजी बोथरा मेहता, चेन्नई की ओर से सप्रेम।
- 2100/- श्री अजीतराजजी रांका, भड़गाँव, श्रीमती सुरेखाजी रांका का 1 अप्रैल, 2022 को 63 वर्ष की वय में संधारापूर्वक समाधिमरण होने की पुण्य-स्मृति में।
- 2000/- श्री रमेशचन्दजी, अरुणजी, श्रीमती चन्दादेवीजी जैन, सवाईमाधोपुर/इन्दौर चि. भविष्य सुपुत्र स्व. श्री विजयकुमारजी जैन खरखड़ी वाले का शुभविवाह सौ.कां. प्रियंकाजी सुपुत्री स्व. श्री महेन्द्रकुमारजी जैन सुमेरगंजमण्डी के साथ 15 मई, 2022 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।
- 2000/- श्री ओमप्रकाशचन्दजी सिंघवी, जोधपुर, श्रीमती लाडकँवरजी धर्मपत्नी श्री नेमीचन्दजी सिंघवी का देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्य-स्मृति में।
- 1101/- श्री उम्मेदचन्दजी, दानमलजी, ऋषभकुमारजी, अभिषेकजी जैन, जयपुर, श्रावकरत्न स्व. श्री हरकचन्दजी जैन बोहरा (जरखोदा वाले) की 25वीं पुण्यतिथि 16 मई, 2022 के उपलक्ष्य में सप्रेम।
- 1100/- श्रीमती मंजुलाजी, सुपुत्र-अभिषेकजी, प्रज्वलजी जैन पूज्य स्व. श्री राजेन्द्रप्रसादजी जैन, श्रीजी नगर-जयपुर की प्रथम पुण्यतिथि 06 जून, 2022 के उपलक्ष्य में सप्रेम।
- 1100/- श्री उम्मेदचन्दजी जैन, जरखोदा, जिला-बून्दी अपने अनुज स्व. श्री राजेन्द्रप्रसादजी जैन, श्रीजी नगर-जयपुर की प्रथम पुण्यतिथि 06 जून, 2022 के उपलक्ष्य में सप्रेम।
- 1100/- श्री दानमलजी जैन, जयपुर, अपने अनुज स्व. श्री राजेन्द्रप्रसादजी जैन, श्रीजी नगर-जयपुर की प्रथम पुण्यतिथि 06 जून 2022 के उपलक्ष्य में सप्रेम।
- 1100/- श्री ऋषभकुमारजी जैन, जयपुर, अपने अग्रज स्व. श्री राजेन्द्रप्रसादजी जैन, श्रीजी नगर-जयपुर की प्रथम पुण्यतिथि 06 जून 2022 के उपलक्ष्य में सप्रेम।
- 1100/- श्री उम्मेदचन्दजी, लालचन्दजी, नमोकारजी, मोहनलालजी, धनराजजी, कनिष्कजी जैन (सर्राफ), सवाईमाधोपुर, श्रावकरत्न स्व. श्री राजेन्द्रप्रसादजी जैन सुपुत्र स्व. श्री हरकचन्दजी जैन बोहरा जरखोदा वाले जयपुर की प्रथम पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्री अशोककुमारजी जैन एवं परिवार, जयपुर, ब्याईजी सुश्रावक स्व. श्री राजेन्द्रप्रसादजी जैन, श्रीजी नगर-जयपुर की प्रथम पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में सप्रेम।
- 1100/- श्री महेन्द्रमलजी गांग, सूरत, अपने सुपुत्र श्री

- अभिषेकजी एवं धर्मपत्नी श्री ललितानाजी गांग के जन्मदिवस पर।
- 1100/- श्री हरकचन्दजी जैन (श्यामपुरा वाले) इन्दौर, चि. निर्मलजी सी.ए. सुपुत्र श्री कन्हैयालालजी जैन का शुभ विवाह सौ.कां. आयुषी सुपुत्री श्री विमलचन्दजी जैन कुशतला के संग 2 मई, 2022 को सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम।
- 1100/- श्रीमती हिमानीजी, तनिषाजी जैन, जयपुर, स्व. श्री शैलेन्द्रजी जैन (खब्जाची) के प्रथम पुण्य-स्मृति दिवस 1 जून, 2022 के उपलक्ष्य में सप्रेम।

- 1100/- श्रीमती मालाजी धर्मसहायिका स्व. डॉ. प्रमोदजी मेहता, श्रीमती प्रियाजी, प्रिशिताजी मेहता, जोधपुर, श्री प्रशान्तजी मेहता के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में।

### सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल हेतु साभार

- 17000/- श्री त्रिवेन्द्रराजजी भण्डारी, जोधपुर, पुस्तक ज्ञातासूत्र की कथाएँ के प्रकाशन हेतु।

### गजेन्द्र निधि / गजेन्द्र फाउण्डेशन हेतु साभार

- श्री कस्तूरचन्दजी, सुनीलजी, अभिषेकजी, रिषभजी बाफना, जलगाँव (महाराष्ट्र)

## संयम की सुवास

### श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'

तपस्वी श्रद्धेय श्री मोहनमुनिजी म.सा. के देवलोकगमन के समाचार सुनकर मेरा भोपालगढ़ जाना हुआ। तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. ने श्री मोहनमुनिजी म.सा. के संयम की सुवास के सम्बन्ध में अपने पावन मुखारविन्द से जो अमृत तुल्य शब्द फरमाए, जिनका भाव है-

“उनके जीवन में संयम की सुवास, संयम में तप की सुवास, तप में संलेखना की सुवास और संलेखना सहित आराधक पंडित मरण की सुवास थी।

सारं दंसण णाणं, सारं तव-णियम -संजमं सीलं।  
सारं जिणवरं धम्मं, सारं संलेहणा पंडियमरणं॥

श्री मोहनमुनिजी ने संसार खूब अच्छी तरह देखा। भुसावल (महाराष्ट्र) में 15 फरवरी, 1935 को जन्म लेकर जीवन में खूब उतार-चढ़ाव देखे। मुम्बई में पिक्चर बनाई, जलगाँव में व्यवसाय किया और फिर अपनी आयु से महज चार दिन बड़े शासन सेवा समिति के संयोजक श्री रतनलालजी बाफना (अभी स्वर्गीय) के साथ अहिंसा के प्रचार में, अहिंसा के सद्कार्यों में सक्रिय सहभागिता निभाई। वापी के नाहर परिवार में परिणीता स्वयं की बड़ी पुत्री कविताजी के ससुराल में लगभग सत्रह दीक्षाएँ हुई ... उससे प्रेरणा लेकर धर्म में आगे बढ़े। गृहस्थ पर्याय में पन्द्रह उपवास तक की तथा विविध तरह की तपस्या करते हुए, दीक्षा पथ हेतु दृढ़

संकल्प कर, 19 मार्च, 2000 फाल्गुनी चौमासी को वीरों के गढ़ चितौड़गढ़ के खातून महल में भरे व्याख्यान में अपनी दीक्षा भावना की अभिव्यक्ति की तथा पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. से जलगाँव चातुर्मास की पुरजोर विनति की। यहीं से संयम का प्रयास शुरू हो गया, पर विघ्न बाधाओं पर विजय मिलाने में लगभग आठ वर्ष लग गए। वर्ष 2007 में बीजापुर चातुर्मास की समाप्ति पर पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने दीक्षा की आज्ञा प्रदान करने के बाद वहाँ से विहार किया और इन्हीं महापुरुष की अनन्त कृपा से वैशाख शुक्ल द्वितीया 7 मई, 2008 को ऋतम्भरा कालेज, विले पार्ले, मुम्बई में दीक्षा सानन्द सम्पन्न हुई। श्री मोहनमुनिजी ने 14 वर्ष के संयम जीवन में 13 साल एकान्तर, तीन-चार चातुर्मास में बेला-बेला पारणा एवं अभी पिछले मार्च-अप्रैल के महीने में उपवास के अधिकतम पारणे भी नीवी तप के साथ किये। उन्होंने जनवरी, 2022 में कोसाना प्रवास में आम के अलावा सभी फलों का त्याग, हलवे के अलावा सभी मिठाइयों का त्याग एवं सभी तरह के सूखे मेवों (ड्राइ फ्रूट्स) का त्याग जैसे बड़े संकल्प लिए उन्हें शायद कुछ आभास-सा हो गया था।”

पूज्य महापुरुष के पावन मुखारविन्द से तपस्वी श्रद्धेय श्री मोहनमुनिजी म.सा. के जीवन का ऐसा अद्वितीय और सजीव वर्णन सुनकर मैं जैसे उनके जीवन को साक्षात् देख पा रहा था। -चेन्नई (तमिलनाडु)

# बाल-जिनवाणी

प्रतिमाह बाल-जिनवाणी के अंक पर आधारित प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले अधिकतम 20 वर्ष की आयु के श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को सुगनचन्द प्रेमकँवर रांका चेरिटेबल ट्रस्ट-अजमेर द्वारा श्री माणकचन्दजी, राजेन्द्र कुमारजी, सुनीलकुमारजी, नीरजकुमारजी, पंकजकुमारजी, रौनककुमारजी, नमनजी, सम्यक्जी, क्षितिजजी रांका, अजमेर की ओर से पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-600 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-400 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 300 रुपये तथा 200 रुपये के तीन सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है। उत्तर प्रदाता अपने नाम, पते, आयु तथा मोबाइल नम्बर के साथ बैंक विवरण-बैंक का नाम, खाता संख्या, आई.एफ.एस. कोड आदि का भी उल्लेख करें।

## ऑनलाइन बैंकिंग/शॉपिंग :

### सही या गलत ?

श्री राजीव नेपालिया

एक बार मैं अपने चाचाजी के यहाँ वापी घूमने के लिए गया। वहाँ चाचा-चाची अकेले ही रहते हैं। उनका एक ही बेटा है सुदीप, जो अपनी पत्नी एवं बच्चों के साथ अहमदाबाद में रहता है। एक दिन चाचाजी के साथ मैं बैंक गया। उन्हें कुछ पैसे किसी को ट्रान्सफर करवाने थे। एक घण्टा बैंक में बिताने के पश्चात् जब हम वहाँ से निकले तो मैं उनको यह पूछने से अपने आपको रोक नहीं पाया-“चाचाजी! आप इण्टरनेट बैंकिंग सेवा क्यों नहीं चालू कर लेते ? इसके बहुत सारे फायदे हैं।”

चाचाजी ने कहा-“ऐसा करने से क्या होगा और मैं क्यों करूँ ?”

तब मैंने उन्हें बताया कि आपको इन छोटे-छोटे पैसों को ट्रान्सफर करने के लिए बैंक तक आने की और अपना कीमती समय खराब करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। आप जब चाहें तब घर बैठे ही इण्टरनेट के माध्यम से ही अपने पैसों को किसी को भी ट्रान्सफर कर सकते हैं। इसके साथ-साथ ऑनलाइन शॉपिंग भी कर सकते हैं। ऐसा करने से आपको घर पर बैठे-बैठे ही

किसी भी वस्तु को खरीदना आसान हो जायेगा।

उन्होंने पूछा-“यदि मैं ऐसा करता हूँ तो क्या मुझे किसी भी सामान के लिए घर से बाहर निकलने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी ? तथा मुझे किसी भी कार्य के लिए बैंक आने की भी आवश्यकता नहीं पड़ेगी ?”

मैंने उन्हें समझाते हुए कहा-“हाँ, यदि आप ऐसा करते हो तो आपको कहीं भी जाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी और आपको अपनी गृहस्थी चलाने का सामान भी घर बैठे ही मिल जाएगा। इसके लिए आपको अपने मोबाइल पर ई-कॉमर्स साइट्स (एप्प) डाउनलोड करनी होगी, भारत में बने ऐसे कई ई-कॉमर्स साइट्स इण्टरनेट पर उपलब्ध हैं, जिनकी सुविधा से आपको घर बैठे ही सामान की डिलिवरी आसानी से हो जाती है।”

उन्होंने मेरी बातों को बहुत गौर से सुनकर ऑनलाइन बैंकिंग एवं शॉपिंग के बारे में जो जवाब दिया वह बहुत विचारणीय था। उन्होंने मुझे यह सोचने के लिए भी विवश कर दिया कि ऑनलाइन बैंकिंग/शॉपिंग करने से समाज पर कितने प्रभाव या दुष्प्रभाव पड़ते हैं।

उन्होंने बताया कि आज सुबह जब से मैं इस बैंक में आया, यहाँ पर मैं अपने परिचित व्यक्तियों से मिला। साथ ही साथ मैंने यहाँ के उन कर्मचारियों से बात भी की जो मुझे पहले से जानते हैं। तुम तो जानते ही हो कि

सुदीप दूसरे शहर में नौकरी करता है और कभी-कभार ही अपने परिवार के साथ मुझसे मिलने आता है। आज उम्र के इस पड़ाव पर जिनका साथ एवं सहयोग मुझे चाहिये था, ये ही वे लोग हैं। इसलिए ही बैंक में आना पसन्द करता हूँ, यहाँ इन सभी से मिलकर अपनेपन का जो अहसास मुझे मिलता है इसके लिए मैं वक्त निकाल ही लेता हूँ।”

दो साल पहले की बात है कि एक दिन मैं बहुत बीमार हो गया था। मैं हमेशा अपना मोबाइल जिस दुकानदार से रिपेयर या रिचार्ज करवाता हूँ, जब उसे मेरे बीमार होने की बात पता चली तो वह मुझसे मिलने और देखने के लिए घर पर आया और पास बैठकर मुझसे सहानुभूति जताते हुए कहा कि आपको यदि किसी भी चीज की आवश्यकता हो तो मुझे बता देना, मैं आपकी मदद कर दूँगा।

कुछ दिन पूर्व तेरी चाची सुबह-सुबह घूमने के लिए निकली तब अचानक चक्कर आने से वह रास्ते में गिर पड़ी। तभी मेरे किराने वाले दुकानदार की नज़र उस पर गई, उसने तुरन्त उसे उठाया और टैक्सी में बिठाकर उसको घर तक पहुँचाया, क्योंकि वह जानता था कि वह कहाँ रहती है।

और तो और मेरे पहचान के एक शर्माजी हैं, जो प्रत्येक महीने घर आकर मेरे यूटिलिटी बिल्स मुझसे पैसे लेकर भर आते हैं, जिसके बदले में थोड़े अतिरिक्त पैसे मैं उन्हें दे देता हूँ। शर्माजी के लिए यह कमाई का एक जरिया और रिटायरमेंट के बाद खुद को व्यस्त रखने का तरीका भी है।

अब तुम ही बताओ यदि सारी चीजें ऑनलाइन हो गई तो समाज से मानवता, अपनापन, रिश्ते-नाते सब खत्म नहीं हो जाएँगे? इन सबके लिए मैं प्रत्येक सामग्री को अपने घर पर ही क्यों मँगाऊँ?

चाचाजी की बातों पर भी यदि गौर किया जाये तो क्या हम ऑनलाइन शॉपिंग से हमारे आसपास के, हमारे परिचित दुकानदारों के साथ अन्याय तो नहीं कर रहे हैं?

क्या इससे उनके प्रति सद्भाव और अपनेपन में कमी नहीं आयेगी। वास्तव में आज समाज को ऑनलाइन व्यापार के दूरगामी परिणामों पर भी विचार करने की आवश्यकता है।

क्या आज हम शारीरिक रूप से इतने कमज़ोर हो गये हैं कि हमें हमारी छोटी-छोटी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ई-कॉमर्स साइट्स का सहारा लेना पड़े। भारत जैसे 130 करोड़ की आबादी वाले मध्यमवर्गीय देश में इन सुविधाओं को बढ़ावा देना आज तो नया होने के कारण बहुत अच्छा लग रहा है, पर इसके दूरगामी प्रभाव बहुत ज्यादा नुकसानदायक होंगे। देश में 80 प्रतिशत व्यापार जो छोटे-छोटे दुकानदार के रूप में गली-मौहल्लों में चल रहे हैं वे सब बन्द हो जायेंगे और इससे बेरोजगारी भी अपने चरम सीमा पर पहुँच जायेगी। ऑनलाइन के चलते अधिकतर व्यापार कुछ गिनी-चुनी कम्पनियों के हाथों में चले जायेंगे और देश की बाकी जनता बेकारी और गरीबी की ओर अग्रसर हो जायेगी।

प्रायः हम सभी को प्रतिदिन समाचार पत्रों एवं टी.वी. चैनल्स के माध्यम से ऑनलाइन ठगी होने के समाचार पढ़ने को मिलते ही रहते हैं। ऑनलाइन बैंकिंग में भी साइबर क्राइम अधिक होने लगे हैं। आपकी थोड़ी-सी नासमझी के चलते आपकी मेहनत से कमाया हुआ पैसा आपके हाथ से निकल जाता है। हम यह तो मानते ही हैं कि ऑनलाइन बैंकिंग कार्यों से सुविधा तो हुई है, परन्तु इस बात से भी हम इन्कार नहीं कर सकते कि इससे आपराधिक गतिविधियों को भी बढ़ावा मिला है। भारत एक कृषि एवं परिश्रम-प्रधान देश है और पैसा भी बहुत कठिनाइयों से कमाया जाता है। इसके बारे में हमें अवश्य चिन्तन करना चाहिए।

-401, 'बंशी निकुञ्ज', महावीरपुरम् सिटी, चौपासनी जागीर, चौपासनी फनवर्ल्ड के पीछे, जोधपुर-342008

## नौलखा हार

संकलित

एक रानी के पास एक नौलखा हार था। वह रानी

को बहुत पसन्द था, वह उसे हमेशा पहने रहती थी।

एक दिन रानी वन विहार को गई। वहाँ एक सुंदर तालाब देख कर उसने स्नान करने का विचार किया। सेविकाओं ने चारों ओर सुरक्षा घेरा बना लिया। रानी ने अपने अन्य आभूषणों के साथ वह हार भी उतार कर किनारे रख दिया और स्नान करने लगी।

परन्तु स्नान करने के पश्चात् वह हार उसे वहाँ नहीं मिला तो कोहराम मच गया। सेविकाओं की जान सूख गई। चारों ओर खोज की गई। अन्त में वह हार तालाब के तल में दिखाई दिया।

बड़े बड़े तैराक बुलाए गए, पर हैरानी की बात है कि वह हार बाहर से तो दिखता था, पर भीतर जाने पर नहीं मिलता था। तब राजा ने हार निकाल लाने वाले को एक लाख रुपए देने की घोषणा कर दी।

एक संन्यासी अपने शिष्य के साथ वहाँ से गुजर रहे थे। सारा घटनाक्रम ध्यान से सुनकर और देख समझ कर, सन्त उस तालाब में झाँकने लगे और अपने शिष्य को उस तालाब के किनारे खड़े एक बड़े पेड़ पर चढ़ने को कहा।

शिष्य पेड़ पर चढ़ने लगा। उसकी परछाई पानी में देखते हुए, संन्यासी कहने लगे—“और आगे, और आगे।” शिष्य आगे बढ़ता रहा। अचानक संन्यासी ने पूछा—“मिला क्या?” शिष्य ने जोर से उत्तर दिया—“मिल गया गुरुजी।”

दरअसल एक पक्षी, उस नीलखा हार में लगे लाल हीरों को फल समझ कर उसे पेड़ पर उठा ले गया था और वहीं छोड़ दिया था। तालाब के तल में हार नहीं, केवल उस हार की परछाई ही चमक रही थी।

संन्यासी कहने लगे—जब कहीं कोई वस्तु दिखती हो, पर मिलती न हो तब समझ लेना चाहिए कि वस्तु जहाँ दिखती है वहाँ होती नहीं और जहाँ होती है वहाँ देखने वाले की दृष्टि जाती नहीं।

ठीक ऐसे ही जगत् में सुख केवल दिखता मात्र है, पर है नहीं। और जहाँ सुख है, वहाँ दृष्टि जाती नहीं। सुख तो आत्मा में है, परमात्मा में है, अपने आप में है,

आप उस सुख को कहीं बाहर तो नहीं खोज रहे हैं?

—धीरज डोसरी, जोधपुर (राजस्थान)

## प्रश्नोत्तर

श्री दुलरीचन्द जैन

प्रश्न— जैनधर्म शाकाहार पर इतना जोर क्यों देता है?

उत्तर— जैनधर्म शाकाहार को बहुत महत्त्व देता है, क्योंकि इसके उत्पादन में किसी त्रस जीव की हिंसा नहीं होती। यह सुपाच्य है तथा स्वास्थ्य के लिए अनुकूल है। प्राकृतिक दृष्टि से मनुष्य शाकाहारी वर्ग का है। इसके अन्य गुण हैं—

1. यह कॉलेस्ट्रॉल को कम करता है।
2. यह मूत्राम्ल को घटाता है।
3. यह पाचन-तन्त्र को विकार मुक्त रखता है।
4. यह मधुमेह रोग के निवारण में लाभदायक है।
5. यह विष-मुक्त होता है।
6. इसके उत्पादन में कम से कम ऊर्जा लगती है।
7. मनुष्य का शरीर-तन्त्र इसके लिए सर्वथा उपयुक्त है।
8. यह अनेक बीमारियों से बचाता है।
9. विश्व में अनेक व्यक्तियों को समुचित आहार नहीं मिलता, यदि सभी शाकाहार का पालन करें तो विश्व की आहार की समस्या हल हो सकती है।
10. इसमें कम खर्च लगता है।

—70, T.T.K. Road, Alwarpet, Chennai- 600018  
(Tamilnadu)

## सामायिक-प्रश्नोत्तर

प्र. 1— ‘करेमि भंते’ पाठ का क्या प्रयोजन है?

उत्तर— ‘करेमि भंते’ पाठ से सभी पापों का त्यागकर सामायिक व्रत लेने की प्रतिज्ञा की जाती है। इसे सामायिक-प्रतिज्ञा सूत्र भी कहते हैं।

प्र. 2— सामायिक से क्या लाभ है?

उत्तर— सामायिक द्वारा पापों के आस्रव को रोककर संवर की आराधना होती है और सामायिक काल में

स्वाध्याय करने से कर्मों की निर्जरा होती है।

प्र. 3-सामायिक का क्या फल बताया गया है?

उत्तर- दिवसे दिवसे लखं, देइ सुवण्णस्स खंडियं एणो।

इयरो पुण सामाइयं, न पहुप्पए तस्स कोई।।

बीस मण की खण्डी होती है। ऐसी लाख-लाख खण्डी सुवर्ण, लाख वर्ष पर्यन्त प्रतिदिन कोई दान दे और दूसरा एक सामायिक कर ले तब भी इतना सुवर्ण दान देने वाले का पुण्य एक सामायिक के बराबर नहीं हो सकता। क्योंकि दान से पुण्य की वृद्धि होती है और पुण्य की वृद्धि से सुख-सम्पदा की प्राप्ति होती है, किन्तु सामायिक भवभ्रमण से छुड़ाकर मोक्ष का अनन्त सुख प्राप्त कराने वाली है।

- 'श्रावक सामायिक प्रतिक्रमणसूत्र' पुस्तक से

## Question and Answer

Sh. Dulichand Jain

Q1. What are the ten supreme virtues?

Ans. According to the Āgamas, ten religious virtues describe an ideal Jaina monk and nun. They are also known as the ten characteristics of dharma.

1. *Uttama kṣamā* : Supreme forgiveness.
2. *Uttama mārḍava* : Supreme humility.
3. *Uttama ārjava* : Supreme straightforwardness.
4. *Uttama Satya* : Supreme truthfulness.
5. *Uttama śauca* : Supreme purity.
6. *Uttama saṃyama* : Supreme self-restraint.
7. *Uttama tapa* : Supreme austerity.
8. *Uttama tyāga* : Supreme renunciation.
9. *Uttama ākiñcanya* : Supreme detachment.
10. *Uttama brahmacarya* : Supreme celibacy.

According to Digambara Jainas, these supreme virtues also define the *Dasa Lakṣaṇa Parva* (festival of ten virtues), the main religious festival followed by them.

-70, T.T.K. Road, Alwarpet, Chennai- 600 018  
(Tamilnadu)

## You can start to win at any time

Sh. Shrikant Gupta

To solve any problem or to reach your goal, you don't need to know all the answers in advance. But you must have a clear idea of the problem or the goal you want to reach.

All you have to do is to know where you're going. The answers will come to you of their own accord. Don't procrastinate when faced with a big difficult problem, break the problem into parts, and handle one part at a time.

If you can get up the courage to begin, you have the courage to succeed. It's the job you never start that takes the longest to finish. Don't worry about what lies dimly at a distance, but do what lies clearly ahead.

Your biggest opportunity is where you are right now. Once you begin you're half done. When you realize you want to spend the rest of your life with somebody you want the rest of your life to start as soon as possible.

-Jodhpur (Raj.)

## जैन भूगोल

संकलित

हमारा देश	: भारत/भारतवर्ष
हमारा क्षेत्र	: भरत क्षेत्र
हमारा द्वीप	: जम्बूद्वीप
हमारा लोक	: तिरछा लोक (मध्य लोक)
सिद्ध भगवान का क्षेत्र	: सिद्धशिला
24 तीर्थंकरों का क्षेत्र	: भरत क्षेत्र
20 विहरमानों का क्षेत्र	: महाविदेह क्षेत्र
सबसे बड़ा पर्वत	: मेरु पर्वत
सबसे बड़ा समुद्र	: स्वयंभूरमण समुद्र
सबसे बड़ा द्वीप	: स्वयंभूरमण द्वीप
लोक का क्षेत्र	: 14 रज्जु
मनुष्य क्षेत्र	: अढ़ाई द्वीप

## सच्चा प्यार

श्रीमती कमला हणवन्तमल सुराणा

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 जुलाई, 2022 तक जिनवाणी सम्पादकीय कार्यालय, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपना नाम, आयु, मोबाइल नम्बर तथा पूर्ण पते के साथ बैंक विवरण-बैंक का नाम, खाता संख्या, आई.एफ.एस. कोड इत्यादि का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार-200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

जयन्त, श्रेष्ठ के पास आया।

श्रेष्ठ-“सुबह-सुबह कैसे आना हुआ?”

जयन्त-“चल यार!”

श्रेष्ठ-“कहाँ?”

जयन्त-“सुबह उठकर मैंने खिड़की से देखा कि अंग्रेज पर्यटकों का समूह उद्यान की ओर जा रहा है। हम भी उनसे बातें करने चलें।”

श्रेष्ठ-“पढ़ाई का समय है; व्यर्थ में समय नहीं गँवाना है। मुझे अपनी श्रेणी को सुरक्षित रखनी है।”

(जयन्त अकेला उद्यान जाकर अंग्रेजों से गपशप करके श्रेष्ठ के घर आ गया।)

श्रेष्ठ-“वहाँ कौन-सा तीर मार कर आए हो।”

जयन्त-“अंग्रेजों से बात कर मुझे बहुत आनन्द आया। उनकी एक बात पर इतनी हँसी आई कि तेरी याद आ गई। तुझ पर तो पढ़ाई का भूत सवार है। सुन! कभी-कभी इधर-उधर की बातें करने से व्यावहारिक ज्ञान के साथ-साथ आत्मविश्वास भी बढ़ता है। केवल पढ़ाई से तो कूप मंदूक ही रह जाते हैं।”

श्रेष्ठ-“कल दादाजी गणगौर का मेला दिखाने चलेंगे। तू भी हमारे साथ चलना। मेरे दादाजी मुझे बहुत प्यार करते हैं।”

जयन्त-“मेरे दादाजी नहीं हैं। डेढ़ साल पहले

मेरे पिताजी का भी देहान्त हो गया। मैंने कभी मेला नहीं देखा है।”

श्रेष्ठ-“घर कौन चलाता है?”

जयन्त-“मेरी माँ निजी स्कूल में अध्यापिका है, उन्हीं पर घर चलाने का बोझ पड़ा हुआ है। माँ से मेले जाने के बारे में बात करूँगा।” (जयन्त घर चला जाता है।)

जयन्त-“माँ! श्रेष्ठ ने कहा है कि गणगौर का मेला देखने चल। उसके दादाजी हमें मेला दिखाने ले जाएँगे।”

जयन्त की माँ ने कुछ रुपये खर्चों के लिए दिये और कहा-“छोटे भाई-बहन के लिए खिलौने ले आना।”

ठीक समय मेला देखने जयन्त श्रेष्ठ के घर पहुँच गया। वह अत्यधिक प्रफुल्लित था, क्योंकि उसकी माँ घर का काम तथा नौकरी के पश्चात् समय मिलते ही तीनों बच्चों को पढ़ाती थी, इसलिये कहीं आना-जाना नहीं था।

दादाजी, श्रेष्ठ और जयन्त मेले में चले गए। मेले में दादाजी कभी जयन्त का हाथ पकड़ते और कभी श्रेष्ठ का। तीनों ने कुल्फी, चाट-पकौड़ी और गोलगप्पे खाये। जयन्त ने खट्टी-मीठी गोलियाँ खरीदी।

मेले में गणगौर-ईसर की लकड़ी की बनी प्रतिमाएँ दिखाई दी जो सुन्दर पोशाक एवं गहनों से सजी हुई थीं। श्रेष्ठ ने अपने लिए गेंद खरीदी और जयन्त को भी इशारा किया कि तू भी पसन्द कर ले। जयन्त बहुत समझदार था; उसने सोचा इतने पैसे मेरे पास नहीं है और दादाजी से खर्चा नहीं करवाना चाहिए। उसने अपने भाई-बहन के लिए खिलौने खरीदे।

जयन्त-“दादाजी! ऐसा मनमोहक दृश्य मैंने कभी नहीं देखा।”

दादाजी-“चैत्र मास में बहुत सारे मेले लगते हैं जैसे-चेटीचण्ड, रामनवमी, महावीर जन्मोत्सव एवं गणगौर मेला, मैं सभी मेले श्रेष्ठ को दिखाता हूँ। यह बहुत खुश होता है।”

जयन्त-“दादाजी! मुझे भी मेला बहुत अच्छा लग रहा है। दादाजी अब घर चलें। माँ राह देख रही होगी।”

(जयन्त दादाजी के स्वभाव और व्यवहार से बहुत प्रभावित हुआ।)

जयन्त एक दिन प्रातः सब्जी लेने गया। सब्जी लेकर सोचा कि दादाजी से मिलता जाऊँ और उनके घर पहुँच गया।

दादाजी-“जयन्त तू आ गया बेटा! तू मुझे अस्पताल ले चल।”

जयन्त-“क्यूँ?”

दादाजी-“मेरे पूरे शरीर में इतनी खुजली चल रही है कि मैं खुजली करते-करते पेशान हो गया हूँ। फफोले हो गए हैं। उनमें से पानी टपक रहा है; मुँह पूरा फफोलों से भर गया है। मैंने रात को रचना बहू और श्रेष्ठ को नींद से नहीं उठाया। रचना प्रतिदिन सुबह मन्दिर जाती है, उसकी पूजा-अर्चना में बाधा डालनी नहीं चाही। श्रेष्ठ को उठाया वह उठ तो गया, लेकिन इस दशा को देखकर भाग गया।”

जयन्त-“दादाजी! आपको असीम वेदना है। मैं श्रेष्ठ को बुलाकर लाता हूँ।”

जयन्त-“श्रेष्ठ! श्रेष्ठ! कहाँ हो?”

श्रेष्ठ-“मैं पढ़ रहा हूँ।”

जयन्त-“दादाजी तुझे बुला रहे हैं, चल यार।”

श्रेष्ठ-“मैंने कह दिया कि मैं पढ़ रहा हूँ।”

जयन्त-“पहले दादाजी को अस्पताल ले जाकर दिखा लाते हैं, फिर पढ़ते रहना।”

श्रेष्ठ-“यह छूत का रोग है। मैं पास जाऊँगा तो मुझे भी हो जाएगा। मुझे दादाजी का शरीर देखकर घिन्न आ रही है।”

जयन्त-“क्या घृणा करने से उनका रोग ठीक हो जाएगा? उन्हें चिकित्सा देकर आराम पहुँचाना हमारा कर्तव्य बनता है। वे कराह रहे हैं।”

इतने में श्रेष्ठ की माँ रचना मन्दिर से आ गई। दादाजी की कराहट सुनकर सीधी कमरे में आ गई और उन्हें देख वह हक्की-बक्की रह गई।

जयन्त-“चाची! श्रेष्ठ को बहुत समझाया, लेकिन वह तो टस से मस नहीं हुआ। वह दादाजी की सूरत भी देखना नहीं चाहता है।”

रचना-“चाहना और नहीं चाहना क्या होता है? सेवा तो करनी होगी।”

जयन्त-“उसको पढ़ने दो; मैं आपके साथ चलूँगा। मैं टैक्सी लेकर आ रहा हूँ।”

रचना ससुरजी का हाथ पकड़कर बाहर खड़ी हो गई और जयन्त टैक्सी लेकर आ गया। तीनों अस्पताल के आउटडोर में पहुँच गए। चर्म रोग के डॉक्टर ने जाँच कर उन्हें भर्ती कर लिया। डॉक्टर ने एक इन्जेक्शन लगाया और एण्टीबायोटिक, पेन-किलर की गोलियाँ लिख दी। जिनसे उनको आराम आ गया।

जयन्त-“चाची! दादाजी और आपके लिए मैं मेरे घर से नाश्ता ला रहा हूँ।”

रचना-“तुम इतनी तकलीफ मत उठाओ।”

जयन्त-“मम्मी दादाजी की बीमारी सुनकर, नाश्ता-पानी लेकर स्वयं ही मेरे साथ आ जाएगी।”

रचना-“तू मुझे ऋणी मत बना।”

जयन्त-(रचना के मुँह पर हाथ रखकर) “कैसा ऋण? मैं आपका ही तो बेटा हूँ।”

रचना मन में सोचने लगी कि कितना संस्कारी लड़का है। मेला देखने के पश्चात् ही तो आने-जाने लगा है।

जयन्त अपनी माँ से खाना बनवाकर, दादाजी और रचना के लिए ले आया। एक टिफिन श्रेष्ठ के लिए भी ले गया।

श्रेष्ठ—“दादाजी कैसे हैं?”

जयन्त—“दवाई लेने से अभी उनको आराम है। आशा करता हूँ दो-तीन दिन अस्पताल में रखेंगे। अभी उन्हें नींद आई है तो मैंने खाने-पीने की व्यवस्था कर डाली। तुम भी खाना खा लो।”

श्रेष्ठ—“अरे मित्र! खाने की तकलीफ क्यों की। मैं मैगी बनाकर खा लेता।”

जयन्त—“मैं जा रहा हूँ। शायद दादाजी नींद से उठ गए होंगे।”

जयन्त अस्पताल पहुँच गया और उन्हें आश्वासन दिया कि रोग का निदान हो गया है।

रचना—“कुछ दिन पश्चात् मेरी परीक्षा है। मैं संकट में पड़ गई हूँ कि घर पर दादाजी की देखभाल कौन करेगा? श्रेष्ठ निकम्मा और जिद्दी है; वह रात को यहाँ नहीं सोएगा।”

जयन्त—“चाची! मैं सब सम्भाल लूँगा। दादाजी के पास बैठा-बैठा पढ़ लूँगा।”

रचना—“नहीं बेटा! तू घर जाकर पढ़। मैं कोई न कोई व्यवस्था कर लूँगी।”

जयन्त—“पढ़ाई से ज्यादा दादाजी के पास रहना आवश्यक है। पढ़ाई चलती रहेगी। बड़ों की सेवा करने के अवसर कभी-कभी मिलते हैं।”

रात को पुस्तकें लेकर जयन्त दादाजी के पास पहुँच गया। वह समय पर दवाइयाँ देता रहता था। उनके पैर भी सहलाता रहता था। डॉ. ने जो ट्यूब लिखी थी उसे भी पूरे शरीर में छूआछूत के भय को ताक पर रखकर बड़ी निष्ठा से लगाता था।

तीन दिन दादाजी के अस्पताल में प्रसन्नता से निकल गए। देह पर निकले फफोले सूख गए और खुजली चलनी बन्द हो गई। उन्हें अस्पताल से छुट्टी मिल गई।

घर आने के चार दिन पश्चात् अमेजन कम्पनी से कुरियर वाला आया। ऑनलाइन, श्रेष्ठ के लिए शर्ट मँगवाई थी, वह आ गई।

बड़े प्यार से दादाजी ने श्रेष्ठ को आवाज लगाई कि तेरे लिए जो शर्ट मँगवाई थी, वह आ गई है। तू आकर ले जा। श्रेष्ठ दादाजी के सामने आने से झिझक रहा था। शर्ट के लोभ में हिचक जाती रही। जैसे ही उसने शर्ट लेने के लिए हाथ बढ़ाया, रचना ने उसका हाथ पकड़ लिया।

रचना—“पिताजी! यह लड़का प्यार के योग्य नहीं है। इसके मन में स्वार्थ, घृणा और अहं भरा पड़ा है। इसको आपके प्रति बिल्कुल प्यार नहीं है। इतनी असहनीय पीड़ा में आपकी ओर झाँका तक नहीं। यदि जयन्त नहीं होता तो मैं अकेली आपको कैसे सम्भालती।”

दादाजी—“रचना! मैं जयन्त का ऋणी हूँ। मैं इसको भूल नहीं सकता। भगवान से प्रार्थना करनी पड़ती है कि मेरी पीड़ा-कष्ट हर ले, लेकिन जयन्त से तो किसी प्रकार की प्रार्थना नहीं करनी पड़ी। धन्य है जयन्त!”

श्रेष्ठ खड़ा-खड़ा माँ, दादाजी की बातें सुन रहा था। सिर झुका कर रो रहा था। समय की पहचान नहीं की और जीवन का स्वर्णिम समय खो दिया। श्रेष्ठ ने दादाजी के पैर पकड़ लिये और प्रण किया कि मैं सदैव सभी रोगियों की तन-मन-धन से सेवा करूँगा।

—ई 123, नेहरु पार्क, जोधपुर (राज.)

प्र. 1 जयन्त को श्रेष्ठ के दादाजी अच्छे क्यों लगे?

प्र. 2 जयन्त के अनुसार पढ़ाई के अलावा और क्या जरूरी है?

प्र. 3 जयन्त की माँ की व्यस्तता के क्या कारण थे?

प्र. 4 हमारे देश में कौन-कौन से धार्मिक मेलों का आयोजन होता है और क्यों? पाँच मेलों के बारे में लिखें।

प्र. 5 प्रस्तुत कहानी हमें क्या शिक्षा देती है?

प्र. 6 दिए गए शब्दों से एक-एक वाक्य बनाइए—  
मनमोहक, छुआछूत, वेदना, आश्वासन।

**बाल-स्तम्भ [अप्रैल-2022] का परिणाम**

जिनवाणी के अप्रैल-2022 के अंक में बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत 'ईष्या' के प्रश्नों के उत्तर जिन बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, वे धन्यवाद के पात्र हैं। पूर्णांक 25 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	अरिष्ट कोठारी, अजमेर (राजस्थान)	25
द्वितीय पुरस्कार-300/-	गुंजन प्रशान्तजी कोठारी, धुलिया (महाराष्ट्र)	24
तृतीय पुरस्कार- 200/-	काव्य जैन, जोधपुर (राजस्थान)	23
सान्त्वना पुरस्कार (5) - 150/-	कु. आरोही श्रेणिक छाजेड़, नाशिक (महाराष्ट्र)	22
	विशाल सिंघवी, जोधपुर (राजस्थान)	22
	धैर्य जैन, चौथ का बरवाड़ा (राजस्थान)	22
	शुभि जैन, बजरिया-सवाईमाधोपुर (राजस्थान)	22
	रितिक जैन, कोटा (राजस्थान)	22

**बाल-जिनवाणी मई, 2022 के अंक से प्रश्न (अन्तिम तिथि 15 जुलाई, 2022)**

- प्र. 1. 'उमा' कहानी में निहित सन्देश लिखिए।
- प्र. 2. पुस्तकों की तुलना रत्न से क्यों की गई है?
- प्र. 3. हम सत्साहित्य का सम्मान कैसे कर सकते हैं?
- प्र. 4. लोग्स के पाठ को बोलने का क्या उद्देश्य है?
- प्र. 5. स्थानक में जाना हमारे लिए किस तरह लाभकारी है?
- प्र. 6. कार्य करते हुए हम स्वस्थ जीवन कैसे व्यतीत कर सकते हैं?
- प्र. 7. 'ऐसी मेरी दादी थी' कविता में दादी के किन गुणों का वर्णन किया गया है?
- प्र. 8. 'हे भगवन्!' कविता में लेखक ने ईश्वर के समक्ष क्या-क्या वादे किये हैं?
- प्र. 9. Why are three gupties called guards against misconduct?
- प्र. 10. Write antonyms of the given words-Misconduct, Ascetic, Pain and Upliftment.

**बाल-जिनवाणी [मार्च-2022] का परिणाम**

जिनवाणी के मार्च-2022 के अंक की बाल-जिनवाणी पर आधृत प्रश्नों के उत्तरदाता बालक-बालिकाओं का परिणाम इस प्रकार है। पूर्णांक 40 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-600/-	सुहानी सुराणा, अजमेर (राजस्थान)	38
द्वितीय पुरस्कार-400/-	प्रणव कपिल भण्डारी, जोधपुर (राजस्थान)	37
तृतीय पुरस्कार- 300/-	भूमि सिंघवी, जोधपुर (राजस्थान)	36
सान्त्वना पुरस्कार (3)- 200/-	श्रेणिक राजेन्द्र छाजेड़, नाशिक (महाराष्ट्र)	35
	यशवर्धन आहूजा, जयपुर (राजस्थान)	35
	कु. सुवर्णा एस. छाजेड़, भुसावल (महाराष्ट्र)	35

**बाल-जिनवाणी, बाल-स्तम्भ के पाठक ध्यान दें**

बाल-जिनवाणी एवं बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रत्येक अंक में दिए जा रहे प्रश्नों के उत्तर प्रदाताओं से निवेदन है कि वे अपना नाम, पूर्ण पता, मोबाइल नम्बर, बैंक विवरण-(खाता संख्या, आई.एफ.एस.सी. कोड, बैंक का नाम इत्यादि) भी साथ में स्पष्ट एवं साफ अक्षरों में लिखकर भिजवाने का कष्ट करें ताकि आपका पुरस्कार उचित समय पर आपको प्रदान किया जा सके। जिन्हें अब तक पुरस्कार राशि प्राप्त नहीं हुई है, वे श्री अनिल कुमारजी जैन से (मो. 9314635755) सम्पर्क कर सकते हैं।

-सम्पादक

अहंकार के वृक्ष पर  
विनाश के फल लगते हैं।



ओसवाल मेट्रीमोनी बायोडाटा बैंक

जैन परिवारों के लिये एक शीर्ष वैवाहिक बायोडाटा बैंक

विवाहोत्सुक युवा/युवती  
तथा पुनर्विवाह उत्सुक उम्मीदवारों की  
एवं उनके परिवार की पूरी जानकारी  
यहाँ उपलब्ध है।

ओसवाल मित्र मंडल मेट्रीमोनियल सेंटर

४७, रत्नज्योत इंडस्ट्रियल इस्टेट, पहला माला,  
इरला गांवठण, इरला लेन, विलेपार्ले (प.), मुंबई - ४०० ०५६.

☎ 7506357533 📞 : 9022786523, 022-26287187

ई-मेल : [oswalmatrimony@gmail.com](mailto:oswalmatrimony@gmail.com)

सुबह १०.३० से सायं ४.०० बजे तक प्रतिदिन (बुधवार और बैंक छुट्टियों के दिन सेंटर बंद है)

## गजेन्द्र निधि आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.....

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

Acharya Hasti Meghavi Chatravritti Yojna Has Successfully Completed 13 Years And Contributed Scholarship To Nearly 4500 Students. Many Of The Students Have Become Graduates, Doctors, Software-Professionals, Engineers And Businessmen. We Look Forward To Your Valuable Contribution Towards This Noble Cause And Continue In Our Endeavour To Provide Education And Spirituals Knowledge Towards A Better Future For The Students. Please Donate For This Noble Cause And Make This Scholarship Programme More Successful. We Have Launched Membership Plans For Donors.

**We Have Launched Membership Plans For Donors**

MEMBERSHIP PLAN (ONE YEAR)		
SILVER MEMBER RS. 50000	GOLD MEMBER RS. 75000	PLATINUM MEMBER RS. 100000
DIAMOND MEMBER RS. 200000		KOHINOOR MEMBER RS. 500000

Note - Your Name Will Be Published In Jinwani Every Month For One Year.

The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavad, Chennai (+91 95001 14455)

The Bank A/c Details is as follows - Bank Name & Address - AXIS BANK Anna Salai, Chennai (TN)  
A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund IFSC Code - UTIB0000168  
A/c No. 168010100120722 PAN No. - AAATG1995J

Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनाये रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पुन्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठियों एवं अर्थ सहयोग एकत्रित करने करने वालों के नाम की सूची -

KOHINOOR MEMBER (RS. 500000)	PLATINUM MEMBER (RS. 100000)
श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई। श्रीमान् राजीव जी नीता जी डागा, ह्यूस्टन। युवारत्न श्री हरीश जी कवाड़, चैन्नई। श्रीमती इन्द्राबाई सूरजमल जी भण्डारी, चैन्नई (निमाज-राज.)।	श्रीमान् दलीचन्द बाघमार एण्ड संस, चैन्नई। श्रीमान् दलीचन्द जी सुरेश जी कवाड़, पूनामल्लई। श्रीमान् राजेश जी विमल जी पवन जी बोहरा, चैन्नई। श्रीमान् अम्बालाल जी बसंतीदेवी जी कर्नावट, चैन्नई।
DIAMOND MEMBER (RS. 200000)	श्रीमान् सम्पतराज जी राजकवन्त जी भंडारी, त्रिपलीकेन-चैन्नई। प्रो. डॉ. शैला विजयकुमार जी सांखला, चालीसगांव (महा.)। श्रीमान् विजयकुमार जी मुकेश जी विनीत जी गोठी, मदनगंज-किशनगढ़। श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, तमिलनाडू।
SILVER MEMBER (RS. 50000)	श्रीमती पुष्पाजी लोढ़ा, नेहरू पार्क, जोधपुर। श्रीमान् जी. गणपतराजजी, हेमन्तकुमारजी, उपेन्द्रकुमारजी, कोयम्बटूर (कोसाणा वाले) श्रीमान् सुगनचन्द जी छाजेड़, चौपासनी रोड, जोधपुर। श्रीमान् गुप्त सहयोगी, तिरुवल्सुवर (तमिलनाडू)। श्रीमती कंचनजी बापना, श्री संजीव जी बापना, कलकत्ता (जोधपुर वाले) श्रीमान् पारसमलजी सुशीलजी बोहरा, तिरुवन्नमलई (तमिलनाडू)
श्रीमान् महावीर सोहनलाल जी बोधरा, जलगांव (भोपालगढ़) श्रीमान् अमीरचन्द जी जैन (गंगापुरसिटी वाले), मानसरोवर, जयपुर श्रीमती बीना सुरेशचन्द्र जी मेहता, उमरगांव (भोपालगढ़ वाले)। श्रीमान् गुप्त सहयोगी, जबलपुर श्रीमान् प्रकाशचन्द शायरचन्द जी मुथा, औरंगाबाद (महा.) श्रीमती लाडकंवर जी धर्मपत्नी श्रीमान् अमरचन्द जी सांड, विजयनगर, राजस्थान श्रीमान् पारसमलजी सुशीलजी बोहरा, तिरुवन्नमलई (तमिलनाडू)	

सहयोग के लिए बैंक या ट्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें - M.Harish Kavad - No. 5, Car Street, Poonamallee, CHENNAI-56  
छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें - मनीष जैन, चैन्नई (+91 95430 68382)

‘छोटा सा चिदंबर पत्थिरह को हल्का करने का, लाभ बढ़ा गुरु भाइयों को शिक्षा में सहयोग करने का’

## जिनवाणी प्रकाशन की योजना के लाभार्थी बनें

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा जिनवाणी पत्रिका के प्रकाशन हेतु एक योजना प्रारम्भ की गयी है। जिसके अन्तर्गत प्रतिमाह एक-एक लाख रुपये की राशि प्रदान करने वाले दो महानुभावों के द्वारा प्रेषित प्रकाश्य सामग्री एक-एक पृष्ठ में प्रकाशित की जाती है। इसके साथ ही वर्ष भर उनके नामों का उल्लेख भी जिनवाणी में किया जाता है। सन् 2020 की जुलाई से अनेक महानुभाव इस योजना में जुड़े हैं, उन सबके हम आभारी हैं।

अर्थसहयोगकर्ता जिनवाणी (JINWANI) के नाम से बैंक प्रेषित कर सकते हैं अथवा जिनवाणी के निम्नाङ्कित बैंक खाते में राशि नेफ्ट/नेट बैंकिंग/चैक के माध्यम से सीधे जमा करा सकते हैं।

बैंक खाता नाम-JINWANI, बैंक-State Bank of India, बैंक खाता संख्या-51026632986, बैंक खाता-SAVING Account, आई.एफ.एस. कोड-SBIN0031843, ब्रॉच-Bapu Bazar, Jaipur

राशि जमा करने के पश्चात् राशि की स्लिप एवं जमाकर्ता का पेन नं., मण्डल कार्यालय को प्रेषित करने की कृपा करें, जिससे आपकी सेवा में रसीद प्रेषित की जा सके। 'जिनवाणी' के खाते में जमा करायी गई राशि पर आपको आयकर विभाग की धारा 80G के अन्तर्गत छूट प्राप्त होगी, जिसका उल्लेख रसीद पर किया हुआ है।

### वित्तीय वर्ष 2021-22 हेतु लाभार्थी

- (1) Shri Ankit ji lodha, Jewels of Jaipur Gie gold creations Pvt Ltd, Mahaveer Nagar, Jaipur
- (2) श्री राधेश्यामजी, कुशलजी, पदमजी, अशोकजी, प्रदीपजी गोटेवाला, सवाईमाधोपुर (राज.)
- (3) श्री सुरेशचन्दजी इन्द्रचन्दजी मुणोत, लासूर स्टेशन, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
- (4) श्री कस्तूरचन्दजी, सुशील कुमारजी, सुनील कुमारजी बाफना, जलगाँव (महाराष्ट्र)
- (5) पुष्पा चन्द्रराज सिंघवी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई (महाराष्ट्र)
- (6) श्री राजेन्द्रजी नाहर, भोपाल (मध्यप्रदेश)
- (7) श्रीमती लाडजी हीरावत, जयपुर (राजस्थान)
- (8) श्री प्रकाशचन्दजी हीरावत, जयपुर (राजस्थान)
- (9) श्री अनिलजी सुराणा, वैल्लूर (तमिलनाडु)
- (10) डॉ. सुनीलजी, विमलजी चौधरी, दिल्ली
- (11) श्री प्रेमचन्दजी, अजयजी, आलोकजी हीरावत, जयपुर-मुम्बई
- (12) सतीशचन्दजी जैन (कंजोली वाले), जयपुर।

### वित्तीय वर्ष 2022-23 हेतु लाभार्थी

- (1) श्रीमती शान्ताजी, प्रदीपजी, मधुजी मोदी, जयपुर।
- (2) श्री तेजमलजी, अभयमलजी लोढ़ा, नागौर-जयपुर।
- (3) न्यायाधिपति श्री प्रकाशजी टाटिया, जोधपुर।

**उदारमना लाभार्थियों की अनुमोदना एवं वित्तीय वर्ष 2022-2023 के लिए**

**स्वेच्छा से नये जुड़ने वाले लाभार्थियों का हार्दिक स्वागत।**

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, 9314625596



॥ नमो अरिहंतानं ॥

# NAVKAR CITY JODHPUR



Luxurious Villas and G+2 Apartments available

“ एक शहर आपके घर में ”

Full of Amenities

**1,00,000 sq. ft**  
of Lush Green Central Park



क्रिकेट पिच



स्पोर्ट्स स्टेडियम



सेंट्रल पार्क



बैडमिंटन कोर्ट



सिक्वोर्ड एरिया

जानकारी के लिए संपर्क करें :



8504 000 222

[www.navkarcity.com](http://www.navkarcity.com)



नवकार सिटी, पाल गंगाणा रोड़, जोधपुर

WWW.RERA.RAJASTHAN.GOV.IN | RERA REG.NO. RAJ/P/2013/1048



# JVS Foods Pvt. Ltd.

Manufacturer of :

NUTRITION FOODS

BREAKFAST CEREALS

FORTIFIED RICE KERNELS

WHOLE & BLENDED SPICES

VITAMIN AND MINERAL PREMIXES

*Special Foods for undernourished Children  
Supplementary Nutrition Food for Mass Feeding Programmes*

*With Best Wishes :*

## JVS Foods Pvt. Ltd.

G-220, Sitapura Ind. Area,  
Tonk Road, Jaipur-302022 (Raj.)

Tel.: 0141-2770294

Email-jvsfoods@yahoo.com

Website-www.jvsfoods.com

FSSAI LIC. No. 10012013000138





**WELCOME TO A HOME THAT DOESN'T  
FORCE YOU TO CHOOSE.  
BUT, GIVES YOU EVERYTHING INSTEAD.**

Life is all about choices. So, at the end of your long day, your home should give you everything, instead of making you choose. Kalpataru welcomes you to a home that simply gives you everything under the sun.

 **022 3064 3065**



ARTIST'S IMPRESSION

Centrally located in Thane (W) | Sky park | Sky community | Lavish clubhouse | Swimming pools | Indoor squash court | Badminton courts

PROJECT  
**IMMENZA**  
THANE (W)  
EVERYTHING UNDER THE SUN

**TO BOOK 1, 2 & 3 BHK HOMES, CALL: +91 22 3064 3065**

**Site Address:** Bayer Compound, Kolshet Road, Thane (W) - 400 601. | **Head Office:** 101, Kalpataru Synergy, Opposite Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. | **Tel:** +91 22 3064 5000 | **Fax:** +91 22 3064 3131 | **Email:** sales@kalpataru.com | **Website:** www.kalpataru.com

In association with



This property is secured with Axis Trustee Services Ltd. and Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate/Permission would be provided, if required. All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. \*Conditions apply.

*If undelivered, Please return to*

**Samyaggyan Pracharak Mandal**  
Above Shop No. 182,  
Bapu Bazar, Jaipur-302003 (Raj.)  
Tel. : 0141-2575997

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - अशोक कुमार सेठ द्वारा डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन